भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

नव प्रभा

बीईएल कार्पोरेट कार्यालय
की गृह पत्रिका

मेक इन इंडिया

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अप्रैल - सितंबर, 2021
अर्धवार्षिक गृह पत्रिका अंक - 11

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बीईएल) कार्पोरेट कार्यालय को वर्ष 2019-20 और वर्ष 2020-21, लगातार दो वर्षों के लिए सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम श्रेणी के अंतर्गत 'ग' क्षेत्र में (द्वितीय) राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्रदान किया गया। माननीय गृह राज्य मंत्री से पुरस्कार ग्रहण करते हुए सीएमडी श्रीमती आनंदी रामलिंगम।

श्री श्रीनिवास राव, अधिकारी (राजभाषा), बीईएल कार्पोरेट कार्यालय को हिंदीतर भाषी वर्ग में उनके लेख "भारतीय विज्ञापन जगत – आकार, विकास, संभावनाएँ और भविष्य" के लिए वर्ष 2018–19 के लिए राजभाषा गौरव पुरस्कार (द्वितीय) प्रदान किया गया।

क्रम. सं.	विषय–सूची		पृष्ठ सं.
1	सचिव (राजभाषा), गृह मंत्रालय का दौरा		01
2	देश के एकीकरण में हिंदी भाषा का योगदान	अमित कुमार, बेंगलूरु कॉमप्लेक्स	03
3	देशभक्ति क्या है ?	रवि कुमार एम, आई.एम.डी	05
4	रक्षा–द्वितीय विश्व युद्ध के बाद आधुनिक परिदृश्य	नितेश तिवारी, गाजियाबाद	07
5	स्वतंत्र भारत के सर्वोच्च 75 मुख्य घटनाक्रम	अक्षया आर, बेंगलूरु कॉमप्लेक्स	11
6	"दिल दिया है जान भी देंगे – ऐ वतन तेरे लिए"	रेखा एस हेरेंजाल, आई.एम.डी	17
7	अमृत महोत्सव और स्व–प्रेरणा की आवश्यकता	ब्रजेश कुमार राय, आर.ओ.–वैजाग	19
8	आत्मनिर्भरता और हिंदी भाषा	गौरव त्रिपाठी, सीआरएल–गा.बाद	21
9	मेरा दृष्टिकोण – स्वतंत्र भारत में लोगों का स्वास्थ्य	दीपा मुनिराज एम, बेंगलूरु कॉमप्लेक्स	24
10	निर्यात – आखिर क्यों ?	अजीत सिंह, आई.एम.डी	25
11	"मृत्यो मुक्षीय मामृतात"	उषा रावत, गा.बाद	27
12	आजादी का अमृत महोत्सव उपलब्धि, चुनौतियां और संभावनाएँ	ब्रह्मदेव रॉय, बेंगलूरु कॉमप्लेक्स	29
13	"आत्मनिर्भर भारत"	हेमंत विलास माताड़े, पुणे	30
14	"स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका"	मुकेश प्रजापत, सी.आर.एल–गा.बाद	31
15	बीईएल द्वारा निर्यात – इतिहास के पन्नों से	एच पी श्रीनिवास रॉव, आई.एम.डी	33
16	भारत के राष्ट्रीय प्रतीक	आशुतोष कुमार शुक्ल, बेंगलूरु कॉमप्लेक्स	35
17	अमृत महोत्सव और आत्म निर्भर भारत	देवेश मिश्रा, सीआरएल गाजियाबाद	37
18	सूर्योदय	सारिका पी.एस, सुपुत्री– श्री श्रीनिवास राव	38
19	राष्ट्रीय प्रतीक	शशि कान्त, बेंगलूरु कॉमप्लेक्स	39
20	जीवन से खेलकूद के ह्रास और राष्ट्रीय खेल	वीरेंद्र कुमार कुशवाहा, आईएमडी	40
21	हॉकी की वर्तमान स्थिति पर एक चिंतन "स्वच्छता एक प्रवृत्ति"	के. एच दमानिया, पुणे	41
22	किताबें कहना चाहती हैं	ईश्वर चंद्र मिश्र	42
23	भाषा और शब्द	वी सुरेश कुमार, हैदराबाद	44
24	यात्रा संस्मरण – हलांगबे और चाईनीज दादा दादी	विनीत कुमार सोनवंशी, हैदराबाद	45
25	अंतरराष्ट्रीय पटल पर भारत	के. धनबाल, चेन्नै	47
26	राजभाषा गतिविधियां		51–65

राजभाषा दृष्टि
RAJBHASHA VISION

संस्थान के कार्यकलाप के हर क्षेत्र में राजभाषा हिंदी को सरल रूप में अपनाना।

To adopt Official Language Hindi in every sphere of activity of the Company in its simple form

राजभाषा ध्येय
RAJBHASHA MISSION

प्रतिबद्धता, प्रेरणा और प्रोत्साहन द्वारा हिंदी में मूल कार्य करने की संस्कृति को आत्मसात करना और राजभाषा हिंदी को मौखिक, लिखित और इलेक्ट्रॉनिक सम्प्रेषण के माध्यम के रूप में अपनाना।

To imbibe a culture of doing original work in Hindi through Commitment, Motivation and Incentive and to adopt Rajbhasha Hindi as the spoken, written and electronic medium of communication.

श्रीमती आनंदी रामलिंगम

अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक

संदेश

हर्ष का विषय है कि कार्पोरेट राजभाषा द्वारा हिंदी पत्रिका 'नवप्रभा' का ग्यारहवां अंक प्रस्तुत किया जा रहा है। हिंदी में मौलिक लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए यह बहुत अच्छा मंच साबित हो रहा है। भारत भर में फैली हमारी यूनिटों और कार्यालयों के कार्यपालकों और कर्मचारियों द्वारा हिंदी में लिखने की प्रवृत्ति बढ़ रही है जो सराहनीय है। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि पत्रिका को पठनीय और रुचिकर बनाने के निरंतर प्रयास भी किए जा रहे हैं।

भारत सरकार चाहती है कि प्रशासनिक और सामान्य विषयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के साथ–साथ तकनीकी विषयों में भी हिंदी का इस्तेमाल बढ़ाया जाए। चूँकि हम इलेक्ट्रॉनिक उद्योग में कार्यरत हैं, पत्रिका में कंपनी के उत्पादों और सेवाओं से संबंधित तकनीकी लेखों को अवश्य शामिल किया जाना चाहिए। इससे राजभाषा हिंदी का प्रगति–पथ प्रशस्त होगा। हमारा देश आजादी के 75वें वर्ष आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और विभिन्न सार्थक अभियान चलाए जा रहे हैं। मुझे खुशी है कि यह अंक इसी विषय–वस्तु पर आधारित है।

पत्रिका में योगदान देने वाले सभी लोगों को बधाइयाँ।

जयहिंद...

कार्पोरेट राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष तथा सदस्यगण

श्रीमती आनंदी रामलिंगम
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक

श्रीमती हेमलता के
का.नि. (एस.पी.), सदस्य

श्री विक्रमन एन
महाप्रबंधक (एच.आर.), सदस्य

श्री रामन आर
महाप्रबंधक (आं.ले.प.), सदस्य

श्री दामोदर भट्टड
महाप्रबंधक (वित्त), सदस्य

श्री मंजुनाथ डी हेगड़े
अ.म.प्र. (सतर्कता), सदस्य

श्री आनंद एस
अ.म.प्र. (एच.आर.), सहयो. सदस्य

श्री मनोज यादव
अ.म.प्र. (एम.एस.), सदस्य

श्री कृष्णप्पा टी आर
व.उ.म.प्र. (सी.सी), सदस्य

श्री श्रीनिवास एस एस आर
व.उ.म.प्र. (लाइ.), सदस्य

श्री श्रीनिवास एस
कंपनी सचिव, सदस्य

श्री श्रीनिवास राव
अधिकारी (रा.भा.), सदस्य सचिव

श्री विक्रमन एन.
महाप्रबंधक (मा.सं.)

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि 'नवप्रभा' का ग्यारहवां अंक प्रकाशित किया जा रहा है जो "आजादी का अमृत महोत्सव" विषय पर केंद्रित है। इस पत्रिका के माध्यम से हमें राजभाषा की दिशा में अपने प्रयासों और शुरू की गई नई पहल को आप तक पहुंचाने का अवसर मिलता है।

इस अंक में कार्पोरेट कार्यालय के साथ–साथ, यूनिटों और कार्यालयों में आयोजित किए गए राजभाषा कार्यक्रमों की जानकारियां दी गई हैं। साथ ही, राजभाषा लक्ष्य और ध्यान देने वाली बातों को शामिल किया गया है। मुझे पूरी आशा है कि इससे हमारे कर्मचारी लाभान्वित होंगे। राजभाषा के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है। भारत सरकार द्वारा तकनीक और प्रौद्योगिकी की सहायता से हिंदी में आसानी से कार्य करने की सुविधा विकसित की जा रही है।

रक्षा क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करने वाली कंपनी होने के नाते बीईएल राजभाषा के क्षेत्र में भी इनका प्रयोग कर रही है। बीईएल के कर्मचारियों की कर्तव्य–निष्ठा और लगन के कारण कई यूनिटों और कार्यालयों को राजभाषा के क्षेत्र में सम्मानित किया गया है जो हम सबके लिए गौरव का विषय है। आशा करता हूँ कि लगातार मेहनत से हम भविष्य में भी नई ऊंचाईयां प्राप्त करेंगे।

पत्रिका से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को मेरी शुभकामनाएं।

जयहिंद...

बीईएल के राजभाषा अधिकारीगण

श्रीनिवास राव
कार्पोरेट कार्यालय

एच एल गोपालकृष्णा
बेंगलुरु कॉम्प्लेक्स

वी. सुरेश कुमार
हैदराबाद

बिमल मोहन सिंह रावत
नवी मुंबई, पुणे

श्यामलाल दास
चेन्नै

रजनी साव
सी.आर.एल., बेंगलुरु

भूपेन्द्र सिंह
पंचकूला

नवजोत पीटर
गाजियाबाद

माधुरी रावत
कोटद्वार

दिनेश उईके
मछिलिपट्नम

श्री आनंद एस

अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संदेश

एक न कही, दूजे ने मानी, नानक कहे, दोनों ज्ञानी... यानी एक व्यक्ति ने कुछ कहा और जिससे कहा जा रहा है, उसने बात समझ ली और मान ली, बस बात खत्म हुई। यानी संप्रेषण पूरा हुआ। इसीलिए कहते हैं कि भाषा संप्रेषण का माध्यम है। वही भाषा संप्रेषण का सशक्त माध्यम बन सकती है जो मानवीय भावनाओं को अच्छी तरह व्यक्त करती हो। हमारी सभी भारतीय भाषाएं इसमें पूरी तरह सक्षम हैं। हिंदी का प्रयोग तो पूरे देश में संपर्क भाषा के रूप में सदियों से किया जा रहा है। राजभाषा का दर्जा देकर हिंदी की इसी ताकत को मान्यता दी गई।

सरकारी दफ्तरों में हिंदी की स्थिति दशक–दर–दशक बेहतर हो रही है। थोड़ा है, थोड़े की ज़रूरत है। यानी अब भी हिंदी को नई ऊचाइंयों पर पहुंचने की पूरी संभावना बाकी है। हम सब के थोड़े–थोड़े प्रयास मिलकर सामूहिक रूप से हिंदी की स्थिति को बेहतर कर सकते हैं। इसके लिए हमें जहां तक हो सके, सरल और आसान हिंदी का इस्तेमाल करना होगा। ऐसी हिंदी लिखी जाए जैसी बोली जाती है, जो सरल हो, मीठी हो और सुनने पढ़ने वाले को आसानी से समझ आए। कहते भी हैं कि 'करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान' यदि हिंदीतर भाषी हिंदी के आसान और छोटे–छोटे शब्दों का प्रयोग रोजाना करना शुरु करेंगे तो निश्चित रूप से हिंदी का प्रचार बढ़ेगा। हिंदी के साथ–साथ हमें अपनी मातृभाषा का भी समान रूप से प्रयोग करना चाहिए क्योंकि जो अपनी मातृभाषा की इज़्जत करते हैं, दुनिया उनकी इज़्जत करती है।

यह तो हुई हिंदी में बात करने और समझने की बात। इसी तरह हमें हिंदी पढ़ने का अभ्यास नियमित रूप से करना चाहिए। हिंदी में इतनी स्तरीय सामग्री उपलब्ध है कि आप अपने मनचाहे विषय की जानकारी ले सकते हैं। इसी क्रम में, हमारी कार्पोरेट हिंदी गृह पत्रिका 'नवप्रभा' का ग्यारहवां अंक आपके सामने है जो आजादी के अमृत महोत्सव पर आधारित है। मुझे पूरा विश्वास है आपको हमारा यह प्रयास पसंद आएगा।

जयहिंद...

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड,
कार्पोरेट कार्यालय

नव प्रभा अंक–11
अर्धवार्षिक गृह पत्रिका
(केवल निजी वितरण के लिए)

मार्गदर्शन
श्रीमती आनंदी रामलिंगम
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक

संरक्षक
श्री विक्रमन एन.
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

परामर्शदाता
श्री आनंद एस
अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादक
श्री श्रीनिवास राव
अधिकारी (राजभाषा)
डॉ. रहिला राज के.एम.
कनिष्ठ अनुवादक

(पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं लेखकों के निजी विचार हैं, बीईएल से इसकी सहमति अनिवार्य नहीं है)

संपादकीय

वाकिफ़ कहाँ जमाना हमारी उड़ान से,
वो और थे जो हार गये आसमान से।

वर्ष 2020 में नमक सत्याग्रह के 91 वर्ष पूरे होने पर हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने साबरमती आश्रम से अमृत महोत्सव की शुरुआत की थी। मोदी जी ने आजादी के अमृत महोत्सव को आजादी की ऊर्जा का अमृत कहा, स्वाधीनता सेनानियों से प्रेरणाओं का अमृत कहा, नए विचारों का अमृत कहा, नए संकल्पों का अमृत कहा और आत्मनिर्भरता का अमृत कहा। देश की 75 वीं वर्षगांठ का मतलब 75 साल पर विचार, 75 साल पर उपलब्धियां, 75 पर एक्शन और 75 पर संकल्प शामिल हैं, जो स्वतंत्र भारत के सपनों को साकार करने के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा देंगे। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर **'नवप्रभा'** का यह ग्यारहवां अंक "आजादी का अमृत महोत्सव" को समर्पित किया गया है।

भाषा कभी सरल या कठिन नहीं होती। भाषा की सरलता या कठिनाई उसके प्रयोग पर निर्भर करती है। प्रयोग किया, सरल हो गई, नहीं किया, कठिन हो गई। देखा जाए तो भाषा नदी की तरह सहज होती है। भाषा से दूर रहेंगे तो अपनी धरोहर, अपनी संस्कृति से भी दूर हो जाएँगे। भाषा वहीं जिंदा रहती है जो प्रयोग में लाई जाती है। इसलिए, हमें अपनी मातृभाषा और राजभाषा का बोलचाल और लिखने में अधिकाधिक प्रयोग कर उसे ज़िंदा रखना होगा, चमकाना होगा।

'नवप्रभा' के प्रत्येक अंक को विषय–विशिष्ट रखने की मंशा यही है कि कर्मचारी और अधिकारी नए विषय पर विचार–मंथन करें, समकालीन विषयों के बारे में सोचें और लिखें। लगातार नए विचारों के संपर्क में आने से हमारी सूझबूझ विकसित होती है और हमारे ज्ञानार्जन का दायरा बढ़ता है।

मकान को घर बनाने के लिए हम जिस शिद्दत के साथ, दिल लगाकर काम करते हैं, उसी तरह हम आपकी अपनी पत्रिका **'नवप्रभा'** को उपयोगी और रोचक बनाने में चाव के साथ अपना प्रयास करते हैं। हमारा यह प्रयास कितना सफल हो रहा है, ज़रूर बताइगा।

सचिव (राजभाषा), गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने बीईएल कार्पोरेट कार्यालय का दौरा किया

डॉ. सुमित जैरथ, भा.प्र.से., सचिव (राजभाषा), गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने दिनांक 30.07.2021 को उप निदेशकों की अपनी टीम के साथ बीईएल कार्पोरेट कार्यालय, बेंगलूरु का दौरा किया और बीईएल के राजभाषा ई–सम्मेलन में उनकी गरिमामयी उपस्थित रही। श्रीमती आनंदी रामलिंगम, स्थानापन्न सीएमडी, श्री विनय कुमार कत्याल, निदेशक (बेंगलूरु कॉमप्लेक्स), श्री शिवकुमारन, निदेशक (मानव संसाधन), कार्पोरेट राभाकास के सदस्य, बेंगलूरु कॉमप्लेक्स की राजभाषा टीम, महाप्रबंधकगण, यूनिट प्रमुख और राजभाषा स्टाफ (इंट्रानेट वेबेक्स के माध्यम से) इस सम्मेलन में शामिल हुए।श्री विनय कुमार कत्याल, निदेशक (बेंगलूरु कॉमप्लेक्स) ने मुख्य अतिथि का अभिनंदन किया और स्वागत संबोधन प्रस्तुत किया।सचिव (राजभाषा) ने राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए **'12 प्र'** यानी 1. प्रेरणा, 2. प्रोत्साहन, 3. प्रेम, 4. पुरस्कार, 5. प्रशिक्षण, 6. प्रयोग, 7. प्रचार, 8. प्रसार, 9. प्रबंधन, 10. प्रदोन्नति, 11. प्रतिबद्धता और 12. प्रयास के बारे में विस्तार से बताया। श्रीमती आनंदी रामलिंगम, स्थानापन्न सीएमडी ने अपने संबोधन में सचिव (राजभाषा) को आश्वस्त किया कि बीईएल में सच्ची भावना के साथ इन को '12 प्र' आत्मसात किया जाएगा। श्री शिवकुमारन के एम, निदेशक (मानव संसाधन) ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। तदुपरांत श्री श्रीनिवास राव, अधिकारी (राजभाषा), बीईएल कार्पोरेट कार्यालय द्वारा बीईएल में राजभाषा कार्यान्वयन पर प्रस्तुतीकरण दिया गया जिसमें उन्होंने विशेषकर बीईएल में राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में किए गएविभिन्न अभिनव पहल के बारे में बताया। श्री राजेश श्रीवास्तव, उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग द्वारा अनुवाद टूल 'कंठस्थ'पर प्रस्तुती दी गई। श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दक्षिण) द्वारा यूनिकोड एवं तकनीकी टूल पर प्रस्तुती दी गई। श्री विक्रम सिंह, हिंदी प्राध्यापक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली ने 'लीला ऐप' के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम के दौरान सचिव (राजभाषा) ने बीईएल कार्पोरेट कार्यालय की हिंदी पत्रिका नवप्रभा के 10वें अंक का और साथ ही, डॉ. राकेश कुमार, उप निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग द्वारा संकलित व संयोजित 'सम्यक कार्यालयीन प्रपत्र संचयन' का विमोचन किया।डॉ. गोपालकृष्णा एच एल, उप प्रबंधक (राजभाषा)/बीईएल बें.कॉ. ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस सम्मेलन में ऑफलाइन और ऑनलाइन माध्यम द्वारा कार्पोरेट कार्यालय, बेंगलूरु कॉमप्लेक्स तथा अन्य यूनिटों के कुल 77 अधिकारियों ने भाग लिया।

डॉ. सुमित जैरथ, भा.प्र.से., सचिव (राजभाषा) विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार का बीईएल कार्पोरेट कार्यालय, बेंगलूरु में स्वागत करते हुए श्री शिवकुमारन के एम, निदेशक (मानव संसाधन)/बीईएल तथा अन्य अधिकारीगण।

दीप प्रदीपन करते हुए सचिव (राजभाषा)।

राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए '12 प्र' के बारे में विस्तार से बताते हुए सचिव (राजभाषा)।

डॉ. राकेश कुमार, उप निदेशक (हि.शि.यो.), द्वारा संकलित व संयोजित 'सम्यक कार्यालयीन प्रपत्र संचयन' का विमोचन करते हुए सचिव (राजभाषा)।

सचिव (राजभाषा) महोदय का पारंपरिक ढंग से सम्मान करते हुए स्थानापन्न सीएमडी, निदेशक (बेंगलूरु कॉमप्लेक्स), निदेशक (मानव संसाधन), महाप्रबंधक (मानव संसाधन) / कार्पोरेट कार्यालय और बेंगलूरु कॉमप्लेक्स तथा राजभाषा टीम।

देश के एकीकरण में हिंदी भाषा का योगदान

अमित कुमार
मिलिटरी रेडार्स

एक डोर में सबको जो है बांधती, वह हिंदी है
हर भाषा को सगी बहन जो मानती, वह हिंदी है।
गंगा–कावेरी की धारा, साथ मिलाती हिंदी है,
पूरब–पश्चिम,कमल–पंखुड़ी, सेतु बनाती हिंदी है।

हिंदी भाषा के विशिष्ट कवियों में शुमार श्री गिरिजा कुमार माथुर की इन पंक्तियों ने ही नहीं वरन देश के कई करोड़ों लोगों ने माना है कि हिंदी भाषा देश की एकता को बनाए रखने में अहम भूमिका का निर्वहन कर रही है । भारत विभिन्न भाषाओं और बोलियों का एक बागान है जिसमें हड़प्पा काल से लेकर अँग्रेजी हुकूमत तक सभी तरह के फूल खिले । यदि हम भारतीय संस्कृति को करीब से देखें तो हमें ग्रीक, फारसी, अरबी, मंगोलियन, द्रविड़, मुगल और अँग्रेजी सभ्यताओं की एक अमिट छाप मिल जाएगी । हमारे देश ने सदैव से नई संस्कृतियों को अपने अंदर सँजोया है जिससे हमारे देश की भाषाओं को और समृद्धता प्राप्त हुई है । स्वाधीनता के लिए जब भी आन्दोलन तेज़ हुआ तब तब हिंदी की प्रगति का रथ भी तेज़ गति से आगे बढ़ा। हिंदी राष्ट्रीय चेतना की प्रतीक बन गई । बंगाल के केशवचन्द्र सेन, राजा राम मोहन राय, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस; पंजाब के बिपिनचन्द्र पाल, लाला लाजपत राय; गुजरात के स्वामी दयानन्द, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी; महाराष्ट्र के लोकमान्य तिलक तथा दक्षिण भारत के सुब्रह्मण्यम भारती, मोटूरि सत्यनारायण आदि नेताओं के राष्ट्रभाषा हिंदी के संबंध में व्यक्त विचारों और उनके द्वारा किए गए कार्यों से हिंदी भाषा को अहम पहचान मिली। महात्मा गांधी हिंदी भाषी नहीं थे लेकिन वे जानते थे कि हिंदी ही देश की संपर्क भाषा बनने के लिए सर्वथा उपयुक्त है। उन्हीं की प्रेरणा से राजगोपालाचारी ने दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा का गठन किया था।

आज़ादी के शुरुआती दिनों में अंग्रेजी का बोलबाला था और सभी लोग अधिकांशतः अँग्रेजी में ही दैनिक कार्य किया करते थे । देश के आजाद होने पर हमने संविधान बनाने का उपक्रम शुरू किया। संविधान का प्रारूप अंग्रेज़ी में बना, संविधान की बहस अधिकांशतः अंग्रेज़ी में हुई। यहाँ तक कि हिंदी के अधिकांश पक्षधर भी अंग्रेज़ी भाषा में ही बोले। यह बहस 12 सितंबर, 1949 को 4 बजे दोपहर में शुरू हुई और 14 सितंबर, 1949 के दिन समाप्त हुई। 14 सितंबर की शाम बहस के समापन के बाद जब भाषा संबंधी संविधान का तत्कालीन भाग 14 क और वर्तमान भाग 17, संविधान का भाग बन गया तब डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने अपने भाषण में कहा था, "आज पहली ही बार ऐसा

संविधान बना है जब कि हमने अपने संविधान में एक भाषा रखी है, जो संघ के प्रशासन की भाषा होगी और वह देवनागरी लिपि वाली हिंदी भाषा होगी।"

हाल ही में एथनोलॉग द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार हिंदी विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन गई है। वर्तमान में 637 मिलियन लोग हिंदी भाषा का उपयोग करते हैं। दुनिया के करीब 200 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। भारत के अहिंदी भाषी राज्यों में हिंदी भाषा विभिन्न भाषाभाषियों के बीच एक सेतु का काम कर रही है। इससे न सिर्फ हिंदी भाषा समृद्ध हो रही है वरन स्थानीय भाषा भी समृद्ध हो रही हैं। हिंदी भाषा के शब्द इन स्थानीय भाषाओं में और स्थानीय भाषाओं के शब्द हिंदी भाषा में प्रयोग हो रहे हैं। इसके परिणामतः दोनों भाषाओं का विकास हो रहा है। देश में फैली हुई अनेक भाषाओं और संस्कृतियों के बीच यदि भारतीय जीवन की एकात्मकता किसी की भाषा में दिखाई देती है तो वह हिंदी भाषा ही है। चाहे सभी लोग हिंदी न जानते हों लेकिन फिर भी इसके द्वारा वे अपना काम बना लेते हैं और इसमें उन्हें कठिनाई नहीं होती है।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने कलकत्ता कांग्रेस का अध्यक्षीय भाषण हिंदी में पढ़ते हुए कहा था, कि "हिंदी प्रचार–प्रसार का उद्देश्य किसी भी प्रान्तीय भाषा को हानि न पहुँचाते हुए केवल यह है कि आजकल जो काम अंग्रेजी से किया जाता है, वह आगे चलकर हिंदी में किया जा सकता है"। महर्षि दयानन्द ने अपने वैदिक धर्म के प्रचार का माध्यम हिंदी को बनाया और उनका मन्तव्य था कि सब उन्नतियों का केन्द्र स्थान एकता है। हिंदी के महान साहित्यकार तथा खड़ी बोली हिंदी के जन्मदाता माने जाने वाले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा था,

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय को सूल।

इस प्रकार हम हिंदी को राष्ट्रीयता का पर्याय मानते हुए कह सकते हैं कि हिंदी भारत की भारती है, हिंदी हिन्दुस्तान की हिंदी है। हमारे देश की तीनों सेनाओं ने हिंदी भाषा को संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग के लिए अनिवार्य कर दिया है। चूंकि इन तीनों सेनाओं में देश के कोने कोने से जवान आते हैं और हिंदी भाषा सीखते हैं और संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग करते हैं। हिंदी के इसी महत्व को देखते हुए तकनीकी कंपनियां इस भाषा को बढ़ावा देने की कोशिश कर रही हैं। यह खुशी की बात है कि सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी का इस्तेमाल बढ़ रहा है। आज वैश्वीकरण के दौर में, हिंदी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। आज पूरी दुनिया में 175 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा पढ़ाई जा रही है। ज्ञान–विज्ञान की पुस्तकें बड़े पैमाने पर हिंदी में लिखी जा रही है। सोशल मीडिया और संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है।

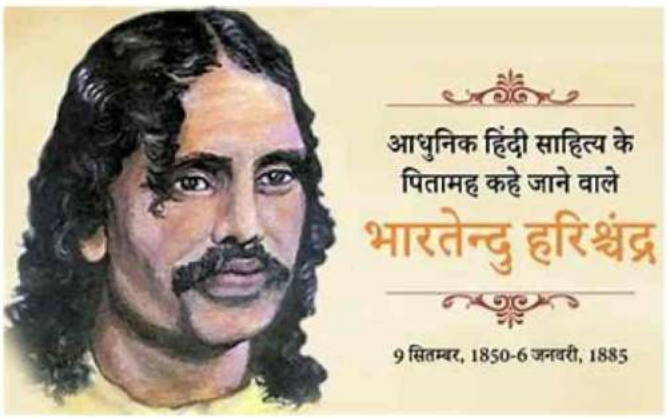

भाषा वही जीवित रहती है जिसका प्रयोग जनता करती है । भारत में लोगों के बीच संवाद का सबसे बेहतर माध्यम हिंदी है। इसलिए इसको एक–दूसरे में प्रचारित करना चाहिए। इस कारण हिंदी दिवस के दिन सभी से निवेदन किया जाता है कि वे अपने बोलचाल की भाषा में भी हिंदी का ही उपयोग करें। हिंदी भाषा के प्रसार से पूरे देश में एकता की भावना और मजबूत होगी।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।
– महात्मा गांधी

देशभक्ति क्या है ?

रवि कुमार एम
अंतरराष्ट्रीय विपणन प्रभाग

आप सोच में पड़ गए होंगे कि देशभक्ति पर लिखे गए इस लेख में आखिर नया क्या है ? देशभक्ति क्या है यह कौन नहीं जानता आज के स्वतंत्र भारत में !

क्या यह अनुप्रास अलंकार में लिखी गई विभिन्न भावों से ओतप्रोत कोई गद्यात्मक कविता मात्र है या समसामयिक जिज्ञासा जनित कोई विशेष कहानी ही है ? या शायद दोनों ही नहीं। विद्वान पाठक समाज की प्रशंसा मात्र प्राप्त करने के विचार से लेखक द्वारा बुद्धि शक्ति के बल पर देशभक्ति पर रचित कोई लेख, यह तो बिल्कुल नहीं है।..... फिर?? क्या यह लेख एक सिद्ध लेखक की कलम में समाई मंत्रशक्ति के स्पर्श से साधारण भूलोक को स्वर्गसदृश बनाने वाली व्यवहार कुशलता का प्रदर्शन है .....नहीं यह भी नहीं ..... फिर यह स्वतंत्र भारत है, यहां सभी तो देशभक्त हैं फिर इस लेख को लिखने का औचित्य क्या है।

प्रिय पाठकों, यह लेख परतंत्रता से मुक्त करा अपने स्वतंत्र राष्ट्र के निर्माण के प्रति अथक अनवरत क्रियाशील अमर भावनाओं व राष्ट्रीय चेतनाओं का पुनर्दर्शन करने के लिए किया गया एक प्रयास है।

हजारों लोगों की भीड़ जमाकर वाहनों पर लाउड स्पीकर पर गीत–गाने, हो–हल्ला और प्रायोजित नारेबाजी व तथ्यों को पूरी तरह जाने बिना ही अपना आक्रोश व्यक्त करने तक ही सीमित हो चुके वर्तमान दौर में आखिर देशभक्ति क्या है, यह समझना शायद बहुत आवश्यक है। चलिए, इस देशभक्ति की भावना को कुछ उजागर कर हम स्वतंत्र भारत की संतानें अपने भीतर देशभक्ति को खंगालते हैं।

"एक बच्चे के रुदन से उसकी मां को होने वाले दर्द का संबंध है? – देखने वालों को इससे कुछ भान नहीं होगा, उन्हें तो यह बिल्कुल स्वाभाविक ही लगेगा। क्योंकि शायद मां की ममता अपनी संतति के दु:ख निवारण हेतु की गई एक शाश्वत प्राकृतिक नैसर्गिक व्यवस्था है। यह एक सार्वकालिक सत्य है कि मां का अबोध प्रेम और आशीर्वाद रूपक दैवी शक्ति ही उसकी संतानों की हर विपत्ति से व दुर्दिन में कवच बनकर रक्षा करती है। परंतु जरा सोचिए जब एक मां संकट में हो, उसके मन का दु:ख किसी पहाड़ की तरह बलिष्ट हो तो बच्चों द्वारा अपनी मां को संकट से उबारकर उसके मन में सुख–शांति की संस्थापना कितने बच्चों के लिए सम्भव है या कितने ही बच्चे इस ओर सोच भी पाते हैं, आप स्वयं सोचिए ?...."

अब अगर आप कुछ सोच–समझ चुके तो ज्ञात इतिहास ही के कुछ पन्नों पर नजर डालें तो पाएंगे कि संकट में फंसी एक ऐसी ही मां हमारी 'भारत मां' थी और इस मां को परतंत्रता के दु:खों से मुक्त करा उसके मुखमण्डल पर आभा का आलोक लाए हमारे स्वतंत्रता सेनानी.... क्या नहीं थे वही सच्चे देशभक्त !.... वही थी सच्ची देशभक्ति .... है न !

(हाँ, एक बात और चूंकि अब भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र व लोकतंत्र है, यहाँ इस बाबत अपनी अभिव्यक्ति रखने की हमें पूर्ण स्वतंत्रता है।)

जब हमारा राष्ट्र परतंत्र था तो स्वतंत्रता पूर्व के उस दौर में हम आप जैसे आमजन आदर्शों के साथ मान–मर्यादा में जीते थे और "देश की सौहार्दता और एकता के लिए अपने प्राण बलिदान करते थे।" और अब आज जब राष्ट्र स्वतंत्र है तो स्वतंत्रता

पश्चात् के इस दौर में हम आप जैसे आमजन बहुधा स्वस्वार्थ सिद्धि में आतुर स्वछंद जीवन यापन में लगे हैं, और तो और "आज अपने स्वयम् के लाभ अर्थात स्वार्थ के लिए दूसरों के प्राण दांव पर लगाने में नहीं सकुचाते हैं।"

स्वतंत्रता संग्राम के काल में जब "जननि और जन्मभूमि" के लिए अंग्रेजों की क्रूरता असहनीय हो गई, तब हमारे स्वतंत्र सेनानियों ने उस दुख का समाधान कर सुख के द्वार खोलने के लिए अपने रक्त व प्राणों को पुष्प की भांति भारत–मां के चरणों में नि:संकोच अर्पित कर देशभक्ति का विराटतम् रूप दिखाया । सोचिए वह कैसी पीढ़ी थी जो साहस से आदर्शों के साथ जिए और मातृभूमि के लिए हंसते–हंसते मर मिटे ! क्या हम भी स्वस्वार्थ सिद्धि से परे अपने देश के लिए कुछ कर रहे हैं।

देशभक्ति की भावना को "अंतर्मन की आवाज व जीवन का ध्येय" बनाकर उस पथ पर चलना आसान नहीं है । लेकिन इस देशभक्ति की भावना में डूबे असंख्य महान जन मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए जी–जान से लड़े और उनमें से अनगिनत हुतात्मा हुए और वे सभी हमारे देशभक्ति के इतिहास के अलौकिक बगीचे में कभी न मुरझाने वाले पारिजात पुष्प होकर – सदा ही देशभक्ति की सुभावना का व्यापक परिचय दे इस कालजयी भावना का भारतीय जनों के हृदय में युगों–युगांतरों तक सुदृढ़ सिंचन करते रहेंगे।

यही कारण है कि हम हर वर्ष स्वतंत्रता दिवस बिना भूले मनाते है। लेकिन हमारे उत्तम भविष्य के लिए हमें अपने आज में देशभक्ति की भावना का आह्वान करना होगा और अपने स्वतंत्रता–सेनानियों से अमूल्य बलिदान को तह–ए–दिल से याद करते रहना होगा। आज की निस्वार्थ देशभक्ति की भावना ही सुनहरे भविष्य की ओर हमारी उड़ान की द्योतक होगी । विदेशी लोगों व शासन से तो हम मुक्त हो गए परंतु विदेशी भावना पर आधारित तंत्र के अनेक दोषों से मुक्त होना अभी भी बाकी है, पर इन सबके लिए अत्यावश्यक है कि हम यह जानें कि देशभक्ति आज के परिदृश्य में सही मायने में है क्या और फिर सजग हो इस हेतु तन–मन–धन से तत्परतापूर्वक कार्यरत हों !!

अगणित त्याग–बलिदान से स्वतंत्र हुआ यह हिंदुस्तान,

देशभक्ति से भीगे हर मन, हो मातृभूमि तो स्वर्ग–समान।

बधाइयाँ

श्रीमती रहिला राज के.एम., कनिष्ठ अनुवादक (रा.भा./कार्पोरेट कार्यालय) ने पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय से "सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी भाषा–शिक्षण का अध्ययन" विषय पर पी. एचडी की उपाधि हासिल की।

रक्षा–द्वितीय विश्व युद्ध के बाद आधुनिक परिदृश्य

नितेश तिवारी
गाजियाबाद यूनिट

मैं नहीं जानता कि तीसरा विश्व युद्ध किस अस्त्र से लड़ा जाएगा,
परन्तु यह अवश्य जानता हूँ कि चौथा विश्व युद्ध लाठी और पत्थरों से लड़ा जाएगा।
सर अल्बर्ट आइंस्टीन, सैद्धान्तिक भौतिक वैज्ञानिक

सर अल्बर्ट आइंस्टीन एक महान वैज्ञानिक थे। उनके द्वारा दिए गए सापेक्षता के सिद्धान्त के आधार पर ही परमाणु बमों का अविष्कार संभव हुआ। प्रस्तुत वक्तव्य तृतीय विश्व युद्ध की भयानक विनाश लीला को आधुनिक आग्नेयास्त्रों की उपस्थिति को देखते हुए तार्किक आधार पर परिभाषित करता है। तृतीय विश्व युद्ध के बाद मानव जाति ऐसी स्थिति में होगी कि हम आदिमानव की भांति बर्बर हो चुके होंगे।

क्या वाकई ये स्थिति है कि तीसरा विश्व युद्ध भी कभी होगा? या कहीं ऐसा तो नहीं कि वो चल रहा है। तो इसकी शुरुआत कैसे हुई। यदि चल भी रहा है तो उसका आधुनिक रक्षा परिदृश्य पर कैसा प्रभाव है। ये चर्चा का रोचक विषय है।

शीत युद्ध का रक्षा नीतियों पर प्रभाव– द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद अमेरिका तथा सोवियत संघ के आपसी तनाव ने शीतयुद्ध को जन्म दिया। शीत युद्ध के दौरान विश्व तीन भागों में बंट गया था, एक तरफ पूंजीवादी विचार–धारा वाले देश अमेरिका की तरफ हो गए। साम्यवादी विचार धारा रखने वाले देश सोवियत संघ के साथ खड़े हो गए। तीसरे विश्व की मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाने वाला भारत और अन्य कई ब्रिटिश उपनिवेश से स्वतंत्र हुए देश जो कि अभी विकास पथ पर खड़े ही हो रहे थे,एक हो गए। उन्होंने शीत युद्ध से दूरी बनाते हुए गुटनिरपेक्ष आंदोलन की नींव रखी। यहाँ पर गौरवान्वित करने योग्य तथ्य है कि नवनिर्मित लोकतांत्रिक गणतंत्र भारत ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन का प्रतिनिधित्व किया।

बर्लिन संकट के दौरान अमरीकी तथा सोवियत टैंक आमने सामने–

सन 1962 में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जर्मन राजधानी बर्लिन पर कब्जे को लेकर सबसे मुख्य सैन्य– राजनैतिक संकट था, जिसमें रूस ने अमरीकी मित्र सेनाओं को पश्चिमी जर्मन से हटने की चेतावनी दी थी जिसकी वजह से स्थिति काफी तनावपूर्ण हो गयी थी क्योंकि द्वितीय विश्व युद्ध का कारण बने जर्मनी की राजधानी में दोनों विचार धाराओं के समर्थकों ने बर्लिन राजधानी का ही विभाजन कर दिया था।

इसके बावजूद बर्लिन संकट, कोरिया युद्ध, सोवियत रूस द्वारा आण्विक परीक्षण, सैनिक संगठन, हिन्द चीन की समस्या, यू–2 विमान काण्ड, क्यूबा मिसाइल संकट कुछ ऐसी परिस्थितियाँ थीं जिन्होंने शीतयुद्ध की अग्नि को प्रज्वलित कर के रखा।

विश्व जगत को क्यूबा मिसाइल संकट की स्थिति ने सबसे ज्यादा भयभीत किया। जब अमेरिका की जड़ में बसे साम्यवादी देश क्यूबा ने अमेरिका पर दबाव बनाने के लिए तथा अपनी सम्प्रभुता की रक्षा हेतु सोवियत संघ को अपनी मिसाइल दागने हेतु अपने सैन्य ठिकाने दे दिए। जिसके बाद अमेरिका ने क्यूबा पर कई प्रतिबन्ध लगा दिए। अमेरिका समर्थित राष्ट्रों ने क्यूबा से राजनैतिक सम्बन्ध समाप्त कर लिए। इस तरह की खींच तान दोनों गुटों में चलती रही। दोनों गुट एक दूसरे पर हर सम्भव प्रतिबन्ध लगाते रहे। ये प्रतिबन्ध लगाने का खेल आज तक जारी है। जिसका भुगतान सबसे अधिक तीसरे विश्व के देशों ने भरा जो कि अपने आत्मनिर्भर होने की लड़ाई अभी लड़ ही रहे थे और आज भी लड़ ही रहे हैं। प्रत्येक वैश्विक समस्या का हल शीत युद्ध के चश्मे से देख कर निकाला जाने लगा। युद्धक सामग्री का निर्माण अपने चरमोत्कर्ष पर था। सभी देशों में होड़ लगी थी युद्धक प्रौद्योगिकी को उन्नत करने की।

दो भयानक प्रलयकारी युद्ध देख चुका विश्व जहां उठने की कोशिश कर रहा था वहीं शीत युद्ध जैसे रणनीतिक, कूटनीतिक व वर्चस्ववादी वाकपटुता का सामना भी कर रहा था। दो विश्व युद्धों के भयानक परिणामों ने दोनों गुटों को इतनी क्षति पहुंचाई थी कि शीत युद्ध जैसी परिस्थतियों के बावजूद कोई पहल नहीं कर रहा था।दोनों शक्तियां द्वितीय विश्व युद्ध के बाद समझ गई थी। अब युद्ध हुआ तो किसी एक का अंत तो निश्चित है। इसलिए युद्ध की पहल घातक सिद्ध हो सकती है।परन्तु विश्व में वर्चस्व भी जमाना था, इसलिए वर्चस्व की लड़ाई जारी थी। शीत युद्ध ने सामरिक शक्तियों को एक और दोधारी तलवार के ऊपर बिठा दिया।वो तलवार थी परमाणु बम। द्वितीय विश्व युद्ध में परमाणु बमों की प्रलयंकारी विनाशलीला के बावजूद पूरा विश्व परमाणु शक्ति में सम्पन्न होने के लिए दौड़ पड़ा।एक होड़ सी मच गई परमाणु सम्पन्न देश बन ने की। परमाणु बम आज के समय में किसी ब्रह्मास्त्र से कम नहीं। जिसके एक बार निकलने पर उसे वापस लेना असम्भव तो है ही साथ में इस से सृष्टि विनाश सम्भव है। सभी परमाणु सम्पन्न देश अपने अपने गुटों को लेकर इसी तलवार पर बैठे हैं। यदि परमाणु युद्ध हुआ भी तो किसी के भी जितने की आशंका मात्र भी नहीं बचेगी। इसलिए परमाण्विक शक्ति बन ने तक ही स्वयं को सीमित रखना सब के लिए श्रेयस्कर था। उसके अलावा स्वयं परमाणु बम सम्पन्न हो जाने के बाद दुसरो पर प्रतिबन्ध लगा कर उसे परमाणु शक्ति बनने से रोकने का कूटनीतिक खेल चालू हो गया। परन्तु इस दोधारी तलवार ने विश्व एकता को झकझोर के रख दिया। मजबूत देशों को मौका दे दिया,मनचाहे देश पर परमाणु बम का संवर्धन के आरोप लगा कर युद्ध करने का। शीत युद्ध ने विश्व को कई अर्थों में यह भी सिखाया कि अब भीषण विश्व युद्ध में कूदना स्वयं के लिए चिता तैयार करना है। पर शीत युद्ध ने वर्चस्व की लड़ाई भी प्रारम्भ कर दिया।

शीत युद्ध के रक्षा प्रौद्योगिकी पर प्रभाव–

यह काल अंतरमहाद्वीपीय मिसाइलों के अभूतपूर्व विकास के लिए भी जाना जाता है। दोनों राष्ट्र के गुटों ने मिसाइलों का बहुत उन्नत विकास किया। दोनों शक्तियां अपनी मिसाइलों की पहुंच एक दूसरे के ठिकानों तक चाहती थी। 5600 किलोमीटर से अधिक मारक क्षमता रखने वाली मिसाइलों का निर्माण हो चुका था।परन्तु शीत युद्ध ने परस्पर विरोधियों को एक बात सिखाई कि "आप कितने ताक़तवर हैं ये जानने से कहीं अधिक ये जरूरी है कि आपका विरोधी देश आपसे कितना ताक़तवर है"। टोही विमानों की प्रौद्योगिकी ने नए आयाम प्राप्त किए। अमरीकी U–2 जहाज टोही मिशन के लिए मशहूर थे। कोई विश्वास नहीं करेगा कि एक दूसरे की तांका झांकी करने कूटनीति ने इन देशों से क्या क्या अविष्कार करवा दिए थे। 70000 फ़ीट की ऊंचाई पर उड़ने के बावजूद सोवियत संघ ने अपनी वायु सुरक्षा प्रौद्योगिकी से अमरीकी टोही विमानों को पकड़ना चालू कर दिया था।इसके बाद अमेरिका ने अविश्वसनीय और गुप्त तरीके से विश्व के सफलतम टोही विमानों के अग्रहरि लॉकहीड मार्टीन ब्लैक बर्ड SR–17 का निर्माण किया।

विश्वास करना कठिन है परंतु 1960 से 1990 के अंत तक टोही कृत्रिम सेटलाइटों के आने बाद पूरे विश्व को इसका पता लगा। बनाए गए 32 जहाजों में से एक भी जहाज को सोवियत संघ कभी मार नहीं सका। सोवियत संघ द्वारा गतिशील विमान

मिग–25 ब्लैक बर्ड के दस साल बाद 1970 में सोवियत संघ द्वारा जारी किया गया। सोवियत संघ ने 35 ब्लैक बर्ड की तुलना में 1186 जहाज बनाए, पर कभी कोई भी जहाज ब्लैक बर्ड की ऊंचाई तक नहीं उड़ पाया और न ही एक भी विमान को गिरा पाया।

रेडार प्रौद्योगिकी में शीत युद्ध की समाप्ति होते होते बहुत ज्यादा विकास कर लिया था। इलेक्ट्रॉनिक युक्तियां और यन्त्र ट्रांजिस्टर की खोज के बाद और छोटे हो गए थे। अभियांत्रिकी अपने चरम पर थी। भारत भी इस दौड़ से अलग होते हुए अछूता नहीं था। 1954 में भारत इलेक्ट्रॉनिक्स की शुरुआत की जिसने रेडार तथा रक्षा इलेक्ट्रॉनिकी में भारत को काफी आगे पहुंचाया। हिंदुस्तान एयरोनॉटिकल लिमिटेड की शुरुआत हुई। HAL ने युद्धक विमान निर्माण में भारत का प्रतिनिधित्व किया। HAL ने मारुत नामक लड़ाकू जहाज बनाया। इसके भारत भी रक्षा प्रौद्योगिकी सोवियत प्रभाव में आगे बढ़ा। कृत्रिम उपग्रहों तथा मानव को चांद पर भेजने की दौड़ शुरू हो गई थी।

युद्ध किसी भी प्रकार का हो उसका अंत किसी एक कि हार तथा दूसरे की जीत पर निर्भर करता है। 1990 के अंत में सोवियत संघ टूटना शरू हो गया। कई देशों के विद्रोह के कारण सोवियत संघ 1991 टूट गया और 15 नए राष्ट्रों का निर्माण हुआ। सोवियत संघ के शक्ति विहीन होने के बाद अमेरिका का महाशक्ति के रूप में उदय हुआ।

शीत युद्ध के उपरांत आर्थिक शक्ति बनने का युद्ध– शीत युद्ध के बाद दोनों देश प्रौद्योगिकी व अभियांत्रिकी के उच्चतम स्तर पर खड़े थे।दोनों देशों के समूह अपने क्षेत्रीय तथा वैश्विक वर्चस्व को बना के रखना चाहते थे। पर युद्ध करना तनिक भी श्रेयस्कर नहीं ये तो द्वितीय विश्व युद्ध ने पूरे विश्व को सीखा दिया था। इसलिए महाशक्ति बने रहने का एक मात्र तरीका था अन्य देशों को आत्मनिर्भर न बन ने देना। उन्हें किसी न किसी प्रकार से इन देशों पर निर्भर बनाए रखना। उसका एक उपाय था अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी व अभियांत्रिकी के आधार पर विश्व स्तरीय आर्थिक शक्ति बन के उभरना।

जो आर्थिक वर्चस्व का युद्ध चल रहा था वो सोवियत संघ के रहते भारत को कहीं न कहीं इस से बच रहा था। परंतु सोवियत विघटन के बाद भारत ने भी 1992 में वैश्वीकरण तथा उदारीकरण की नीतियों की घोषणा कर दी और विश्व आर्थिक युद्ध में कूद पड़ा। आर्थिक महाशक्ति बन ने का युद्ध निरन्तर जारी है। इस युद्ध मे नियम आर्थिक कूटनीति और रणनीति पर आधारित हैं। इसमें जीत लक्ष्य नहीं बल्कि जीतने के बाद उसे बनाए रखना ज्यादा बड़ी समस्या है। राजनैतिक और आर्थिक प्रतिबन्ध इस युद्ध में निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

21वीं सदी में दिखे परिणाम– इन सब के बीच दबे पांव एक और देश आगे बढ़ रहा था जिसका अनुमान लगाने में भारत के साथ साथ अमेरिका भी चूक गया। वो था जनवादी गणराज्य चीन। चीन ने अपने वर्चस्व को बढ़ाने के लिए सबसे से पहले संपूर्ण विश्व के उत्पादन को अपने यहाँ खींचा। सर्वाधिक जनसंख्या,कम मेहनत मजदूरी, श्रम कानूनों का न होना, समाज में मानवीय मूल्यों का न होना कुछ ऐसे कारण जिस से सभी वैश्विक आर्थिक शक्तियां उत्पादन के लिए चीन की और आकर्षित हुई और धीरे–धीरे चीन पर निर्भर होने लगी। चीन भी प्रौद्योगिकी व अभियांत्रिकी की नकल करके आगे बढ़ने लगा। चीन ने विदेशी उत्पादों की नकल कर कर के उन्ही विदेशी बाजारों में सेंध लगाना चालू कर दिया और विदेशों के लोकल बाजार में अपनी पैठ बना कर विदेशी ताकतों को उन्ही के बाजार में चित्त कर दिया।

आज हालात ये हैं कि चीन अमेरिका से टक्कर ले रहा है। कोविड–19 के आने के बाद से चीन की छवि को भारी नुकसान हुआ। लॉक डाउन के चलते प्रथम विश्व के देशों ने भारी उत्पादन व वित्तीय नुकसान उठाये पर फिर भी चीन पर अपनी उत्पादन निर्भरता को पूर्णतः हटा नहीं पाए। चीन ने अपनी रक्षा क्षमता में अविश्वनिय वृद्धि की। चीन ने वन रोड वन बेल्ट योजना का लक्ष्य भी विश्व के सामने रखा पर चीन की अविश्वसनीय गतिविधियों को देखते हुए विश्व ने सिरे से इसे नकार दिया।

अत्यधिक युद्धक और विध्वंसक प्रणालियों का उदय–

अब किसी बड़े युद्ध का होना तो तय नहीं है पर अपना सामरिक महत्व दर्शाना भी आवश्यक है। साथ ही साथ युद्धक सामग्री के बाज़ार को गर्म रखना भी जरूरी है। इस होड़ ने आज युद्धक प्रणालियों को अत्याधुनिक चरमोत्कर्ष पर पहुंचा दिया है। अब समय, अदृश्य हो कर युद्ध लड़ने और सेंध लगाने का है।

इसी युद्धक नीति ने स्टील्थ (छद्मावरण) विमानन प्रौद्योगिकी की खोज की। जिसके तहत अमेरिका की लॉकहीड मार्टीन कंपनी ने जॉइंट स्ट्राइक फाइटर F–22,F / 35, आदि तथा नॉर्थरोप ग्रूमन ने B–2 बॉम्बर विमानों का निर्माण किया। अमेरिका के पास F–35 विमान के 2050 तक के अन्य देशों के वैश्विक आर्डर हैं। रूस की भी सुखोई कंपनी ने स्टील्थ विमानों को बनाया जिसमें Su–57 प्रमुख है। चीन ने भी इस दौड़ में चेंगडु J20 बनाने का दावा किया है। मानवरहित टोही तथा लड़ाकू विमानों का विकास भी अपने चरम पर है। जिसमें अमेरिका का MQ1 रीपर,रूस का Su–70 हंटर, चीन का WJ–700,भारत भी अमेरिका से ड्रोन खरीद रहा है साथ में खुद भी उनका विकास कर रहा है। अमेरिका सम्पूर्ण युद्धक सामग्री के बाजार में अग्रणी बना हुआ है। अमेरिका की शह से इस्राइल भी रक्षा उपस्कर,मिसाइल आदि बनाने में विश्व में काफी आगे है। रूस इनसे पिछड़ा है पर तीसरे विश्व के देशों का मुख्य क्रेता है। भारत के रक्षा क्षेत्र को सुदृढ़ करने में रूस का बहुत बड़ा हाथ है।

इसके अलावा 21वीं सदी में सायबर वारफेयर प्रणाली और इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर ने आधुनिक रक्षा उपकरण के तौर पर उभरें हैं। आधुनिक युग में किसी भी देश की सारी प्रौद्योगिकी और अभियांत्रिकी उस देश की सूचना प्रौद्योगिकी पर निर्भर करती है। अर्थव्यवस्था को ध्वस्त करने के लिए एक साइबर हमला ही काफी है। चीन,रूस,ईरान जैसे देशों को साइबर हमलों में महारथ हासिल है। इलेक्ट्रॉनिक युद्ध(Electronic warfare (EW) से तात्पर्य ऐसी कार्यवाही से है जिसमें विद्युतचुम्बकीय स्पेक्ट्रम का उपयोग किया गया हो। इलेक्ट्रॉनिक युद्ध के अन्तर्गत दिष्ट ऊर्जा के द्वारा स्पेक्ट्रम का नियंत्रण, शत्रु पर आक्रमण करना, या स्पेक्ट्रम के माध्यम से किसी आक्रमण का प्रतिरोधित करना भी शामिल है। इलेक्ट्रॉनिक युद्ध का उद्देश्य विरोधी को विद्युतचुम्बकीय स्पेक्ट्रम के आसानी से उपयोग करने एवं उसके लाभों से वंचित रखना है। यह युद्ध हवा से, समुद्र से, थल से,या अंतरिक्ष से लड़ा जा सकता है। इसका लक्ष्य मानव,संचार व्यवस्था, रेडार आदि होत हैं।

यदि वर्तमान समृद्धि को देखते हुए, तृतीय विश्व युद्ध की कल्पना की जाए तो यह तय है कि वह परमाणु शक्ति से न लड़ कर वह युद्ध पूर्णतः इलेक्ट्रॉनिक युद्ध होगा।

निष्कर्ष– आज किसी युद्ध के न होने की संभावना के बावजूद अत्याधुनिक युद्ध सामग्री खरीदना तथा अपने देश को सर्वाधिक शक्तिशाली दिखाने की होड़ ने रक्षा जैसे सामरिक क्षेत्र को ही एक बाजार बना कर रख दिया है। आज शक्ति का प्रदर्शन युद्ध क्षेत्र में न दिखा कर अधिक से अधिक भयंकर युद्धक सामग्री का विनिर्माण या खरीद कर किया जा रहा है। अब रक्षा का अर्थ सिर्फ युद्ध न लड़ कर सदैव युद्ध के लिए तत्पर होकर सामग्री का संचय करना हो गया है। हम बहुत से संघर्षो के बाद आज इस स्थिति पर पहुंचे है कि युद्ध न हों पर रक्षा को सर्वोपरि रखते हुए,युद्ध सामग्रियों का विनिर्माण और उनका व्यापार किए जा रहे हैं। विकसित देश इसी प्रपंच का लाभ उठा रहे हैं। तीसरे विश्व के देश भी बढ़ चढ़ कर युद्धक सामग्री खरीद रहे हैं। अब कोई मित्र राष्ट्र किसी शत्रु राष्ट्र को धमकी न देकर मिलकर युद्ध अभ्यास करके अपनी सामरिक क्षमता का प्रदर्शन करते हैं।

आर्थिक हितों की रक्षा के लिए ही सामरिक शक्ति महत्व को बढ़ा है पर एक दम अलग स्वरूप में जिसमें युद्ध लड़ना आवश्यक नहीं बल्कि अपना आर्थिक हित साधने के लिए सामरिक महत्व दिखाना ज्यादा आवश्यक है। आर्थिक महत्व और सामरिक महत्व किसी भी देश की शक्ति रूपी सिक्के के दो पहलू हैं।

पर ये भी सिद्ध है कि मूढ़ देश जिनके हाथ में आज परमाणु शक्ति थमा दी गई है वो एक दिन लाठी और पत्थरों से मानवजाति को जरूर लड़वाएंगे।

स्वतंत्र भारत के सर्वोच्च 75 मुख्य घटनाक्रम

अक्षया आर
बेंगलुरु कॉमप्लेक्स

1) **विभाजन (1947)** – भारत के इतिहास की सर्वोच्च महत्पूर्ण और प्रमुख घटना है, ब्रिटिश राज की समाप्ति और भारत व पाकिस्तान दो मुल्कों में विभाजन। विभाजन के दौरान करीब 2 लाख लोग दंगों में मारे गए और करीब 14 हजार लोग विस्थापित हुए।

2) **पहला कश्मीर युद्ध** – भारत और पाकिस्तान के बीच 1947 से 1948 तक जम्मू कश्मीर राज्य को अपने अधीन करने के लिए युद्ध हुआ। महाराजा हरी सिंह के भारत प्रवेश का प्रपत्र में हस्ताक्षर डालने के बाद युद्ध रुका था।

3) **मतदान का हक** – आजादी के तुरंत बाद, भारत ने हर एक वयस्क को मतदान का हक दिया।

4) **रेलवे नेटवर्क का राष्ट्रीकरण** – सन् 1951 में रेलवे नेटवर्क का राष्ट्रीकरण हुआ और प्रारम्भिक रूप में इसे 3 जोन में बाँटा गया। भारतीय रेलवे विश्व का सबसे बडा नेटवर्क है, जिसमें 119,630 किलोमीटर तक ट्रैक और 7,216 स्टेशन है।

5) **पहला आम चुनाव** – स्वतंत्र भारत में पहला आम चुनाव 1951 में हुआ। यह गणतंत्र की ओर भारत का पहला कदम था। कांग्रेस ने 489 सीट में 364 सीटों में जीत हासिल की। पंडित जवाहरलाल नेहरु भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने।

6) **पहला एशियन खेल**– भारत में सन् 1951 में, नई दिल्ली में पहले एशियन खेलों का आयोजन किया।

7) **एशिया का पहला न्युक्लियर रिएक्टर** – 4 अगस्त, 1956 को भारत में एशिया का पहला न्युक्लियर रिएक्टर "अप्सरा न्युक्लियर रिएक्टर" का निर्माण किया।

8) **ऑस्कर पुरस्कार के लिए नामित पहली हिंदी फिल्म** – मेहबूब खान द्वारा निर्देशित फिल्म मदर इंडिया, सर्वश्रेष्ठ विदेशी भाषा के वर्ग में, ऑस्कर पुरस्कार के लिए नामित की गई।

9) **हरित क्रांति** – सन् 1960 के हरित क्रांति हुई और भारत में खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि हुई। इसमें अधिक उपज देने वाले गेहूं और दाल की प्रकार विकसित की गई।

10) **बैंकों का राष्ट्रीयकरण** – 19 जुलाई, 1969 को 14 बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ। दूसरे चरण का राष्ट्रीयकरण अप्रैल, 1980 में हुआ।

11) **1962 चीन** – भारत युद्ध – भारत और चीन के बीच सीमा को लेकर 1962 में जंग छेड़ा गया। चीन ने मैकमोहन रेखा और वास्तविक नियंत्रण रेखा को मानने से इंकार किया। जंग शुरु होने के एक महीने में चीन के युद्ध विराम की घोषणा के साथ जंग खत्म हुआ।

12) **श्वेत क्रांति** – सन् 1970 में वर्गिस कुरियन के नेतृत्व में दुग्ध क्रांति शुरु हुई जिसे श्वेत क्रांति कहा गया। इस क्रांति ने दूध उत्पादन में भारत को दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादक बनाया।

13) **1971 बांग्लादेश का उदारीकरण** – 26 मार्च, 1971 में, शेख मुजीबूर रहमान के नेतृत्व में पूर्व पाकिस्तानियों ने पाकिस्तान के साथ युद्ध कर स्वतंत्रता हासिल की।

14) **चिपको आंदोलन** – चिपको आंदोलन वन संरक्षण आंदोलन था। सन् 1973 में उत्तराखंड के चमोली जिले के रेनी ग्राम में यह आंदोलन शुरु हुआ।

15) **शिमला समझौता** – सन् 1972 में भारत और पाकिस्तान ने द्विपक्षीय वार्ता के द्वारा अपने आपसी मतभेद को शांति से निपटाने के लिए समझौते पर हस्ताक्षर किया।

16) **पोखरन 1**– सन् 1974 में "स्मैलिंग बुद्ध" कोड नाम से भारत ने अपना पहला परमाणु परीक्षण किया। इसके साथ भारत का नाम 5 परमाणु सक्षम राष्ट्रों के साथ जुड़ गया।

17) **1974 का जे पी आंदोलन** – समाजवादी नेता जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में बिहार के छात्रों ने अनियमितता और भ्रष्टाचार के विरुद्ध यह आंदोलन शुरू किया।

18) **भारत का पहला उपग्रह** –सन् 1975 में भारत ने अपना पहला अंतरिक्ष उपग्रह बनाया और उसको आस्ट्रोनोमोर "आर्यभट्ट" का नाम दिया।

19) **आपातकाल** – "आंतरिक तनाव" के कारण प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधीजी ने 1975 से 1977 तक आपातकाल की घोषणा की। इसके परिणाम चुनाव विलंबित हुआ तथा नागरिक स्वतंत्रता में भी अंकुश लगा दिया गया।

20) **1976 सामूहिक नसबंदी** – संजय गांधी ने सन् 1972 में एक ही साल में 6.2 लाख पुरुषों की सामूहिक नसबंदी करवाई। इस अभियान में करीब 2000 लोग मारे गए।

21) **मुरारजी देसाई देश के पहले गैर कांग्रेस प्रधानमंत्री** – जनता पार्टी और कई अन्य पार्टियों ने आपतकाल का विरोध किया और सन् 1977 में कांग्रेस को चुनाव में हराकर स्वत्रंत्र भारत के पहले गैर कांग्रेस प्रधानमंत्री मुरारजी देसाई बने।

22) **मंडल आयोग** – सन् 1979 में बी पी मंडल के नेतृत्व में, सामाजिक और शैक्षणिक स्तर में पिछड़े वर्ग के लोगों की पहचान करने के लिए, मंडल आयोग बनाया गया।

23) **भारत का पहला क्रिकेट विश्व कप** – सन् 1983 में, कपिल देव की कप्तानी में भारत ने वेस्ट इंडीज़ को 43 रन से हराके क्रिकेट का पहला विश्व कप जीता।

24) **पहला भारतीय अंतरिक्ष में** – भारत ने सन् 1984 में सोवियत यूनियन के साथ किए गए संयुक्त मिशन के अधीन पहले भारतीय श्री राकेश शर्मा को अंतरिक्ष भेजा।

25) **ब्लू स्टार आपरेशन** – अमृतसर स्वर्ण मंदिर से आतंकवादी नेता जरनैल सिंग भिंडरावाले और उसके समर्थकों को निकालने के लिए सेना कार्रवाई का कोड शब्द था ब्लू स्टार आपरेशन।

26) **सिख विरोधी दंगे** – सन् 1984 में जब अपने ही एक सिख बाडीगार्ड के हाथों श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या हुई थी, तब बड़े पैमाने पर सिखों पर हमला हुआ और करीब 3000 लोग मारे गए।

27) **शाहबानो केस (1985)** – भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने जीवनाम्श के अधिकार को पुष्टि कर दिया था, लेकिन कांग्रेस ने मुस्लिम वुमेंन (तलाक संरक्षण अधिनियम), 1986 को पारित कर सर्वोच्च न्यायालय के आदेश को पलट दिया।

28) **भोपाल गैस कांड** – 3 दिसम्बर, 1984 रात को भोपाल, मध्य प्रदेश के यूनियन कार्बाइड इंडिया लिमिटेड के रासायनिक संयंत्र में हुए गैस रिसाव कांड में 3000 लोग मारे गए और हजारों लोग विकलांग हुए।

29) **1986 बोफोर्स कांड** – सन् 1986 का बोफोर्स कांड सबसे बड़े भ्रष्टाचार के रूप में सामने आया जो भारत और स्वीडन के बीच हौवीटैज़र बंदूक की खरीद को लेकर हुआ था। ऐसा माना जाता है कि इसी कारण सन् 1989 के चुनाव में राजीव गांधी की सरकार गिरी।

30) **भारत ने विश्व कप आयोजित किया** – सन् 1987 का क्रिकेट विश्व कप भारत और पाकिस्तान में आयोजित हुआ था, जो पहली बार इंग्लैंड के बाहर हुआ था जिसमें पहली बार आस्ट्रेलिया ने कप जीता।

31) **भागलपुर दंगा**– सन् 1989 का भागलपुर दंगा स्वतंत्र भारत का पहला सबसे बुरा हिंदु–मुस्लिम दंगा था, जो लगातार दो महीनों तक चला जिसमें करीब 1000 लोग मारे गए और 50000 लोग विस्थापित हुए।

32) **1990 मंडल आंदोलन** – पूरे राष्ट्र में कुछ चुनी हुई जाति के लोगों को उनके जन्म के आधार पर सरकारी नौकरी देने के खिलाफ यह आंदोलन हुआ।

33) **कुवैत एयर लिफ्ट** – जब कुवैत पर आक्रमण हुआ तब 13 अगस्त 1990 से 20 अक्तूबर 1990 तक एयर इंडिया की मदद से करीब 1,75,000 भारतीयों को कुवैत से एयर लिफ्ट किया गया।

34) **1991** – अर्थव्यवस्था का वैश्विवीकरण – भारतीय अर्थव्यवस्था में विदेशी निवेशकों को भारत में निवेश करने के लिए अनुमति दी गई।

35) **राजीव गांधी की हत्या** – मई 21, 1991 में तमिलनाडु के लिबरेशन टाइगर्स समूह ने श्रीपेरम्बदूर में एक चुनावी संबोधन के दौरान तात्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की हत्या कर दी।

36) **बाबरी मस्ज़िद ध्वस्त करना** – 6 दिसम्बर 1992 को अयोध्या में विवादित बाबरी मस्ज़िद को कई हिंदु राष्ट्रीय संघटनों ने ध्वस्त कर दिया। इसके चलते पूरे भारत में दंगे हुए और करीब 2000 से ज्यादा लोग मारे गए।

37) **1992 प्रतिभूतियों घोटाला** – सन् 1992 में स्टाक ब्रोकर हर्षद मेहता के कारण भारतीय स्टाक मार्केट में इतिहास का सबसे बड़ा प्रतिभूति घोटाला सामने आया।

38) **मुम्बई विस्फोट**– गेंगस्टर दाउद इब्राहिम ने सन् 1993 में मुम्बई में लगातार विस्फोट करवाया था जिसमें 250 से अधिक लोगों की जान गई।

39) **पहली भाजपा सरकार** – सन् 1998 में भारतीय जनता पार्टी ने पहली सरकार बनाया। अटल बिहारी वाजपेई जी प्रधानमंत्री बने। लेकिन यह सरकार केवल एक साल तक टिक सकी। जब दोबारा चुनाव हुआ तब भी भाजपा अपना सरकार बनाने में सफल हुई।

40) **पोखरन II**– मई 1998 में भारत ने "आपरेशन शक्ति" नाम से, पोखरन, राजस्थान में 5 परमाणु परीक्षण किए। इसके चलते भारत पूर्ण विकसित परमाणु राष्ट्र बना।

41) **दिल्ली और लाहौर के बीच बस सेवा** – 19 फरवरी 1999 में पहली बार दिल्ली और लाहौर के बीच बस सेवा आरंभ की गई। इसी बस में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई जी लाहौर में एक सम्मेलन में भाग लेने के लिए गए।

42) **1999 कारगिल युद्ध** – पाकिस्तानी फौज द्वारा एलओसी में अतिक्रमण करने पर भारत ने "आपरेशन विजय" नाम का युद्ध शुरु किया और टाईगर हिल्स को दोबारा अपने कब्जे में लेने पर सफल हुआ।

43) **IC–814 हाईजाक–** 24 दिसंबर, 1999 को पांच पाकिस्तानी अपहरणकर्ताओं ने इंडियन एयरलाइन्स के हवाई जहाज IC–814 जो काठमांडु से दिल्ली आ रहा था, का अपहरण कर लिया। इस विमान में 180 यात्री थे जिन्हें बंदी बनाया गया। जब भारत ने अपने कब्जे में कैद 3 आतंकवादियों को रिहा किया तब उन्हें मुक्त किया गया।

44) **लाहौर समझौता** – भारत और पाकिस्तान ने फरवरी 1999 में परमाणु शस्त्रों का अनधिकृत प्रयोग न करने करने के लिए लाहौर समझौते पर हस्ताक्षर किया।

45) **मैंच फिक्सिग घोटाला–** सन् 2000 में, साउथ अफ्रीका के कप्तान हैंन्सी क्रोंजी भारत में कुछ मैंच फिक्सिंग लोगों के संपर्क में थे और रिश्वत लेकर जान बूझकर अपने खिलाड़ियों को बुरा प्रदर्शन करने पर मजबूर किया। इनमें भारतीय क्रिकेट खिलाडी अज़हरुद्दीन और अजय जडेजा का नाम भी बाहर आया था।

46) **नए राज्य का गठन** – 1, 9 और 15 नवंबर 2000 को छत्तीसगढ़, उत्तराखंड और झारखंड 3 नए राज्य का उदय हुआ, जिसके चलते भारत में कुल 28 राज्य हुए।

47) **स्वर्ण क्वाड्रिलाटरल परियोजना** – सन् 2001 में वाजपेई सरकार ने स्वर्ण क्वाड्रिलाटरल परियोजना का शुभारंभ किया जो 4 बडे शहरों, दिल्ली, मुम्बई, चेन्नै और कोलकत्ता को राष्ट्रीय राजमार्ग से जोड़ने के लिए था।

48) **सूचना का अधिकार अधिनियम–** सन् 2005 में संसद ने सूचना का अधिकार अधिनियम पारित किया। इस अधिनियम से आम नागरिक सरकार से आवश्यक सूचना प्राप्त करने में सक्षम हुए।

49) **2002 गुजरात दंगे–** 27 फरवरी, 2002 को गोधरा में रेल को जलाने से एक बहुत बुरा सांप्रदायिक दंगा शुरु हुआ। इसमें करीब 1044 लोग मारे गए, 223 लापता हुए और 2500 लोग घायल भी हुए।

50) **मनरेगा अधिनियम–** सन् 2005 में निश्चित रूप से काम देने का सबसे बड़ा कार्यक्रम महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण विकास अधिनियम लागू किया गया। इसका मूल उद्देश्य ग्रामीण घरों को साल में100 दिनों के लिए निश्चित रूप से वेतन सहित काम देना है।

51) **नाथु ला का पुन:आरंभ – 1962** चीन–भारत युद्ध के समय सिक्किम और तिब्बत के रास्ते को व्यापार के लिए जोड़ने के लिए जिस पर्वतीय मार्ग का इस्तेमाल किया जाता था, उसे बंद कर दिया गया था। लेकिन सन् 2006 में इसे दोबारा चालू किया गया।

52) **2004 सुनामी** – हिंद महासागर में आए भीषण चक्रवात के कारण एक बहुत बड़ा सुनामी उठा जिसने आंध्र प्रदेश, तमिल नाडु और अंडमान में करीब 10000 लोगों की जान ली।

53) **चंद्रयान 1–** अक्तूबर 2008 में भारत ने चंद्रयान की सफल उड़ान भरी। इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि चंद्रमा की मिट्टी में पानी की खोज करना है।

54) **पहला ओलम्पिक स्वर्ण पदक–** सन् 2008 में बीजिंग के ओलम्पिक में 10 एम आर रायफल प्रतियोगिता में भारत के अभिनव बिंद्रा ने पहला स्वर्ण पदक जीता।

55) **शिक्षा का अधिकार अधिनियम –** सन् 2009 में संसद ने शिक्षा का अधिकार अधिनियम पारित किया। यह अधिनियम सभी बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने का मौलिक अधिकार प्रदान करता है। इस अधिनियम के अनुसार सभी निजी विद्यालय को 25% सीटों का आरक्षण गरीब बच्चों के लिए करना अनिवार्य है।

56) **2008 का मुंबई आतंकवादी हमला** – पाकिस्तान में स्थित आतंकवादी समूह लश्कर ए तोयबा ने नवंबर 2008 में श्रंखलाबद्ध आतंकवादी हमले किए जिसमें लगभग 166 लोगों की जान गई।

57) **पहली देशीय परमाणु पनडुब्बी** – 26 जुलाई, 2009 में भारत ने आई एन एस अरिहंत नाम के पहले देशीय परमाणु पनडुब्बी का प्रयोग किया जिसमें 3500 मील दूर तक जाने वाले मिसाइल का इस्तेमाल किया गया।

58) **कामनवेल्थ खेल 2010** – सन् 2010 में भारत ने दिल्ली में कामनवेल्थ खेलों का आयोजन किया जिसमें भारत ने 101 पदक जीते।

59) **भारत का दूसरा क्रिकेट विश्व कप** – 2 अप्रैल 2011 को भारत ने महेंद्र सिंह धोनी की कप्तानी में श्रीलंका को हरा कर अपना दूसरा क्रिकेट विश्व कप जीता।

60) **लोकपाल आंदोलन** – सन् 2011 में श्री अन्ना हजारे जी के नेतृत्व में भारत में भ्रष्टाचार के विरुद्ध लोकपाल आंदोलन शुरू हुआ। पूरे देश में जन लोकपाल बिल को लागू करने के लिए दबाव बनाया गया। सन् 2013 में संसद में यह बिल पारित किया गया।

61) **भारतीय खाद्य संरक्षण अधिनियम**– 12 सितंबर, 2013 को राष्ट्रीय खाद्य संरक्षण अधिनियम को सहमति मिली। इस अधिनियम से 1.2 लाख से ऊपर लोगों को आर्थिक सहायता के रूप से खाद्य वस्तुएं उपलब्ध कराई गई।

62) **मार्स ओरबिटर मिशन** – 5 नवम्बर, 2013 को इसरो ने मार्स ओरबिटर मिशन को सफल बनाया और भारत को एशिया का पहला राष्ट्र जिसने अपनी पहली कोशिश में मंगल की कक्षा में पहुंचने का श्रेय मिला।

63) **पोलियो उन्मूलन** – मार्च 2014 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भारत को पोलियो मुक्त देश घोषित किया।

64) **तेलंगाना राज्य** – 2 जून, 2014 में आंध्र प्रदेश के उत्तर पूर्वी भाग को तेलंगाना नाम का एक अलग राज्य बनाया गया जिसकी राजधानी हैदराबाद घोषित की गई।

65) **भारत का पहला जी पी एस** – भारत ने NAVIC (भारतीय तारामंडल के साथ नौवहन) नामक एक स्वतंत्र देशीय क्षेत्रीय नौवहन उपग्रह प्रणाली का सफल परीक्षण किया।

66) **नोट बंदी** – सन् 2016 में भारत सरकार ने आर बी आई के पुराने ₹ 500 और ₹1000 नोटों को अमान्य करने की घोषणा की।

67) **माल व सेवा कर (जी.एस.टी)**– 01 जुलाई, 2017 को पूरे देश में एक परोक्ष कर लागू किया गया। यह प्रमुख केंद्रीय एवं राज्य करों को देने के बाद का परिणामी कर है।

68) **ट्रिपल तलाक पर सर्वोच्च न्यायालय का आदेश**– सर्वोच्च न्यायालय ने मुसलमान पतियों को अपने पत्नी को तीन बार लगातार तलाक बोलकर तलाक देने का (ट्रिपल तलाक या तलक ए बिद्दत) संस्कृति के खिलाफ आदेश जारी किया।

69) **समलैंगिकता पर सर्वोच्च न्यायालय का आदेश** – सन् 2018 में समलैंगिकता पर दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश की पुष्टि कर सर्वोच्च न्यायालय ने समलैंगिकता को अपराध श्रेणी से हटाते हुए अपना आदेश जारी किया।

70) **तेजस आई ए एफ में शामिल** – फरवरी 2019 में स्वदेशी रूप से विकसित हल्के लड़ाकू विमान तेजस को आई ए एफ में शामिल करने के लिए अंतिम परिचालन मंजूरी दिया गया।

71) **मिशन शक्ति** – 27 मार्च, 2019 को भारत में मिशन शक्ति–एक उपग्रह रोधी मिसाइल जो जमीन से अंतरिक्ष में स्थित उपग्रह को नष्ट कर सकता है, का सफलतापूर्वक परीक्षण हुआ।

72) **चंद्रयान 2** – जुलाई 22 को सतीश धवन स्पेस सेंटर श्रीहरीकोटा से भारत ने चंद्रमा पर अपने पहले अंतरिक्ष यान के लिए शक्तिशाली GSLV Mk-III राकेट भेजा।

73) **जम्मू और कश्मीर का विशेष दर्जा और अनुच्छेद 370 की समाप्ति** – 9 अगस्त, 2019 को संसद ने जम्मू और कश्मीर और लद्दाख दोनों को अलग–अलग संघ राज्यक्षेत्र घोषित करने का विधेयक पारित किया और साथ ही अनुच्छेद 370 को समाप्त किया जिसके चलते जम्मू और कश्मीर का विशेष दर्जा समाप्त हुआ।

74) **कोविड–19 महामारी** – भारत ने कोविड–19 महामारी का सामान किया और दो स्वदेशी टीकों कोवैक्सीन और कोवीशील्ड की खोज की। अब तक 100 करोड़ लोगों का सफलतापूर्वक टीकाकरण किया गया।

75) **टोकियो ओलम्पिक्स 2020** – पहली बार भारत ने टोकियो ओलम्पिक्स 2020 में सर्वाधिक 7 पदक जीते। इसमें 1 स्वर्ण, 2 रजत और 4 कांस्य पदक शामिल हैं।

आजादी के इन 75 वर्षो में भारत में घटित महत्वपूर्ण घटनाएं यूं तो बहुत हैं लेकिन ऊपर कुछ अति प्रमुख घटनाओं को लिपिबद्ध किया गया है। सभी को आजादी के अमृत महोत्सव की बहुत बहुत बधाई। जय हिंद।

1. हिंदी का पहला सामाजिक उपन्यास कौन सा माना जाता है?
   भाग्यवती (श्रद्धाराम फिल्लौरी)
2. ब्रजभाषा के सर्वोत्तम कवि किसे माना जाता है?
   सूरदास
3. निर्गुण भक्ति काव्य के प्रमुख कवि कौन हैं?
   कबीरदास
4. पद्मावत महाकाव्य कौन–सी भाषा में लिखी गई है?
   अवधी
5. कलाधर उपनाम से कविता कौन से कवि लिखते थे?
   जयशंकर प्रसाद
6. प्रेमचंद के अधूरे उपन्यास का नाम क्या है?
   मंगलसूत्र
7. वर्तमान हिंदी का प्रचलित रूप कौन–सा है?
   खड़ी बोली
8. कलम का जादूगर किसे कहा जाता है?
   रामवृक्ष बेनीपुरी को
9. आधुनिक काल की मीरा किसे कहा जाता है?
   महादेवी वर्मा
10. किस कवि को अपभ्रंश का वाल्मीकि कहा जाता है?
    स्वयंभू को

"दिल दिया है जान भी देंगे – ऐ वतन तेरे लिए"

रेखा एस हेरेंजाल
अंतरराष्ट्रीय विपणन प्रभाग

यह देशभक्ति गीत भले ही हमारे राष्ट्र भारतवर्ष की स्वतंत्रता के बहुत समय बाद आया हो, लेकिन आज भी इसे सुनकर श्रोताओं में देशभक्ति का मधुर भाव अवश्य उमड़ पड़ता है । यहां इसी भावना से मैंने एक स्वतंत्र सेनानी के बारे में कुछ बताने की कोशिश की है ।

आज़ादी के अमृत महोत्सव के इस शुभ संदर्भ में हम आम तौर पर केवल उन्हीं स्वतंत्रता सेनानियों को याद करतें हैं जिनसे हम हमारे स्कूल के दिनों में पाठ्य–पुस्तकों से परिचित हुए हैं । लेकिन हज़ारों ऐसे भी देशभक्त हुए थे, जिनके नामों का उतना उल्लेख हमारी इतिहास की किताबों या लोकप्रिय स्मृति में नहीं मिलता ! इसी श्रेणी के एक व्यक्ति है कर्नाटक के मंगलूरु शहर के कार्नाड सदाशिवराव जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए असाधारण योगदान दिया।

बेंगलूरु स्थित सदाशिवनगर का नाम किसने नहीं सुना होगा? परंतु इस क्षेत्र का नाम इसी स्वतंत्रता सेनानी के नाम पर रखा गया था यह बात शायद बहुत लोग नहीं जानतें हैं !! वास्तव में, सदाशिवनगर नामक इस क्षेत्र के मालिक, कर्नाटक के मंगलूरु के श्री सदाशिव राव कार्नाड जी ने यह क्षेत्र स्वतंत्रता संग्राम के समय दान के रूप में स्वयं ही दिया था।

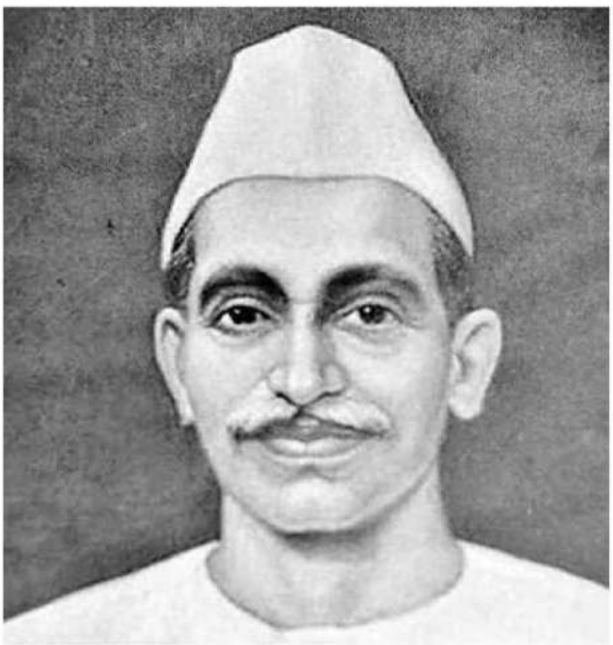

सन् 1881 में मंगलूरु के कुलीन कोंकणी भाषी परिवार में वकील श्री रामचंद्र राव और श्रीमती राधाबाई के इकलौते पुत्र के रूप में जन्मे श्री कार्नाड सदाशिवराव जी ने मद्रास के प्रेसिडेन्सी कॉलेज और बंबई शहर में पढ़ाई की और कानून की डिग्री प्राप्त की। धन संपत्ति की कमी नहीं थी, फिर भी सदाशिवराव जी अपनी वकालत की डिग्री और अपनी संपत्ति को लेकर संतुष्ट होकर अकर्मण्य नहीं बैठे रहे और न ही विलासपूर्ण जीवनशैली में रत हुए। अन्य बुद्धिजीवी देशवासियों की तरह ही उनको भी अपने देश में चल रहे ब्रिटिश राज की लूटपाट और अत्याचारों से बड़ा ही असंतोष था। गरीब, हरिजन तथा विधवाओं की सामाजिक स्थिति को लेकर वे बड़े आहत थे और उन्होंने अपने युवाकाल के आरम्भ में ही इस प्रकार की सामाजिक विषमताओं को ठीक करने की ठान ली। समाज सुधार के लिए अपनी पत्नी शांताबाई के साथ, उन्होंने विधवा और दलित महिलाओं की मदद के लिए 'महिला समाज' का गठन किया, जहाँ उन्होंने महिलाओं को शिक्षित करने और आत्म–निर्भरता के साधन खोजने के लिए धन उपलब्ध कराया। अपने घर के परिसर में एक स्कूल भी खोला और इसे "तिलक विद्यालय / साधकाश्रम" कहा, जहां हिंदी भाषा, बुनाई और अन्य हस्तशिल्प की शिक्षा दी जाती थी, यहाँ पर कई महिलाओं ने शिक्षा प्राप्त कर नर्स, शिक्षक और दर्जी इत्यादि के रूप में जीवन में आत्मनिर्भरता प्राप्त की । इस तरह, दुर्बलों के

उद्धार के लिए अपने सर्वस्व को त्याग कर सदाशिवराव जी कालांतर में अपने देश भारतवर्ष के स्वतंत्रता संग्राम में भी और मुखर कर उतर गए।

सदाशिवराव जी ने तत्कालीन भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन की ओर आकर्षित होकर, इनमें भाग लेने के लिए अपने जीवन का रुख पूरी तरह से बदल लिया । सन् 1917 में अपने मंगलूरु के अन्तर्गत आने वाले प्रदेशों में होम रूल लीग के कार्यों का आरम्भ कर, महात्मा गाँधीजी को नेतृत्व करने और मार्गदर्शन देने की माँग करते हुए उन्होंने एक पत्र लिखा। जब महात्मा गांधी ने वर्ष 1919 में अपना पहला सत्याग्रह शुरू किया तो श्री सदाशिवराव कर्नाटक के पहले स्वयंसेवकों में से एक थे जिन्होंने शपथ ली और स्वतंत्रता आंदोलन के लिए स्वयंसेवक बने। नमक सत्याग्रह, लगान/कर निराकरण, 1919 के रौलट एक्ट के विरुद्ध आंदोलन, 1920 में कलकत्ता कांग्रेस के विशेष अधिवेशन, 1920 में नागपुर के अधिवेशन के दौरान उन्होंने अनेक सत्याग्रहों में सक्रिय रूप से भाग लिया । समाज व देश सेवा की राह में असहयोग आंदोलन के दौरान उन्होंने अपने वकालत के कामकाज को त्याग दिया। इस तरह सत्याग्रहों में स्वयं को पूर्णरूपेण समर्पित कर, श्री कार्नाड सदाशिवराव ने देश की अभूतपूर्व सेवा की।

उत्तरी पश्चिम भारत में 1923 के जलप्रलय के समय ज़रूरतमंद गरीबों को आवशयक खाना, कपड़े और दवाइयों की व्यवस्था की। ब्रह्म समाज, हरिजन सेवा, विधवा विवाह आदि कितने ही सामाजिक क्षेत्रों में उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किए। इस दौरान भारतीय जनों में जागरूकता पैदा करने और स्वतंत्रता के बारे में सूचित करने के लिए उन्होंने एक शहर से दूसरे शहर की कई यात्राएं की। वर्ष 1923 के अभूतपूर्व जलप्रलय के दौरान लोगों को सांत्वना देने और उनकी मदद करने के लिए साबरमती आश्रम के लिए निकले सदाशिव जी ने अपनी सबसे छोटी बेटी को अनारोग्य के कारण खो दिया और बाद में उन्होंने अपने बेटे और पत्नी को भी खो दिया, जिससे उन्हें व्यक्तिगत तौर पर काफी धक्का लगा।

इन सबके बाद भी सदाशिवराव जी ने अपने व्यक्तिगत धन और पूरे मन से राहत शिविरों और आश्रयों का आयोजन किया और सत्याग्रहों के अग्रणी नेता बनकर दक्षिण के गाँधी कहलाए।

स्वतंत्रता के लिए दक्षिण कन्नड़ जिले के विभिन्न समुदायों को एकजुट करने में भी सदाशिव राव जी ने मुख्य भूमिका निभाई और इस दौरान उन्हें तीन (03) बार जेलयातना भी सहनी पड़ी। अथक परिश्रम, लगातार यात्रा, परिवार की क्षति और जेल यातनाओं के कारण धीरे–धीरे उनका स्वास्थ्य गिरने लगा। इसी बीच दक्षिण कन्नड़/ मंगलूरु प्रदेश में मलेरिया रोग की विभीषिका फैली। जेल में रहकर सभी कैदियों के लिए समानता की माँग करते हुए, श्री सदाशिव राव ने मच्छरदानी का उपयोग करने से भी यह तर्क देते हुए कर दिया कि यह सुविधा सभी कैदियों को बिना किसी भेदभाव के प्रदान की जाए।

श्री सदाशिवराव के अंतिम दिन – इस तरह देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ते–लड़ते, श्री सदाशिवराव ने अपने परिवार के सदस्य खोए। अपनी मानवता व उदारता और कुछ लोगों के विश्वासघात के कारण उन्होंने विरासत में मिली अपनी सारी संपत्ति खो दी। वर्ष 1936 में जब फैजपुर कांग्रेस का 50वां अधिवेशन होना था, तो कुलीन परिवार में जन्मे श्री सदाशिवराव पैसे न होने के कारण एक टेंट में रहे, जिसमें घनघोर बारिश से भीग जाने के कारण तीव्र ज्वर और निमोनिया से वे पीड़ित हो गए। गरम कपड़ों के लिए भी उनके पास पैसे नहीं बचे थे। इसी परिस्थिति में वह बंबई शहर निकले और यात्रा के दौरान उनका ज्वर और तीव्र हो उठा, और बंबई पहुँचते– पहुँचते सन् 1936 में 56 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई। अपने अंतिम संस्कार के लिए पर्याप्त नकदी के बिना दरिद्रता में दैवाधीन हुए श्री सदाशिवराव जी के अंतिम यात्रा में लाखों लोगों ने भाग लिया, जो उनकी जनप्रियता का द्योतक है । अपनी उदारता व जी–जान से जनसेवा करने के कारण आज भी दक्षिण कन्नड (मंगलूरु जिले) के जनमानस में श्री सदाशिवराव जी को आदरपूर्वक याद किया जाता है, और मंगलूरु के एक प्रमुख रस्ते को उनका नाम गौरव रूप से दिया गया है।

ऐसे ही अनेक महान चेतनाओं के त्याग और बलिदानों से हमारे राष्ट्र भारतवर्ष को स्वतंत्रता प्राप्त हुई है। इसीलिए, आज स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव पर इन स्वतंत्रता सेनानियों को याद कर उत्सव मनाने के साथ साथ हमें इसका सतत भान करना चाहिए कि अब देश को और उत्तम व उन्नत मार्ग पर ले जाने का उत्तरदायित्व हम सभी के कंधों पर है।

अमृत महोत्सव और स्व–प्रेरणा की आवश्यकता

ब्रजेश कुमार राय
क्षेत्रीय कार्यालय–विशाखपट्टनम

सामान्य तौर पर बोलचाल की भाषा में हमने सुना है कि सभी को अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए। इसका सीधा तात्पर्य स्वावलंबन से है ताकि दूसरे पर निर्भरता को कम किया जा सके। कोई भी व्यक्ति, गाँव, शहर या देश दूसरे पर निर्भर होकर विकास के रास्ते पर आगे नहीं बढ़ सकता है क्योंकि दूसरो के द्वारा निर्भरता का हमेशा ही अनुचित लाभ उठाया जाता है जिससे व्यक्ति और यहां तक कि राष्ट्र की सुरक्षा भी खतरे आ जाती है। शुभचिंतकों के अलावा सभी लोग चाहे व्यक्तिगत स्तर पर या राष्ट्रीय स्तर पर निर्भरता का अनुचित लाभ उठाने हेतु सदा तत्पर रहते हैं। कोई भी व्यक्ति या देश अपने शीश को ऊपर करके विकास के रास्ते पर सतत अग्रसर होना चाहता है तो उसकी पहली और आखरी शर्त यही है कि वह आत्मनिर्भर बने और अपने पैरों पर खड़ा रहे न कि वैशाखी के सहारे। आत्मनिर्भरता व्यक्ति और देश को आत्मबल, आत्मविश्वास और आत्मसुरक्षा के बोध से परिपूर्ण कर देती है जिससे विकास को अप्रत्याशित गति मिलती है और व्यक्ति विशेष चौमुखी विकास के लिए प्रेरित होता है।

जब हम राष्ट्र के रूप अपने देश को देखते हैं तो तकनीकी तौर पर हमने काफी विकास किया है और बहुत सारे क्षेत्र हैं जहाँ हम काफी हद तक आत्मनिर्भर हो गए हैं जैसे साफ्टवेयर, खाद्यान्न, उपग्रह प्रक्षेपण आदि। इन सभी क्षेत्रों में दुनिया हमारी तरफ़ आशा की नजर से देखती है। लेकिन अभी भी बहुत क्षेत्र हैं जिसमें दूसरे देशों पर हमारी निर्भरता काफी हद तक है जिसमें विशेष कर रक्षा उत्पाद, सेमी कंडक्टर, आई.सी उत्पाद, पेट्रोल, डीजल जैसे वस्तुएं हैं जिनकी वजह से हमारे देश की विकास दर और आर्थिक व्यवस्था पर बहुत प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

इस वर्ष हमारे देश में आजादी के अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। वास्तव में अगर हम अपना कदम आत्मनिर्भरता की तरफ़ बढ़ाते हैं तो इस महोत्सव में सकारात्मक भूमिका निभा सकते हैं और यह साल अपने आप में यादगार साल साबित हो जाएगा। सही अर्थ में आत्म निर्भर हो कर ही आजादी का अमृत पान कर सकते हैं। कोविड के दौरान बायो टेक द्वारा स्व–निर्मित को वेक्सीन भारतीय लोगों के लिए वरदान साबित हुई। स्व–निर्मित टीका के कारण ही आज देश में 100 करोड़ अधिक डोज़ लगाए जा चुके हैं । इससे प्रमुख दो लाभ हुए पहला समय और सुगमता के साथ लोगों तक मुहैया करना और देश की आर्थिक बचत। आत्मनिर्भर होने का फायदा प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिला।

भारत सरकार द्वारा आत्मनिर्भर हेतु हर एक स्तर पर आर्थिक सहयोग कर रही है ताकि तकनीकी आधारित वस्तुओं का निर्माण किया जा सके। कोविड के समय विभिन्न संस्थाओं को अनुसंधान हेतु दी गई आर्थिक मदद हैं। सबसे जरूरी यह है कि अविष्कार और अनुसंधान पर विशेष ज़ोर दिया जाए ताकि नई चीजों से निजात मिल सके । कोविड के दौरान विभिन्न वस्तुओं का स्वदेश में निर्माण जैसे पी.पी.किट और मास्क यह दर्शाता है कि अपने देश में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है । लेकिन इन सभी चीज़ों का निर्माण आवश्यकता पड़ने के बाद हुआ

जबकि जरूरत इस बात की है कि निर्माण, आविष्कार और अनुसंधान यह कार्य अनवरत चलना चाहिए ताकि हम और हमारा देश सक्षम और सबल रहे। इस अमृत महोत्सव के समय मुझे पूरा विश्वास है कि सरकार की नीतियों, सरकार के सहयोग और देशवासियों की कर्मनिष्ठा एवं बुद्धिमता मिलकर, एक दिशा में काम करते हुए नई चीज़ों का अनुसंधान करके देश को आत्मनिर्भरता की तरफ अग्रसर करते हुए देश को गौरवान्वित करेंगे।

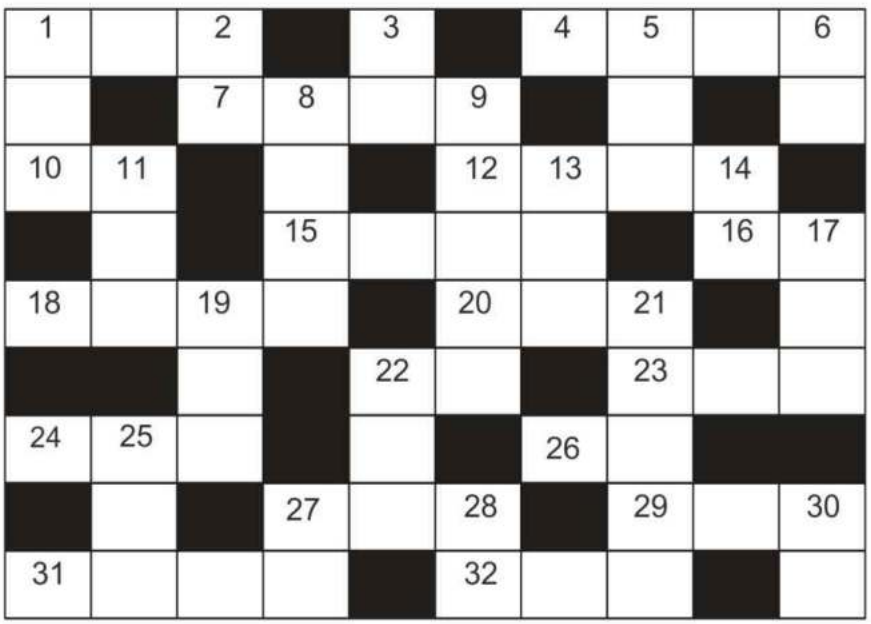

वर्ग पहेली भरें, शब्द ज्ञान बढ़ाएँ

बायें से दायें		ऊपर से नीचे	
1. चतुष्पाद (3)	22. उपदेश (2)	1. पंचायतघर (3)	14. उसी कारण (2)
4. प्रेयसी (4)	23. परंपरा (3)	2. मित्र (2)	17. रोगी (3)
7. रसपूर्ण (4)	24. शक्तिशाली (3)	3. सब ही (2)	19. सत्य (3)
10. दुर्व्यसन (2)	26. उत्साह (2)	5. गर्भ (3)	21. गणेश (5)
12. असावधानी (4)	27. सिख धर्म के संस्थापक (3)	6 .विद्रोही (2)	22. घोर व दंडनीय (3)
15. तिरस्कार (4)	29. खटखट (3)	8. भेदभावहीनता (4)	25. मज़ाक (3)
16. एक कुंतीपुत्र (2)	31. क्षमता (4)	9. एक मसाला (5)	27. रिश्ता (2)
18. प्राधान्य (4)	32. भूकर (3)	11. चुंगी–चोरी (3)	28. बीता दिन (2)
20. आकर्षक (3)		13. जीत (3)	30. अनेक (2)

इस वर्ग पहेली को भर कर, अपने नाम, कार्यालय के नाम और अपने मोबाइल नं. सहित दिनांक 31.01.2022 तक cool@bel-co-in पर भेजें। सर्वाधिक सही हल भेजने वाले प्रतिभागी को पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

आत्मनिर्भरता और हिंदी भाषा

गौरव त्रिपाठी
केंद्रीय अनुसन्धान प्रयोगशाला

भारत स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मना रहा है। अमृत महोत्सव मनाने हेतु भारत के प्रमुख स्तंभों व प्रतीक चिह्नों को उजागर करने तथा पूरे राष्ट्र को जागृत करने की आवश्यकता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राष्ट्रीय त्योहारों, राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगीत व राष्ट्रभाषा का महत्व और अधिक बढ़ गया है।

हिंदी केवल आम भाषा ही नहीं अपितु भारत की आन बान और शान है। जिस प्रकार मोती पिरो कर माला बनती है उसी प्रकार से हिंदी राष्ट्रीय अस्मिता एवं अस्तित्व को पिरो कर बनने वाली माला है। आधुनिक युग में अंग्रेजी भाषा ने समीकरण बदल दिए हैं। पाश्चात्य संस्कृति द्वारा दिए गए नित्य नए आधुनिक नौकरियों के प्रलोभन ने भी हिंदी की उपेक्षा के लिए मजबूर किया है। भारत की पहचान में हिंदी का अद्भुत योगदान हैं क्योंकि भारतीय मानस के स्वावलम्बन, स्वाभिमान एवं आत्मनिर्भरता की आधारशिला हिंदी ही है। विगत कई वर्षो से भारतवर्ष की भौगोलिक स्थिति और अंतरराष्ट्रीय पटल पर कूटनीति हेतु भारत आत्मनिर्भरता की ओर तीव्रता से चल पड़ा है। आम भारतीय के मन में सरकारी नौकरियों का लालच और आराम से जीने की परिकल्पना को अब तोड़ने का समय आ गया हैं । प्रधान मंत्री के आह्वान पर आत्मनिर्भरता की जो नींव डाल रही हैं उसे बनाए रखना है। आम भारतीय हिंदी में बात करना और समझना पसंद करता है। आत्मनिर्भरता की नीव अगर हिंदी रुपी खाद से हो तो सशक्त भारत को आत्मनिर्भर बनने से कोई रोक नहीं सकता। पहले तो जनमानस को यह याद दिलाते रहना पड़ेगा कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भारी भरकम भूमिका थी। युवा पीढ़ी को स्वतंत्रता के बारे में भी बताना होगा। उन्हें याद दिलाना होगा कि परतंत्रता जीवन का अभिशाप हैं तथा युवाओं को संगठित कर स्वतंत्रता दिलवाने में में हिंदी प्रासंगिकता एवं महती भूमिका हैं।

पूरे विश्व में हिंदी प्रतिष्ठित हो रही है तो भारत में उपेक्षा और तिरस्कार क्यों है? वर्तमान में छह सौ मिलियन से अधिक लोग हिंदी भाषा का उपयोग करते हैं। दुनिया के करीब 200 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। हिंदी भारत की राजभाषा है। तमिल, तेलुगु, मलयालम इत्यादि भाषाएँ भी भारत की धरोहर हैं किन्तु हिंदी उस पटरानी की तरह हैं जो राज्य को सुचारू रूप से चलाती है।

देश की आजादी के पश्चात 14 सितंबर, 1949 को भारतीय संविधान सभा ने हिंदी को

अंग्रेजी के साथ राष्ट्र की आधिकारिक भाषा के तौर पर स्वीकार किया था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की उपलब्धि है कि आज हिंदी स्कूलों, कॉलेजों, सरकारी कार्यालयों और सचिवालयों में कामकाज एवं लोकव्यवहार की भाषा के रूप में प्रतिष्ठा मिलने लगी है। हिंदी उपयोग में अगर नहीं लाएंगे तो भारत की ही सांस्कृतिक हानि होगी।

अभी हाल ही में उपराष्ट्रपति वैंकय्या नायडू ने हिंदी के प्रति अपने विचार व्यक्त किए और आह्वान किया कि युवा पीढ़ी हिंदी के लिए अपने हृदय में दर्द, संवेदना एवं अपनापन जगाए।

आत्मनिर्भर भारत, प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी का विजन है। इसे हासिल करने हेतु उन्होंने 20 लाख करोड़ रुपए के राहत पैकेज की घोषणा की है। कोरोना महामारी से लड़ने में और आने वाले इस दशक में आत्मनिर्भरता का परचम भारत को लहराना है।

'आत्मनिर्भर भारत' के अंतर्गत वैश्वीकरण का बहिष्कार नहीं किया जाएगा बल्कि भारत अपना योगदान विश्व के विकास में देगा। इस मिशन को भारत दो भागो में अर्जित करेगा। प्रथम चरण में ये क्षेत्र चिन्हित किए गए हैं–

- चिकित्सा– हिंदी में दवाओं के बारे में बताना
- वस्त्र– हिंदी में वस्त्रों की क्वालिटी के बारे में बताना
- इलेक्ट्रॉनिक्स– हिंदी में मैन्युअल
- प्लास्टिक– हिंदी में बताना कि प्लास्टिक को कैसे उपयोग करे
- खिलौने– हिंदी में खिलौनों का इतिहास भी बताना

प्रधानमंत्री के विज़न के अनुरूप इनको प्रोत्साहित किया जाएगा ताकि स्थानीय विनिर्माण और निर्यात को बढ़ावा दिया जा सके।

द्वितीय चरण में ये क्षेत्र चिन्हित किए गए हैं–

- रत्न एवं आभूषण– हिंदी में ज्योतिष और सभ्यता से अवगत करना
- फार्मा– हिंदी में अचिया और साइड इफ़ेक्ट के बारें में बताना
- स्टील– हिंदी में स्टील प्लांट की जानकारी देना

आत्मनिर्भर भारत में प्रमुख स्तम्भ हैं–

1.	अर्थ व्यवस्था	हिंदी को समाहित करके, आम जन मानस को साथ लेकर अर्थव्यवस्था ऊँची छलांग (क्वाण्टम जम्प) लाए।
2.	बुनियादी ढाँचा	एक ऐसा बुनियादी ढाँचा, जो विदेशी कंपनियों को आकर्षित कर सके और विदेशी कंपनियां भी अपना उत्पाद हिंदी में बेचे और बढ़ावा दे।
3.	प्रौद्योगिकी	समाज में डिजिटल तकनीक का उपयोग हिंदी में करना और बढ़ाना शामिल है।
4.	जनसंख्यिकी (डेमोग्राफी)–	भारत की जीवन्त जनसांख्यिकी हमारी ताकत है, आत्मनिर्भर भारत के लिए ऊर्जा का स्रोत है। अगर यह हिंदी में समाहित हो जाए तो पूरे विश्व में हिंदी की तूती बोलेगी।
5.	माँग	भारत के पास बड़ा घरेलू बाजार और माँग है । अगर इस मांग को हिंदी प्रोत्साहन से जोड़ दिया जाए तो हिंदी का प्रचार और प्रसार सरल हो जाएगा।

चित्र 1– आत्मनिर्भर भारत और हिंदी का प्रचार प्रसार

ऊपर दिए गए हुए चित्र से साफ़ इंगित होता हैं कि अगर आत्मनिर्भरता हेतु भारत ऋण दे रहा है तो उसमें हिंदी भाषा के प्रसार, प्रचार और प्रोत्साहन की योजनाएं निहित कर दी जानी चाहिए। अपने आप हिंदी में नव जीवन का संचार हो जाएगा।

हिंदी अजर है, अमर है और अनंत काल तक यही रहेगी।

जय हिन्द , जय भारत

मेरा दृष्टिकोण–स्वतंत्र भारत में लोगों का स्वास्थ्य

दीपा मुनिराज एम
कंपोनेंट्स एस बी यू

स्वास्थ्य ही धन है और धन राष्ट्र की समृद्धि को दर्शाता है। हम गर्व से अपने प्यारे भारत की आजादी के 75 साल मना रहे हैं। स्वाधीनता का अर्थ है स्वतंत्र होने की अवस्था या गुण। दूसरों के नियंत्रण, प्रभाव, समर्थन, सहायता या इसी तरह से स्वतंत्रता। हमारे देश में अनेकता में एकता है। स्वतंत्रता का विचार या अनुभव सभी आयु समूहों के लिए भिन्न हो सकता है फिर भी स्वस्थ लोग ही एक समृद्ध देश का सार हैं। एक सुखी और समृद्ध व्यक्ति बनने के लिए शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। कोविड महामारी संकट को देखते हुए यह और भी महत्वपूर्ण है। हम स्वास्थ्य के महत्व को जितनी जल्दी पहचान लें उतना ही बेहतर है।

कहा जाता है कि बच्चे देश का भविष्य होते हैं। बच्चे का स्वास्थ्य सभी वृद्धि और विकास का आधार है। एक बच्चे के स्वास्थ्य में उनका संज्ञानात्मक (सीखना और सोच) विकास, सामाजिक, भावनात्मक विकास और मानसिक स्वास्थ्य शामिल है। स्वास्थ्य और विकास के सभी पहलू बच्चे के समग्र कल्याण में मदद करते हैं। हमारे बच्चों को पौष्टिक और संतुलित भोजन दिया जाना चाहिए। शारीरिक गतिविधियों / खेलों और पर्याप्त नींद के साथ नियमित व्यायाम का अभ्यास करना जरूरी है जो स्वस्थ बच्चे के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अलावा समय–समय पर टीका करण नहीं भूलना चाहिए।

आज के युवाओं के लिए स्वस्थ रहना समग्र जीवन शैली का हिस्सा होना चाहिए। युवाओं के स्वस्थ विकास के लिए स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा, रोजगार और कल्याण महत्वपूर्ण हैं। अपने बारे में अच्छा महसूस करना और स्वास्थ्य की देखभाल करना आत्म–सम्मान और आत्म–छवि के लिए महत्वपूर्ण हैं। अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए स्वस्थ आहार खाना, नियमित रूप से व्यायाम करना, शराब, धूम्रपान और नशीली दवाओं से बचना होगा। योग के माध्यम से तनाव को प्रबंधित करें या एक शौक पैदा करें, अन्य लोगों के साथ जुड़ें और मिलनसार हों या कुछ स्वयंसेवी गतिविधियों में शामिल हों।

हमारे देश में बुजुर्गों की संख्या कुल जनसंख्या का 10% है। अगले 10 वर्षों में इसके 40% तक बढ़ने की उम्मीद है। वृद्ध लोगों के लिए स्वतंत्रता के कई अर्थ हैं, लेकिन कुछ अर्थ सभी के लिए समान हैं– सहायता स्वीकार करना; खुद का काम करना; संसाधनों के रूप में परिवार, मित्र और धन का होना और शारीरिक और मानसिक क्षमताओं का संरक्षण। फिटनेस हर उम्र में महत्वपूर्ण है, लेकिन यह वृद्ध वयस्कों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

भारत आजादी के 75वें वर्ष को चिह्नित करते हुए श्आजादी के अमृत महोत्सवश मना रहा है। आइए हम सब अपना, अपनों का ख्याल रखते हुए ईमानदारी से प्रयास करें और अपने समाज को बदलें। यह हमारी आजादी का जश्न मनाने का सबसे अच्छा तरीका है।

सभी पाठकों को भारत के 75वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। **जय हिन्द**

निर्यात – आखिर क्यों?

अजीत सिंह
अंतरराष्ट्रीय विपणन प्रभाग

प्रस्तावना– विभिन्न समानों व सेवाओं का सम्पूर्ण विश्व में क्रय – विक्रय करना, आज अपेक्षाकृत अधिक व्यावहारिक व व्यापक बन गया है । विश्वभर में अधिकांश ग्राहक क्रय करने के लिए प्रस्तुत हैं और भारत निर्मित साजो–सामान व सेवाओं की वैश्विक मांग किसी से दोयम नहीं हैं । बहुतेरे निर्यातक वैश्विक बाजारों में निर्यात कर अपने सकल लाभ व प्रतिस्पर्धात्मकता में निरंतर अभिवृद्धि कर रहे हैं और हम भी ऐसा कर सकते हैं।

वर्तमान भारतीय परिवेश में निर्यात– इंटरनेट की सुलभ सुविधा, परिष्कृत रसद–प्रचालन विकल्प और भारत सरकार की निर्यात में सहायक अनेक परियोजनाओं ने अब छोटे से छोटे व्यवसाय हेतु भी निर्यात के द्वार खोल दिए हैं। आजकल निर्यात कर हजारों निर्यातक अपने ग्राहकीय आधार में विविधता व गुणवत्ता की संपुष्टि कर राष्ट्रीय व वैश्विक अर्थव्यवस्था में हो रहे बदलावों को सह पा हैं और व्यापार विस्तार करने के नए आयाम सफलतापूर्वक खोज पा रहे हैं।

निर्यात– अभिवृद्धि की आवश्यकता की तार्किक पुष्टि– यह बात तो किसी से छिपी नहीं है कि पिछले डेढ़– दो दशकों से भारत के स्थानीय बाजार में भी, विदेशी विक्रेताओं के लिए काफी हद तक इसके खुल जाने के कारण, प्रतिस्पर्धा काफी बढ़ गई है। विदेशी विक्रेता भी भारत को एक बड़े बाजार के रूप में देखते हैं और विश्व के कितने ही राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था तो निर्यात पर ही निर्भर है। इस बदले हुए माहौल में, सच्चे मायनों में प्रतिस्पर्धी होने के लिए कम्पनियों को अपने साजो–सामान व सेवाओं के विक्रय के लिए जोर–शोर से विदेशी बाजारों में प्रवेश करना अति आवश्यक है। बीईएल भी तेजी से निर्यात में अभिवृद्धि कर स्थानीय व वैश्विक दोनों ही स्तरों पर व्यापार में भारी विस्तार कर सकता है। निम्न महत्वपूर्ण तथ्य इस दृष्टिकोण की पुष्टि करते हैं –

- सकल लाभ में वृद्धि (निर्यातक कम्पनियां, न निर्यात करने वाली कम्पनियों की अपेक्षा 17% अधिक लाभ कमाती हैं)
- सामयिक उतार–चढ़ाव कम कर अपने व्यावसायिक क्रम में स्थिरता के स्तर में बढ़ावा
- अधिकतम समय अपनी विनिर्माण क्षमताओं का 10–100% उपयोग
- स्थानीय बाजार में अपनी पकड़ बनाए रखना व विदेशी कम्पनियों की तुलना में अधिक प्रतिस्पर्धी होना
- सभी बाजारों में अपनी प्रतिस्पर्धात्मकता में उत्तरोत्तर वृद्धि
- पंजीकृत कर अपनी बौद्धिक संपदा (इटैक्चुअल प्रॉपर्टी) के मूल्य में वृद्धि
- अपने व्यवसाय के कुल मूल्य में इजाफा
- आगे बढ़कर ग्राहकों को उत्तमोत्तम व सही कीमत में आवश्यक साज–सामान व सेवाएं उपलब्ध कराना संभव
- उत्पादों व सेवाओं में वैश्विक स्तर की गुणवत्ता का नियमन व रणनीतिक उन्नयन
- नए–नए उत्पादों व समाधानों का त्वरित सृजन

वर्तमान वैश्विक परिवेश– वैश्विक अर्थव्यवस्था में गत वर्षों में हुए विकास के कारण संयुक्त राज्य अमेरका, यूरोप, अफ्रीका, दक्षिण–पूर्व एशिया, और अन्य विकासशील राष्ट्रों में बहुधा नए धनाड्य उपभोक्ताओं की संख्या काफी बढ़ी है । अन्य

क्षेत्र जैसे लैटिन अमेरिका व कैरेबियाई, मध्य–पूर्व एशिया व सीआईएस राष्ट्रों ने भी वैश्विक स्तर पर विकास के लिए कमर कसनी शुरू कर दी है जिसके कारण वैश्विक व्यापार में भविष्य के वर्षों के लिए अभूतपूर्व वृद्धि आकलित की गई है । इस प्रकार तेजी से फैलते वैश्वीकरण व बदलते समीकरणों के इस दौर में भारत के सभी आकारों के उद्योग–धंधों के सम्मुख इस आय–धारा में सम्मिलित होना एक अनिवार्य जरूरत है जो प्रमुख चुनौती बनकर उभरा है।

निर्यात – चुनौती या सुअवसर– यह निर्विवाद सत्य है कि जैसे–जैसे वैश्विक बाजार बढ़ रहा है, इसमें शामिल कम्पनियां स्थानीय बाजारों के मुकाबले विदेशी बाजारों से अधिक विक्रय कर ज्यादा आय कमा रहीं हैं। इस पर आपका तर्क हो सकता है, "यह सब तो ठीक है, लेकिन दूसरे देश के व्यक्ति की आवश्यकतानुसार उत्पाद क्या हमारे पास उप्लब्ध हैं ?" सम्भवत: नहीं, पर अनेक उत्पादों व तकनीकों पर कार्य करने वाली कम्पनियों व निकायों के लिए ऐसे उत्पाद व समाधानों का त्वरित विनिर्माण व अनुप्रमाणन एक चुनौती से कहीं अधिक एक सुअवसर है। अनेक उदाहरण मिलते हैं कि ऐसी कम्पनियां, जो अनेक प्रकार के उत्पाद व सेवाओं का उत्पादन करतीं हैं, निर्यात के माध्यम से और बड़ी हुई हैं। हाँ, जो भी विक्रय किया जाता है उसमें ग्राहकों के नजरिए से कुछ तो तुलनात्मक अच्छा व अलग होना चाहिए; साथ ही अन्य घटक जैसे बेहतर ग्राहक सेवा, संवेदनशील विपणन रणनीति व सामयिक गतिशीलता भी सौदे को अन्तिम रूप देने महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ऐसा पाया गया है सफल निर्यातक व्यवसायों में कार्यरत लोगों के व्यापारिक सिद्धांत अत्युत्तम व मुखर होते हैं, साथ ही वे वैश्विक फैलाव एवं नूतन विचारों को समझने व साधने के प्रति लालायित रहते हैं।

दूसरे प्रकार की कम्पनियां (मर्चेंट) जो विनिर्माण न कर, खरीद–फरोख्त करतीं हैं, वे भी निर्यात के माध्यम से थोक और वितरण सेवाओं उन्नत, व्यापक व दक्ष प्रक्रियाएं एवं व्यवस्थाओं के द्वारा लाभ कमाते हुए विस्तार कर सकतीं हैं ।

एक और अनुशंसा– 'निर्यात क्यों' की अनुशंसा में एक अन्य उत्तर भी है कि निर्यात के कारण कंपनी में प्रत्येक के ज्ञान व कौशल का विकास होता है। व्यक्तिगत व सामाजिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त होता है, अनुसंधान व वैचारिक आदान–प्रदान की संस्कृति विकसित होती है। अपनी सीमाओं के बाहर के बाजारों में व्यापार करना, व्यापारियों को और बेहतरी के लिए बदल सकता है। नए व्यापारिक संबंधों का उद्भव, दूसरी सभ्यताओं की समझ में बढ़ोत्तरी व निकटता, अपने से काफी सुदूर के लोगों या व्यवसायों की आवश्यकताओं की आपूर्ति के लिए आवश्यक संसाधनों व प्रक्रियाओं की समझ और नई–नई व दुरूह व्यापारिक चुनौतियों का सामना करते रहना, व्यक्तिगत तौर पर सुखद अनुभूतिकारक है । निर्यात में संलिप्तता उत्पादों व सेवाओं में सामयिक संशोधन कर विभिन्न कम्पनियों को और मजबूत बनाता है ताकि वे और सशक्त हो किसी भी बाजार में प्रतिस्पर्धी सिद्ध हों।

उपसंहार– उपरोक्त पर यदि विचार करें और अपने आसपास हो रहे दैनिक व मासिक या वार्षिक व दाशमिक समयांतरालों में हुए बदलावों की सिरे से लेकर थोड़ी सी भी जांच–पड़ताल करें तो आप पाएंगे कि आज के समय में किसी भी कंपनी के लिए निर्यात और प्रतिस्पर्धा में बने रहना एक विकल्प नहीं वरन् परम आवश्यकता है और गौर से देखने पर यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि आधुनिकीकरण की तरफ तेजी से बढ़ते भारत के लिए वर्तमान में चल रहा 2020–2030 का यह दशक मुख्यत: निर्यात के क्षेत्र में भारतीय कम्पनियों के व्यापक विस्तार के सूत्रपात का काल भविष्य में कहलाया जायेगा।

"मृत्यो मुक्षीय मामृतात"

उषा रावत
गाज़ियाबाद

किसी भी राष्ट्र का भविष्य तभी उज्ज्वल होता है जब वह अपने अतीत के अनुभव से सीख लेकर अपनी संस्कृति व विरासत को सहेज कर विकास हेतु निरंतर प्रयासरत रहता है। आज हमारा देश 15 अगस्त 2021 से भारत की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगाँठ आजादी के अमृत महोत्सव के रूप में मना रहा है। प्रधानमंत्री मोदी के शब्दों में, "देश की 75वीं वर्षगाँठ से तात्पर्य 75 साल की उपलब्धियां, 75 साल पर विचार, 75 साल पर एक्शन, 75 साल का संकल्प शामिल है जो कि स्वतंत्र भारत के सपनों को साकार करने के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा देंगे। हमारे वेदों का वाक्य है, "मृत्यों मुक्षीय मामृतात" अर्थात कम दुख, क्लेश और विनाश से निकल कर अमृत की ओर बढ़े। यही संकल्प आज़ादी के इस अमृत महोत्सव का है।"

आजादी के 75 वर्षों में हमारा देश भारत विकासशील देशों की श्रेणी में है हालांकि विकसित देशों से आज ये अभी भी काफी पिछड़ा है। एक सम्पन्न व विकसित देश बनाने के लिए भारत को आत्मनिर्भर बनना आवश्यक है। आत्मनिर्भरता प्रत्येक व्यक्ति व देश के लिए एक आवश्यक स्थिति है। आत्मनिर्भरता से तात्पर्य किसी व्यक्ति या देश को अपनी आजीविका हेतु किसी भी वस्तु या सामग्री के लिए अन्य व्यक्ति अथवा देश पर निर्भर न रहकर या सहारा न लेकर स्वयं अपने आप पर ही निर्भर होना है। जिस तरह प्रत्येक वयस्क चाहे वह महिला हो या पुरुष, उसकी आत्मनिर्भरता उसमें एक आत्मविश्वास जगाती है और वह अपने पैरों पर खड़ा होकर अपना जीवन सुख व संतोष से गुजारता है। वहीं दूसरी ओर एक बेरोजगार परिवार के दूसरे सदस्यों पर निर्भर रहकर जहाँ दूसरों पर बोझ होता है वहीं उसकी दूसरे पर अधिक समय तक निर्भरता उसमें हीन भावना जगाती है अर्थात उसमें कई मानसिक विकारों को जन्म देती है और पूरे परिवार की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को प्रभावित करती है। यही स्थिति देश की होती है। किसी भी वस्तु या उत्पाद के लिए दूसरे देशों पर आश्रित राष्ट्र एक ओर जहाँ अपने इन उत्पादों के आयात के लिए अपनी मुद्रा खर्च करता है वहीं निर्यातक देश इनकी कीमत, गुणवत्ता व आपूर्ति में अपनी मनमानी करते हैं जिससे देश पर अतिरिक्त बोझ पड़ता है और देश की विकास दर यानि जीडीपी प्रभावित होती है।

कोरोना काल का प्रथम व द्वितीय चरण एक विकट समय रहा, लेकिन अब जैसे कि यह कुछ हद तक नियंत्रण में है और स्थिति सामान्य हो रही है। जो लोग शहरों से पलायन कर गए थे, उनमें से कइयों ने स्वरोजगार में कामयाबी पाई और अपने साथ ही नए छोटे व कुटीर उद्योग व व्यवसाय खोलकर अन्य साथियों को भी रोजगार उपलब्ध कराए जो प्रशंसा के पात्र हैं। स्थानीय संसाधनों का उपयोग करते हुए आज ऐसे ही पहल व स्वरोजगार द्वारा आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर होने की आवश्यकता है, जो खुद की मेहनत, निष्ठा व नयी सोच, संकल्प से प्रेरित व पोषित की गई हो।

आज सरकार द्वारा भी युवाओं व बेरोजगारों के लिए विभिन्न रोजगारोन्मुख कार्यक्रम व योजनाएँ चलाई जा रही हैं। मेक–इन–इंडिया, ईज़ ऑफ डूइंग बिजेनस जैसी कई योजनाएं स्वदेशीकरण व आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करने हेतु चलाई जा रही हैं। प्रधानमंत्री मोदी जी का `वोकल फॉर

लोकल' का नारा स्थानीय उत्पादों के प्रचार–प्रसार हेतु काफी प्रेरणादायी संदेश रहा है। इसके द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को स्थानीय संसाधनों का दोहन करते हुए लघु व कुटीर उद्योग खोलने हेतु नवोन्मेषकों को प्रोत्साहित किया जा रहा है, ताकि वे स्वदेशी वस्तुओं का उत्पादन करें, परिणामतः ग्रामीणों की शहरी या विदेशी वस्तुओं पर निर्भरता कम हो सके और स्वरोजगार भी सृजित किया जा सके। आजादी के अमृत महोत्सव पर भारत के नागरिक अधिक से अधिक स्वदेशी उत्पादों का निर्माण कर स्वयं व देश को आत्मनिर्भर बनाएँ, यही इस महोत्सव पर सभी देशवासियों का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए।

देश के स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के अविस्मरणीय योगदान से पूरा विश्व सुपरिचित है। वस्तुतः आजादी की लड़ाई में अलग–अलग प्रेरणाएं हैं जिन्हें आत्मसात करके हम आगे बढ़ सकते हैं। प्रधानमंत्री मोदी जी ने मार्च 2021 में आजादी के अमृत महोत्सव नमक सत्याग्रह हेतु दांडी यात्रा के यादगार दिवस से प्रारम्भ किया था। अतः नमक सत्याग्रह व स्वदेशी अपनाओ आंदोलन से प्रेरित होकर प्रत्येक भारतीय को विदेशी वस्तुओं पर निर्भरता को कम करते हुए स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करना चाहिए। यही हमारे राष्ट्र पिता महात्मा गांधीजी का भी सपना रहा था। सरकार की ओर से चलाया जाने वाला आत्मनिर्भर भारत अभियान आज कई निर्दिष्ट क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनने हेतु अवसर प्रदान करता है जिससे इन क्षेत्रों में नई उपलब्धियां हासिल की जा सके और देश को नयी ऊँचाइयों पर पहुंचाया जा सके।

हालांकि भारत को पूर्णतः आत्मनिर्भर बनने में इसके समक्ष अभी भी कई चुनौतियां हैं, बावजूद इसके, आजादी के 75 वर्षों बाद आज हमारे देश की पहचान एक सशक्त राष्ट्र के रूप में हो रही है। आज कई चीजों में हमारा देश स्वदेशी निर्मित वस्तुओं को ही अपना रहा है जिससे विदेशों पर निर्भरता घटी है। स्वदेशी निर्मित कोरोना वैक्सीन, पीपीई किट आदि इसके ज्वलंत उदाहरण है। इसके अतिरिक्त भारत प्रमुख निर्यातक देशों की सूची में अपना स्थान बनाने में सफल रहा है। डबल्यूटीओ द्वारा नवीनतम जारी आंकड़ों के अनुसार इस वर्ष जनवरी–जुलाई में भारतीय वस्तुओं के निर्यात में 47% की वृद्धि हुई है जिससे इस दौरान तेल के भारी आयात के बावजूद चालू खाते का घाटा (सीएडी) नियंत्रण में रहा है।

इसके अतिरिक्त कई क्षेत्रों में भी भारत की पराश्रयता घटी है। रक्षा, तकनीकी व अन्तरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भारत ने कई मिसाइलें व उपकरण बनाकर आत्मनिर्भरता पाई है। व्यापार जगत व कृषि क्षेत्रों में भी नए कीर्तिमान हासिल किए हैं। लेकिन एक विकसित राष्ट्र बनने के लिए ये अभी भी नाकाफी हैं। आजादी के समय हमारे देश के महानायकों व सपूतों ने जो सपने देखे थे वे इन 75 वर्षों में पूरे नहीं हो पाए हैं, जिन्हें हम आज आत्मनिर्भरता, आत्मबल और आत्मविश्वास से हासिल कर सकते हैं। अतः आज हमारा कर्तव्य है कि सांप्रदायिकता, आतंकवाद, वर्गवाद, प्रांतवाद आदि जैसी महत्वपूर्ण समस्याओं से भारत को मुक्त करके अपने देश को सशक्त, सक्षम व सम्पन्न देश बनाने में अपना सम्पूर्ण योगदान दें। तभी आज़ादी का यह अमृत महोत्सव फलीभूत होगा और तभी "मृत्यों मुक्षीय मामृतात" का संकल्प साकार हो पाएगा।

वही भाषा जीवित और जागृत रह सकती है जो जनता की ठीक–ठाक प्रतिनिधित्व कर सके और हिंदी इसमें समर्थ है ।
पीर मुहम्मद मूनिस

हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया ।
डॉ राजेंद्र प्रसाद

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखी भी कीजिए । भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए ।
महावीर प्रसाद द्विवेदी

आजादी का अमृत महोत्सव–उपलब्धि, चुनौतियां और संभावनाएँ

ब्रह्मदेव रॉय
बेंगलुरु कॉमप्लेक्स

आजादी के अमृत महोत्सव, अर्थात 75वें साल में मनाए जाने वाला त्योहार । जैसा कि हम जानते हैं इस वर्ष भारत देश 75वां साल का जश्न मना रहा है, किन्तु यह आजादी के महोत्सव मनाने का सौभाग्य हमें ऐसे ही प्राप्त नहीं हुआ है । इस आजादी के लिए हमें बहुत बड़ी कीमत चुकाई है, चुनौतियों का सामना करना पड़ा है।

भारत पर लगभग 200 साल तक शासन करने वाले, अंग्रेज़ों से 15 अगस्त 1947 को आजादी मिली। देश को आजादी मिलते ही बंटवारे का सामना करना पड़ा। आजादी के बाद भारत को विकास की पटरी पर लाना बहुत बड़ी चुनौती थी। अंग्रेजी शासन के दौरान भारत की आर्थिक स्थिति जर्जर हो चुकी थी। अंग्रेज भारत से कच्चे माल का निर्यात करते थे और तैयार माल भारत में बेचते थे। इससे भारत के अर्थ व्यवस्था को और हानि पहुँचती थी।

स्वतंत्रता के बाद, देश में लोकतंत्र की स्थापना करना और बहुत बड़ी चुनौती थी। करोड़ों लोगों की पहली बार मतदाता सूची तैयार करना और लोगों को लोकतंत्र की जानकारी देना एक और चुनौती थी। अंततः तह इतनी समस्याओं के बावजूद, 1952 में पहली बार चुनाव हुए। हम जानते हैं कि भारत में बहुत सारे जाति और धर्म के लोग रहते हैं। ऐसे में भारत को एक जुट बना कर रखना बहुत मुश्किल था। एकता और अखंडता की समस्या आज भी हमारे देश के सामने है।

सन 1947 से अब तक भारत ने अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की। आर्थिक व तकनीकी दृष्टिकोण से अगर देखा जाए तो आज भारत एशिया का तीसरी सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था है। आजादी के बाद भारत तेजी से विकास करने वाला एकमात्र देश है। चाँद और मंगल पर मानव रहित यान भेजने वाला पांच देशों में से एक है। उत्पादन के मामले में भारत ने कई देशों को पीछे छोड़ दिया है।

अंत में आजादी के अमृत महोत्सव मनाते हुए, आने वाले समय में नए भारत के निर्माण के लिए नई नीतियां व योजनाएं बनाई जा रही हैं। वर्तमान सरकार सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास लेकर आगे बढ़ रही है। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है की भारत जल्द ही एक सर्व संपन्न राष्ट्र बनेगा।

"आत्मनिर्भर भारत"

हेमंत विलास माताड़े
बीईएल पुणे यूनिट

दुखों का होगा अंत सुखों की दुनियां लाएंगे,
हम करते है संकल्प आत्मनिर्भर भारत बनाएँगे।

कर्ज का बोझ न सहने देंगे, ब्याज से मुक्ति दिलाएंगे,
क्रय, विक्रय, भुगतान, हर चिंता से मुक्ति दिलाएंगे।
दुखों का होगा अंत सुखों की दुनियां लाएंगे,
हम करते है संकल्प आत्मनिर्भर भारत बनाएँगे।

कोई न होगा गरीब, साधन जुटाएंगे,
रोजगार, बेरोजगार का भेद मिटाएंगे।
दुखों का होगा अंत सुखों की दुनियां लाएंगे,
हम करते है संकल्प आत्मनिर्भर भारत बनाएँगे।

जीवन का उत्कर्ष सभी की साँसों मैं झलकेगा,
अपने हाथों हम अपनी यूँ धरा सजाएंगे।
दुखों का होगा अंत सुखों की दुनियां लाएंगे,
हम करते है संकल्प आत्मनिर्भर भारत बनाएँगे।

मेहनत कर विकास की बयार बहाएंगे,
जब देखोगे, विस्मय होगा वह विकास लाएंगे।
दुखों का होगा अंत सुखों की दुनियां लाएंगे,
हम करते है संकल्प आत्मनिर्भर भारत बनाएँगे।

"स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका"

मुकेश प्रजापत
गाज़ियाबाद

हिंदी हमारा गौरव है, हिंदी हमारा अभिमान है
यही हमारी शान है, यही हमारी पहचान है

भाषा तथा समाज का सनातन संबंध है, भाषा से ही समाज का पूर्ण रूप से विकास होता है, भारत में भाषा के विविध रूप है, लेकिन इन सभी रूपों का समावेश कर राजभाषा उसे एक ही सुई में पिरोती है। भाषा तब सशक्त मानी जाती है जब वह भावनाओं की सटीक तथा सार्थक अभिव्यक्ति करे । इसी कड़ी में विविध रूपों के समावेश के लिए राजभाषा विभाग ने हिंदी भाषा के प्रचार व प्रसार के लिए बहुत ही सरहानीय कदम उठाए, ताकि हिंदी सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। हिंदी का इतिहास लगभग 1000 साल पुराना है। अतीत के महापुरुषों ने हिंदी के माध्यम से ही सम्पूर्ण राष्ट्र से संपर्क किया और सफलता हासिल की । इसी के कारण आजादी के पश्चात संविधान सभा द्वारा बहुमत से हिंदी को राजभाषा का दर्जा देने का निर्णय लिया गया, हिंदी का देश की एकता व अखंडता को बनाए रखने व आजादी दिलाने में बहुत बड़ा योगदान रहा है। भारत का लोकतंत्र, प्राचीन सभ्यता, समृद्ध संस्कृति तथा अनूठा संविधान विश्व भर में एक उच्च स्थान रखता है। उसी तरह भारत की गरिमा व गौरव की प्रतीक राष्ट्र भाषा हिंदी को हर कीमत पर विकसित करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए । इस दिशा में वर्तमान सरकार के प्रयास बहुत ही उल्लेखनीय व सरहानीय है।

हमारे देश के प्रधानमंत्री ने आत्म निर्भर भारत अभियान योजना की घोषणा की ताकि हम 130 करोड़ लोग आत्मनिर्भर बने तथा इस योजना से देश के रोजगार पर ध्यान दिया जाए, इस योजना को साकार करने में हिंदी भाषा बहुत बड़ी भूमिका अदा कर रही है।

कुछ सालों पहले तक अंग्रेजी भाषा के प्रति हम सभी का यही दृष्टिकोण था कि जो अंग्रेजी में बात करता है उसको एक अलग पहचान मिलती है तथा हिंदी में बात करने वाला अपने आप को हीन महसूस करता था । लेकिन पिछले कुछ वर्षों से इस नजरिए में बदलाव देखने को मिला है। हमारे देश के उपराष्ट्रपति श्रीमान वेंकैया नायडू का भी हिंदी को लेकर दर्द झलका था जब उन्होंने कहा कि "अंग्रेजी एक भयंकर बीमारी है, जिसे अंग्रेज छोड़कर चले गए" जो संवेदना व दर्द वेंकैया नायडू को हिंदी को लेकर है वही स्थिति जन जन के साथ होनी चाहिए। जब से संयुक्त राष्ट्र के मंच हो या भारत की किसी देश के साथ द्विपक्षीय वार्ता हो, हमारे प्रतिनिधियों ने हिंदी में ही प्रतिनिधित्व किया है, जिससे हिंदी का मनोबल और ऊँचा हुआ है । यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि हिंदी अब धीरे धीरे राजभाषा से राष्ट्रीय भाषा की ओर अग्रसर हो रही है, और यह भारत को आत्मनिर्भरता की ओर ले जाने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।

किसी भी देश की तरक्की के लिए भाषा का महत्वपूर्ण योगदान होता है आज हम जितने भी विकसित देशों की सूची देखेंगे तो पाएंगे कि वहां पर कार्यालयों में अपनी मातृ भाषा का ही प्रयोग होता है, जरुरत है उसी तरह से हमें भी कार्यालयों, दफ्तरों व बैठकों में भी सिर्फ हिंदी का प्रयोग करने की।

आज हिंदी को पूरे विश्व में बोली जाने वाली भाषाओं में तृतीय स्थान प्राप्त है, लेकिन हमारे देश में ही हिंदी के प्रति हो रही उपेक्षा को सुधारने की जरुरत है ।

देश की भाषा व राष्ट्रीयता एक दुसरे के पूरक हैं, जिस भाषा में हमारे विचार उत्पन्न होते है, उसी भाषा का प्रयोग करें तो स्थिति कुछ और ही होगी। आज स्कूलों में बच्चों को अंग्रेजी थोपी जाती है उसके विचार चाहे हिंदी में जाग्रत हो रहे हैं लेकिन उन्ही विचारों को प्रकट करने के लिए उसे अंग्रेजी का सहारा लेना पड़ता है। जैसे हम राष्ट्र से प्रेम करते हैं वैसे ही जरुरत है हिंदी भाषा से प्रेम करने की।

भारत के स्वतंत्रता के आन्दोलन में हिंदी कवियों व क्रान्तिकारियों के ओजस्वी कविताओं व नारों व उनसे मिली प्रेरणाओं ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे हर मानुष तक देशभक्ति की भावना जाग्रत हुई। आज भी हम हिंदी में लिखे गए उन नारों को सुनते हैं तो रग रग में देशभक्ति का जुनून उमड़ पड़ता है जैसे बाल गंगाधर तिलक द्वारा उद्घोषित "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, मै इसे लेकर रहूँगा " या भगत सिंह द्वारा द्वारा लिखा गया "इन्कलाब जिंदाबाद" या नेताजी सुभाष चन्द्र बोस द्वारा बोला गया नारा "तुम मुझे खून दो मै तुम्हे आजादी दूंगा" ऐसे बहुत से नारे या कविताएं हैं जिनसे देश के हर व्यक्ति में आजादी के लिए जोश का संचार हुआ। ये सभी नारे हिंदी में नहीं बोले गए होते तो शायद ही इतने जोश का संचार हो पाता, हिंदी भाषा ने आजादी में उस क्रान्ति का काम किया जिसे भुलाया नहीं जा सकता ।

जरुरत है आज हिंदी को समस्त देश में सम्मान दिलाने की, हिंदी के प्रति बच्चों को जागरूक करने की, यह तभी मुमकिन हो पाएगा जब हम स्कूलों व कॉलेजों में हिंदी का प्रचार व प्रसार करें । हम सभी यही जानते हैं कि आज बड़ी बड़ी कम्पनियों में नौकरी उन्ही को मिलती है जिनकी अंग्रेजी भाषा में पकड़ अच्छी है, जरुरत है समस्त देश में इसी धारणा को बदलने की ।

हमें अपनी राष्ट्र भाषा को बचाने के कदम उठाने होंगे अन्यथा हमें हिंदी की विलुप्त होती भूमि को स्वयं के हिन्दुस्तान में देखना होगा ।

"जय हिंद जय हिंदी"

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।

– जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है ।

– रविशंकर शुक्ल

बीईएल द्वारा निर्यात – इतिहास के पन्नों से

एच पी श्रीनिवास रॉव
अंतरराष्ट्रीय विपणन प्रभाग

बीईएल द्वारा निर्यात कोई नई बात नहीं है। परन्तु इसके महत्व को और उजागर करने के लिए बीईएल परिवार को बीईएल के निर्यातक इतिहास की एक झांकी प्रस्तुत करने का प्रयास इस लेख में किया गया है।

पहले रेडार का निर्यात – सन् 1973 में बीईएल को अपने तकनीकी पार्टनर मैसर्स ऑर्लिकॉन कण्ट्रेव्स से एस एफ एम रडार का विनिर्माण कर तीसरे देश ईराक में इसकी आपूर्ति के प्रति ऑर्डर मिला । इस प्रकार बीईएल ने अपनी संस्थापना के दो दशकों के भीतर ही लगभग साठ (60) फायर कण्ट्रोल रडार 'सुपरफ्लेडरमॉस (एस एफ एम) रडार' का निर्यात कर 1970 के दशक में इस क्षेत्र में कदम रखा। एस एफ एम रडार उस समय की आधुनिकतम तकनीक का नायाब उत्पाद था दृ यह इलेक्ट्रॉन ट्यूब्स पर आधारित था और गियर बॉक्स व ग्रिड एंटेना के साथ ही इसके विनिर्माण में प्रीसीजन यांत्रिक अभियांत्रिकी सम्मिलित थी । इसके निर्माण में काफी संख्या में एल्यूमीनियम व स्टील की कास्टिंग्स की आवश्यकता पड़ती थी। यह स्विस कंपनी मैसर्स ऑर्लिकॉन कण्ट्रेव्स से प्राप्त लाइसेंस के अंतर्गत बीईएल में विनिर्मित हुआ पहला व सफल रडार था।

ईराक में निर्यात के अन्य सुअवसर – सत्तर के दशक के शुरुआती दौर में ईराकी सरकार ने इलेक्ट्रॉनिक घटकों के उत्पादन हेतु ईराक में एक कारखाने की स्थापना के प्रति भारत सरकार से सहायता मांगी। भारत सरकार ने यह जिम्मेदारी बीईएल को सौंपी । इस कार्यक्रम की प्रगति व अन्य व्यावसायिक सुअवसरों की खोज करने के लिए बीईएल ने सन् 1978 में ईराक के बगदाद में अपने पहले विदेशी कार्यालय की स्थापना की। भारतीय सेना के सिगनल कोर से ब्रिगेडिअर श्यामल घोष को प्रतिनियुक्ति पर लेकर इस कार्यालय का प्रमुख व महा प्रबंधक – ईराक बनाया गया। वर्ष 1979–81 में बीईएल ने रु. 50 करोड़ के लगभग के रेडियो सेट्स का ईराक में निर्यात किया।

वर्ष 1978–80 के आंकड़े – इसके अलावा भारत सरकार के विदेश मंत्रालय की पहल के अंतर्गत वर्ष 1977 में बीईएल की एक टीम ने तंजानिया का भी दौरा किया। परिणामस्वरूप वहां भी बीईएल ने रु. 3.6 करोड़ का निर्यात किया। यदि वर्ष 1978–80 के दौरान निर्यात नहीं किया गया होता तो बीईएल को अपने टर्नोवर के क्षेत्र में भारी नुकसान उठाना पड़ता।

- वर्ष 1978–79 में बीईएल का कुल टर्नोवर रु. 74.7 करोड़ रहा, जिसका लगभग एक तिहाई हिस्सा रु. 24.8 करोड़ बीईएल के निर्यात के माध्यम से आया था ।
- आंकड़ों के अनुसार वर्ष 1978–79 व 1979–80 में बीईएल की बैंगलोर यूनिट की स्थानीय बिक्री में लाभप्रदता क्रमश: 7.9% व 11.3% थी, वहीं निर्यात बिक्री में लाभप्रदता क्रमश: 45.8% व 43.7% रही।

सॉफ्टवेअर निर्यात – अस्सी के दशक के मध्य में ही बीईएल ने सॉफ्टवेअर निर्यात की सम्भावनाओं को देखते हुए सॉफ्टवेअर निर्यात ग्रुप (सौफेक्स) की स्थापना की और साथ ही अमेरिका की दो फर्मों से ऑर्डर भी प्राप्त किए।

अंतरराष्ट्रीय विपणन प्रभाग (अं.वि.प्र.) की स्थापना – निर्यात को और बढ़ावा देने के लिए जून,1988 में अंतरराष्ट्रीय विपणन प्रभाग (अं.वि.प्र.) की स्थापना प्रस्ताव रखा गया और जनवरी, 1989 में इसका गठन कर इसे एक महाप्रबंधक के नेतृत्व में कार्यान्वित किया गया। अपने गठन के समय से ही अं.वि.प्र. ने निर्यात के बढ़ाने की दिशा में अनेक नई पहल की। जून, 1993 में अं.वि.प्र. ने अल्जीरिया से + 10.4 मिलियन का निर्यात ऑर्डर प्राप्त किया जिसे बड़े ही कम समय में दिसम्बर, 1993 तक पूरा भी कर लिया गया। इस बीच आने वाले वर्षों में बीईएल ने अन्य कई देशों में व अन्य उत्पादों के लिए भी कई छोटे–बड़े निर्यात ऑर्डर प्राप्त किए जिसमें मुख्य तौर पर जनरल इलेक्ट्रिक मेडिकल इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए उत्पाद, विभिन्न ग्राहकों के लिए कंपोनेंट्स की आपूर्ति इत्यादि हैं । आंकड़े पर अगर नजर डालें तो, अं.वि.प्र. के गठन से अक्टू बर 31, 2021 तक बीईएल ने लगभग रु. 4,200 करोड़ का निर्यात किया है और दिनांक नवम्बर 01, 2021 को बीईएल की निर्यात ऑर्डर बुक रु. 1,172.48 करोड़ है।

निर्यात से मिलने वाले लाभों पर एक नज़र – वर्ष 1991–92 के दौरान जब देश विदेशी विनिमय की कमी से जूझ रहा था, बीईएल ने निर्यात से मिलने वाले विदेशी विनिमय के माध्यम से जरूरी अवयवों का आयात कर स्वदेशी कार्यक्रमों हेतु समय पर आपूर्ति सुनिश्चित की, जो उस कठिन समय में बीईएल के लिए एक बड़ी उपलब्धि थी।

ऑफसेट के लिए निर्यात – भारत सरकार ने जुलाई, 2004 में केलकर समिति का गठन किया । इस समिति को रक्षा सौदों में क्रय प्रक्रियाओं में आवश्यक परिवर्तनों के प्रति अनुशंसा और रक्षा मंत्रालय की सार्वजनिक क्षेत्र की यूनिटों (डीपीएसयू), आयुध कारखाना बोर्ड (ओएफबी) और रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) की भूमिका की समीक्षा का कार्यभार सौंपा गया।

- केलकर समिति ने अप्रैल, 2005 में अपनी रिपोर्ट भारत सरकार को सौंपी जिसमें एक बिंदु विदेशों से तकनीक व निवेश लाने के लिए ऑफसेट नीति के क्रियान्वयन का था।
- सितम्बर 01, 2006 में भारत सरकार रक्षा खरीद प्रक्रिया शुरु की। काफी चर्चाओं के बाद वर्ष 2011 में व्यापक ऑफसेट नीति को लागू किया गया और साथ ही रक्षा ऑफसेट प्रबंधन विंग का गठन किया गया।

गत एक दशक में बीईएल ने ऑफसेट के अंतर्गत भी कई परियोजनाओं पर कार्य कर निर्यात के क्षेत्र में अपने कदमों को सशक्त किया है। बीईएल ने अब तक लगभग रु 600 करोड़ का निर्यात ऑफसेट के अंतर्गत किया है।

समुद्रपार विपणन कार्यालयों की श्रृंखलाबद्ध स्थापना – गत चार (04) वर्षों में बीईएल ने प्रबंध से मिले सहयोग व रक्षा मंत्रालय द्वारा प्राप्त दिशानिर्देशों के अंतर्गत कुल छह विपणन कार्यालयों की स्थापना की है जो वियतमान, म्यान्मार, श्री लंका, ओमान, संयुक्त राज्य अमेरिका, सिंगापुर में स्थित हैं। इसे आगे बढ़ाते हुए आगामी वर्षों में बीईएल अन्य राष्ट्रों में भी कई कार्यालय खोलने की दिशा में कार्यरत है। समुद्रपार विपणन कार्यालयों के माध्यम से अब तक लगभग रु. 200 करोड़ का निर्यात किया जा चुका है। इन कार्यालयों ने बीईएल की स्थानीय उपस्थिति दर्ज करा, उन राष्ट्रों में आवश्यक नेट्वर्क को और भी प्रभावी बनाया है। साथ ही बीईएल को विदेशी बाजारों में स्थाई जगह बनाने के लिए रणनीतिक महत्व की सूचनाएं उपलब्ध कराने में बीईएल के ये नए कार्यालय अन्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं, जो सम्भवत: आने वाले वर्षों में बीईएल से होने वाले निर्यात के लिए मील का पत्थर साबित होंगे।

भविष्य – आशा है कि निर्यात की आवश्यकता और सामयिकता पर उपरोक्त रोचक तथ्य बीईएल के पाठकगणों को इस ओर और सजग बना और अधिक क्रियाशील होने के लिए प्रेरित करेंगे ताकि हम अपने कॉर्पोरेट वीजन के अनुसार सही अर्थों में एक वैश्विक पेशेवर इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनी के रूप में इस दशक में स्वयं को स्थापित कर सकें और उज्जवल भविष्य की ओर पंख पसार सकें ।

भारत के राष्ट्रीय प्रतीक

आशुतोष कुमार शुक्ल
बीईएल, बेंगलुरु

आन बान और शान की,
संस्कृति और संस्कार की।
राष्ट्रीय प्रतीक हैं प्रबल साक्षी,
भारत और भारतीयता के गुणगान की।

तीन रंगों वाला अपना राष्ट्र ध्वज जब गगन में लहराता है,
हर भारतीयों को गर्व से स्वतंत्रता की याद दिलाता है।
इसके नीचे हम सभी भारतीय सत्यनिष्ठा का वचन लेते हैं,
भारत की अखंडता और प्रहरी के लिए हम अपना समर्पण देते हैं।

रवीन्द्र नाथ टैगोर द्वारा रचित राष्ट्रगान की जब ध्वनि कर्ण में गूँजती है,
देशभक्ति से ओत – पोत हो सब भारतीय झूमने लगते हैं।
जन गण मन का यह मृदुल स्वर जब जन मानस में आता है,
प्रकृति भी इसकी हुंकार से भारतीयता को नवजागृत कर देती है।

बंकिमचन्द्र चटर्जी द्वारा रचित राष्ट्र गीत जब मातृभूमि की महिमा गढ़ती है,
वंदे मातरम का यह वंदन जन–जन की वाणी को सुशोभित करती है।
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम की ध्वनि सबको सम्मोहित कर देती है,
मातृभूमि के आगे शीश झुकाकर सब भारतीय माँ की वंदन करते हैं।

राष्ट्र चिन्ह अशोक स्तंभ की संरचना और महिमा सबको गौरवान्वित करती है,
हर भारतीयों के दिल में भारत की पहचान बनाता है।
इसमें प्रयुक्त "सत्यमेव जयते" का कथन सबको सत्यता की महता बताता है,
भारत का यह प्रतीक शक्ति, हिम्मत गर्व और विश्वास को प्रदर्शित करता है।

राष्ट्रीय फूल कमल की पावन प्रतिष्ठा है अत्यंत न्यारी,
भारत के पारंपरिक मूल्यों को करती हैं यह समाहित।
इसकी सुंदरता और महता को हैं सबने अपनाया,
भारतीय समृद्धि, सम्मान, ज्ञान और गर्व का है यह साया।
राष्ट्रीय पशु शाही बंगाल बाघ की शक्ति है अपार,
अपनी ताकत और शाही अंदाज से यह देता है सबको मात।
चमकदार पीली पट्टी से यह सुशोभित,
भारत को गौरवान्वित करने हेतु किया जाता है संबोधित।

गंगोत्री से निकली गंगा राष्ट्रीय नदी कहलाती है,
इसके पवित्र जल की महिमा बहुत ही न्यारी है।
पूजी जाती हैं यह ईश्वर समान,
हिन्दू धर्म में इसको है विशेष दर्जा प्राप्त।

राष्ट्रीय पक्षी के रूप में विराजता मोर,
भारतीय संस्कृति और परंपरा का है यह अनोखा जोड़।
शिष्टता और सुंदरता में हैं यह बेमिसाल,
पंख तो है इसके लाजवाब।

फलों का राजा आम है
इसे राष्ट्रीय फल का दर्जा प्राप्त है।
अपनी मिठास और स्वाद के लिए बहुचर्चित,
यह तो फलों में वाकई बहुत ही खास है।

राष्ट्रीय खेल हॉकी भारतीय इतिहास की पहचान है,
हम भारतीयों को इस पर नाज है।
सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी ध्यानचंद की गुणगान है,
असाधारण गोल करने के लिए वो काफी विख्यात है।

बरगद तेरी काया पर है हम फिदा,
तू बना रहे राष्ट्रीय पेड़ सदा।
तेरी छांव तले जब भी आता,
सारी थकावट दूर और मन प्रसन्न हो जाता।

हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद–भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।

– मदन मोहन मालवीय

भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।

–नरेंद्र मोदी

अमृत महोत्सव और आत्म निर्भर भारत

देवेश मिश्रा
सीआरएल गाज़ियाबाद

इस साल हम सभी भारतवासी अपनी आज़ादी की 75 वीं वर्षगाँठ मना रहे है। इसी वर्ष से हम भारत–वासियों ने आजादी के अमृत महोत्सव की शुरुआत की है। आज़ादी के अमृत महोत्सव की शुरुआत एक ऐतिहासिक दिन से की गई है – उस दिन से जिस दिन महात्मा गांधी ने दांडी मार्च से शुरू किया था। हम सभी जानते हैं कि महात्मा गांधी ने 12 मार्च 1930 को साबरमती से नमक सत्याग्रह की शुरुआत की थी। आज़ादी का अमृत महोत्सव भी हमारे केन्द्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल द्वारा साबरमती से ही शुरू किया गया है।

यह अभियान पूरे देश में स्वदेशी की भावना को जगाने का प्रयास है। इसकी मूल भावना में हमारे प्रिय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिया का मूल मंत्र 'वोकल फॉर लोकल' निहित है। इस अभियान का ध्येय जन सामान्य के हृदय में अपने स्वदेशी उत्पादों के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा साथ ही अपने नवीन उत्पादों को अपने स्वदेशी उत्पादों में शामिल करके अपने देश को सुदृढ़ बनाना है।

हमारे प्यारे प्रधानसेवक मोदी जी के शब्दों में यह अमृत महोत्सव, नए संकल्पों का अमृत महोत्सव है, यह उत्सव,स्वतंत्रता सेनानियों से प्रेरणा लेने का महोत्सव है, ये नए विचारों को आत्मसात् करने का महोत्सव है, ये आत्मनिर्भरता को अपनाने का अमृत महोत्सव है।

आत्मनिर्भरता का संकल्प इस महोत्सव की आत्मा है। भारत की आज़ादी के 75 वर्षों पश्चात भी हम आज बहुत सारे उत्पादों में आयात पर निर्भर हैं। 1950 के दशक में, कृषि प्रधान देश होते हुए भी, हमें अनाज भी आयात करना पड़ता था, किन्तु हरित क्रांति की मदद से आज हम कुछ एक कृषि उत्पादों को छोड़कर, आत्म निर्भर बन गए है। इसी तरह, इस कोरोना काल में भी बहुत सारे चिकित्सीय सामग्रियों, उपकरणों के प्रयोग से हम आत्मनिर्भर बन गए हैं। प्राचीन बैल–गाड़ियों से चन्द्र यान व मंगल यान की यात्रा, हमारी आत्मनिर्भरता का एक सफल और जीता जागता उदाहरण है।

आत्मनिर्भरता की उपयोगिता किसी से छिपी नहीं है। आज के बहुत सारे वयस्कों ने हरित क्रांति की उपयोगिता व उसकी आवश्यकता को सिर्फ पुस्तकों के माध्यम से महसूस किया था। किन्तु इस कोरोना काल ने हम सब को भी आत्म निर्भरता की आवश्यकता को महसूस करा दिया है।

आत्म निर्भरता में ही हमारे देश की उन्नति निहित है । आज के परिपेक्ष्य में आत्मनिर्भरता का अर्थ दुनिया से अलग हो जाना कतई नहीं है। बल्कि विश्व के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ना है, भारत को विकासशील देशों की श्रेणी से निकाल कर विकसित देशों की श्रेणी में ले जाने का है तथा अपने स्वदेशी उत्पादों, अपनी मूलभूल संस्कृति को साथ लेकर आगे बढ़ने का है।

सूर्योदय

सारिका पी एस
सुपुत्री – श्रीनिवास राव

आज अचानक राम चंदर को फिर किसी ने याद दिला दिया कि आजादी के आंदोलन में उत्तराखंड की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वो कैसे भूल सकते थे कि राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस के कार्यक्रमों में उत्तराखंड के लोगों की हिस्सेदारी से यहां भी स्वतंत्रता आंदोलन की लहर तेजी से फैली, जिसे और गति देने का कार्य गांधीजी की यात्राओं ने किया था। गांधीजी ने पहली बार अप्रैल 1915 में उत्तराखंड की यात्रा की थी। तब वे कुंभ के मौके पर हरिद्वार आए थे। इस दौरान वे ऋषिकेश और स्वर्गाश्रम भी गए। वर्ष 1916 में उनका दोबारा हरिद्वार आना हुआ। तब स्वामी श्रद्धानंद के विशेष आग्रह पर उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी में व्याख्यान दिया था जिसे राम चंदर और उनके मित्र केवल सिंह ने भी पूरे मनोयोग से सुना। किसी चित्रपट की भाँति राम चंदर को सब कुछ याद हो आया कि इसी दौरान गांधीजी से मिलने के लिए देहरादून से डीएवी स्कूल के छात्रों का एक समूह भी हरिद्वार पहुंचा था। जून 1929 में जब गांधीजी का स्वास्थ्य कुछ खराब चल रहा था, तब वे पंडित जवाहर लाल नेहरू के आग्रह पर स्वास्थ्य लाभ करने के लिए अहमदाबाद से कुमाऊं आए थे।

देहरादून में उन्होंने कन्या गुरुकुल का भ्रमण किया और राजपुर रोड में शहंशाही आश्रम के सामने तत्कालीन मानव भारती विद्यालय परिसर में पीपल का एक पौधा रोपा। आज भी यह बूढ़ा दरख्त गांधीजी की स्मृतियों को जिंदा रखे हुए है। तब इस विद्यालय के संचालक शिक्षाविद् डॉ. डीपी पांडे हुआ करते थे। वे गांधी के पक्के भक्त थे।

गांधीजी का दोबारा मसूरी आगमन मई 1946 में हुआ। तब वे वहां आठ दिन तक यहां रहे थे। इस अवधि में उन्होंने मसूरी में कई प्रार्थना सभाओं और सार्वजनिक सभाओं में शामिल होकर गरीबों के लिए चंदा एकत्रित करने का कार्य किया। राम चंदर ने दिन रात एक कर पूरे गाँव में घूम घूम कर सोलह सौ रुपए इकट्ठा किया था। इस अभियान में कस्तूरबा गांधी, मीरा बहन, खुर्शीद बहन, पं.जवाहर लाल नेहरू, आचार्य कृपलानी, देवदास व प्रभुदास गांधी, प्यारे लाल, शांति लाल त्रिवेदी, महावीर त्यागी, स्वामी श्रद्धानंद, आचार्य रामदेव, विक्टर मोहन जोशी, देवकी नंदन पांडे, गोविंद लाल साह जैसे कई प्रमुख व्यक्ति शामिल थे।

इसी संदर्भ में उन्हे स्वतंत्रता संग्राम में उत्तराखंड की महिलाओं का भी अहम योगदान याद हो आया। उनकी पत्नी माधुरी देवी ने परिवार और तीन बच्चों की चिंता किए बिना अपने पति का कंधे से कंधा मिलकर साथ दिया था। दरअसल किशोरावस्था में ही वे स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़ी थीं और मुल्क की आजादी तक इसमें सक्रिय रहीं। इस दौरान दोनों को जेल भी जाना पड़ा। 'भारत छोड़ो' आंदोलन में भी उन्होंने राष्ट्रीय नेताओं का पूरा साथ दिया था। आज उनकी अर्धांगिनी इस लोक में नहीं हैं लेकिन शायद बूढ़ी हड्डियों में आज जितनी भी ताकत बची है, वो उनके कारण ही है।

राम चंदर अक्सर अपने गाँव के परचून वाले, उनसे उम्र में दस साल छोटे बिमल मोहन के साथ अपनी यादें ताज़ा किया करते हैं। अब करें भी तो क्या, और किसी को उनकी बीती बातें सुनने में कोई दिलचस्पी भी तो नहीं रही।

हालांकि आज़ादी का सूर्योदय हुए दशकों बीत चुके हैं, लेकिन राम चंदर को न जाने किस नवोदय का इंतजार है। पिछले साल उन्हें भारत सरकार के आज़ादी के अमृत महोत्सव के बारे में स्थानीय समाचार पत्र से मालूम चला। जिला अधिकारी, सरपंच, ब्लॉक अधिकारी और न जाने कितने पत्रकार उनसे मिलने आए, कई समारोह में उनकी आव भगत की गई, सम्मानित किया गया, उन्हे खूब सुना गया। आज उनके चेहरे पर संतुष्टि का भाव साफ़ दिखने लगा है, अब उनकी चाल में एक अजीब सी चुस्ती और गर्व का आभास होता है। सूर्योदय का उनका इंतजार ख़त्म होता दिखता है।

राष्ट्रीय प्रतीक

शशि कान्त
बीएसटीसी, बेंगलुरु

राष्ट्र की पहचान,
होती राष्ट्र प्रतीकों से ।
बहुत कुछ सीखना है हमें,
बीते अपने अतीतों से ।।

राष्ट्र प्रतीकों का,
होता अपना इतिहास है।
विश्व में अपनी विशिष्टता बताती,
राष्ट्रीय प्रतीक कुछ खास है।।

तीन रंगों से बना तिरंगा,
भारतीयों का अभिमान है।
आंच ना आए तिरंगे को,
हाज़िर रहती जान है।।

केसरिया है, त्याग व बलिदान,
सफ़ेद है, सत्य, शांति की गुणगान।
हरा रंग, समृधि का प्रतीक है,
नीला चक्र, केंद्र में सटीक है।।

अशोक स्तम्भ, जन गण मन,
राष्ट्रीय चिन्ह, राष्ट्रीय गान है।
भागीरथी जो बनी गंगा
पवित्रता की पहचान है।।

अधिकारिक लिपि है, देवनागरी लिपि ,
वट वृक्ष दृढ़ता की प्रतीक है।
संघर्षो से मिली आजादी,
प्रेरणादायी अपना अतीत है।।

अनेकता में एकता रखने वाली,
भारत पर अभिमान करते हैं।
आजादी में भूमिका निभाने वाले,
वीरों का सम्मान करते हैं।।

जीवन से खेलकूद का ह्रास और राष्ट्रीय खेल हॉकी की वर्तमान स्थिति– एक चिंतन

वीरेंद्र कुमार कुशवाहा
अंतरराष्ट्रीय विपणन प्रभाग

हमने बचपन में पहली बार हॉकी स्टिक शायद सन् 1995 के दौरान उत्तर प्रदेश स्थित छोटे से शहर पीलीभीत में अपने विद्यालय ड्रमण्ड राजकीय इण्टर कॉलेज में दो छात्र गुटों के मध्य हो रही झड़प के दौरान देखी थी । इस झड़प को हमारे प्रधानाध्यापक श्री इकराम रजा खां व तेज–तर्रार शिक्षक श्री नरेद्र मोहन सक्सेना ने तितर–बितर कर मामला संभाला था । इससे पूर्व भी हॉकी के बारे में हमने कुछ–कुछ सुना था, पर इसके बारे में अधिक जानकारी नहीं थी । फिर बाद के अध्ययनकाल में हमने जाना कि हॉकी हमारे जनमानस की मान्यतानुसार भारत का राष्ट्रीय खेल है और हॉकी के जादूगर कहे जाने वाले मेजर ध्यानचंद के नाम से भी थोड़ा–बहुत रूबरू हुए ।

परंतु अस्सी–नब्बे के दशक और 21वीं शताब्दी के बीते दो दशक भारतवर्ष में मुख्यतरू क्रिकेट के नाम रहे, इस तथ्य पर शायद ही किसी को कोई आपत्ति हो। हमने भी नब्बे के दशक में खूब क्रिकेट खेला और तबीयत से टी.वी. पर देखा भी । क्रिकेट की धुन में सहपाठियों को कक्षा बंक करने और गली–मोहल्ले के कोमलकाय बच्चों व नवयुवकों को मई–जून की भीषण गर्मी में भी खुले मैदान से कोई गुरेज नहीं था। हमारे शहर में मैदानों की कमी न थी। क्रिकेट खेल के नियम सरल थे व खेल के लिए आवश्यक साज–सामन भी असानी से कम कीमत में उपलब्ध थे। कुछ खिलाड़ी क्रिकेट के पुरोधा थे तो कुछ हम जैसे कच्चे खिलाड़ी भी मित्र–मण्डली के स्नेह के कारण मैदान में पहुँचते थे।

गत सप्ताह जब मैं किसी उपयुक्त राष्ट्रीय विषय पर एक निबंध लिखने पर विचार कर रहा था तो कुछ न सूझने पर अपनी पत्नी से इस आशय से कुछ विचार देने का आग्रह किया। मेरी पत्नी को अपने बी.पी.एड के शिक्षणकाल से ही विभिन्न प्रकार के खेलों के बारे में अच्छा ज्ञान व रुचि है। उसने मुझे भारत के राष्ट्रीय खेल हॉकी पर एक लेख लिखने की प्रेरणा दी । मैंने विचार किया तो मन में यह प्रश्न उठा कि मैदान व खेलने वाले तो उपलब्ध थे और शायद खेलने के लिए स्टिक और गेंद भी आसानी से मिल सकती थी, क्रिकेट के उदय से काफी पहले ही भारतवर्ष में हॉकी का प्रचलन व विश्वभर में नाम हुआ, फिर भी क्या कारण हैं कि हमारा जननामित राष्ट्रीय खेल उपेक्षित हो आज हाशिए पर आ खड़ा हुआ है। और क्या वास्तव में इस ओर हम भारतवासियों को कुछ करने की आवश्यकता है या अब समय आ गया है कि जनमानस के अनुसार भी भारत का राष्ट्रीय खेल हॉकी नहीं होना चाहिए।

भारतवर्ष विविधता में एकता वाला देश है। यहाँ भिन्न–भिन्न कद–काठी, बोली–भाषा, रहन–सहन और शारीरिक व मानसिक क्षमताओं के लोग रहते हैं। खेलकूद न केवल मनोरंजन, बल्कि व्यक्तिगत व सामाजिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अति आवश्यक है । इस कारण मेरी समझ से तो यहां भारतवर्ष में जितने प्रकार की क्रीड़ा–प्रतिस्पर्धाएं वैश्विक व स्थानीय तौर पर होतीं हैं, सभी को बराबर बढ़ावा मिलना चाहिए। क्या पता कौन व्यक्ति किस खेल में झण्डे गाड़े, किसकी रुचि व प्रतिभा किस खेल के माध्यम से और मुखरित हो। खेलकूद हमारी दैनिक जीवनशैली का अभिन्न अंग होना चाहिए ।

मैंने स्वयं से यह प्रश्न किया कि कौन सा खेल मुझे प्रिय है तो याद आया टेबल टेनिस का खेल जिसे मैंने अपने डिप्लोमा व इंजीनियरिंग के दिनों में काफी खेला। और यहां बीईएल में कार्य आरम्भ करने के बाद भी वर्ष 2012 तक कभी कभी अपने सहकर्मियों के साथ कुछेक क्रिकेट मैच खेले। वर्ष 2012 में आईआईएम कोझीकोड में 3 माह के प्रशिक्षण प्रवास के

दौरान 10 किमी की हाफ मैराथन में भी भाग लिया। पर तत्पश्चात खेलकूद इत्यादि का जीवन में अभाव सा हो गया है। यह मेरे साथ ही नहीं, हमारे देश में अधिकांश जनों के साथ यही होता है। स्वस्थ जीवनयापन के लिए अति आवश्यक खेलकूद दिनचर्या के दायरे से निकल जाते हैं, आभास ही नहीं होता।

शायद ऐसा ही कुछ सामाजिक व राष्ट्रीय स्तर पर भी होता है जिस कारण भारत ने अपनी गुलामी के समय व आजादी मिलने के आरम्भिक दौर में हॉकी में उच्च दर्जे का प्रदर्शन किया और फिर जनचेतना से इसका ह्रास होता गया। हालांकि इसके बाद भी धनराज पिल्लई जैसे कई नामचीन खिलाड़ियों ने हॉकी में भारतवर्ष को गौरवान्वित किया, पर कड़वा सच यही है कि राष्ट्र की प्रिय हॉकी अब भारतीय जनमन से निकल चुकी है। कारण प्रतिभा की कमी नहीं है और न ही संसाधनों की ही कमी है; अपितु यहां भारी कमी है – इच्छाशक्ति की, कार्यकारी सरकारी तंत्र की, बदली हुई शिक्षा व्यवस्था की, तीव्र गति से दौड़ती जीवन पद्धति की, गांव से शहर व शहर से मेट्रो में पलायन, संयुक्त परिवारों का विघटन, ऑनलाइन/टी.वी./ओटीटी इत्यादि पर 24 घण्टे मनोरंजक कंटेंट की उपलब्धता, लोकव्यवहार में व्यक्तिपरक सोच, चारित्रिक विकास में खेलभावना की न्यूनता और अंधाधुंध बदलते जा रहे हमारे सामाजिक मूल्यों की।

हमें सुदूर भविष्य को दृष्टिगत रखते हुए बीते इतिहास से अमृत ग्रहण कर वर्तमान में जीवन का आचरण करना चाहिए क्योंकि जीवन हमसे पहले भी था, अब भी है और चिरकाल तक हमारे बाद भी प्रवाहित होगा।

"स्वच्छता एक प्रवृत्ति"

के. एच दमानिया
बी. ई. एल. पुणे

गांधी जी के सपने को,
हमने अमृत–वर्ष में संवारा है ।
गर्व से कहेंगे अब हम सभी को,
कि भारत देश हमारा है ।।

शहर–शहर और गाँव–गाँव,
छिड़ चुका सशक्त अभियान।
घर, दफ्तर हो कोई भी पड़ाव,
स्वच्छता ही है सबकी जान ।।

बच्चे, जवान, बूढ़े, नर–नारी,
मान चुके हैं सब यह मूलमंत्र
खत्म होगी सारी बीमारी,

जब देश होगा गंदगी से स्वतंत्र।।
एक दिन की नहीं यह प्रवृत्ति,
यह तो है आंतरिक संस्कार।
स्वच्छ जलवायु, निर्मल वसुंधरा,
स्वस्थ जीवन का है आधार।।

किताबें कहना चाहती हैं

ईश्वर चंद्र मिश्र
सहायक निदेशक (से.नि.)
के.अ.ब्यूरो

किताबें बातचीत से हटकर लिखित मज़मून होती हैं। दुनिया–जहान के ज्ञान, महापुरुषों की जीवनी, समाज के सक्षम और संवेदनशील लोगों के अनुभव दर्ज करने और उसे लाखों–करोड़ों पाठकों तक पहुँचाने में किताबों की भूमिका सभी स्वीकार करते हैं। ध्वनियों को लिपिबद्ध करना मानव द्वारा किए गए आविष्कारों में सबसे अद्‌भुत है। इसके बाद पुस्तकों का प्रकाशन मानव सभ्यता की दूसरी महान क्रांति है। लिखित शब्दों पर सवार होकर जीवन के अलग–अलग रंग, व्यक्ति और स्थान की सीमा लांघकर न जाने कहां से कहां पहुँच जाते हैं। किताबें हमारे अनुभव को स्थायित्व प्रदान करती हैं। किताब बनकर हमारे अनुभव और विचार हमारे न रहकर, लोक संस्कृति के अंग बन जाते हैं। सार्वजनिक हो जाते हैं और सर्वसुलभ बन जाते हैं। इसीलिए प्रकाशित किताबों का लोकार्पण किया जाता है। मुझे पुस्तक का विमोचन की तुलना में, पुस्तक का लोकार्पण बेहतर अभिव्यक्ति लगता है।

किताबों की एक बड़ी भूमिका हमारी सर्जनात्मकता को सुव्यवस्था देने में है। किताब के लिए की जानेवाली तैयारी हममें इतनी सावधानी ला देती है कि लिखना हम रचने के लिए करने लगते हैं। रचना तब तक संभव नहीं है जब तक हम उसमें रमे नहीं। मन की रवानी को एक तार में बाँधो नहीं, तो क्या किताब बन सकती है ? साधना की दीपशिखा का प्रकाश होती हैं किताबें? हर हाथ में जाना चाहती हैं, हर मन को छूना चाहती हैं। किताबें बातें होती हैं और कई मन की घाते होती हैं। कितनी–कितनी आहें और कितनी–कितनी खुशियां समेटे होती हैं किताबें अपने पन्नों में। किताबें न होतीं तो हम जीवन के कई रंगों से परिचित न होते। व्यक्ति के अर्जित अनुभव, महान लेखकों आदि के विचार मरणशील शरीर के साथ समाप्त हो जाते हैं। किताबें अपने रचयिता के यशःशरीर होती हैं। नश्वर देह की अनश्वर उपलब्धि।

किताबों के विषय न जाने कितने हैं और न जाने कितने हो सकते हैं। कुछ किताबों में होती हैं राजाओं की बातें और गरीबों की कराह। इसमें होती हैं दादी और नानी, हवा और पानी, चूहे और खरहे जो किताबों में आदमी की तरह समझदार और होशियार बर्ताव करते हैं। किताबें श्रम को सार्थक करती हैं। दुनिया के अनेक लेखक अपनी किताबों के कारण अमर हैं। किताबें लेखकों की प्रसव पीड़ा से जन्मी संतानें होती हैं जिन्हें देखकर लेखक चहक उठता है। किताबें किताबें बनाने की प्रेरणा बन जाती हैं। इस अर्थ में किताबें ज्योति माला की रचना हैं। ऐसी ज्योति जो हजारों–लाखों जिंदगियों को रौशनी से भर देती है।

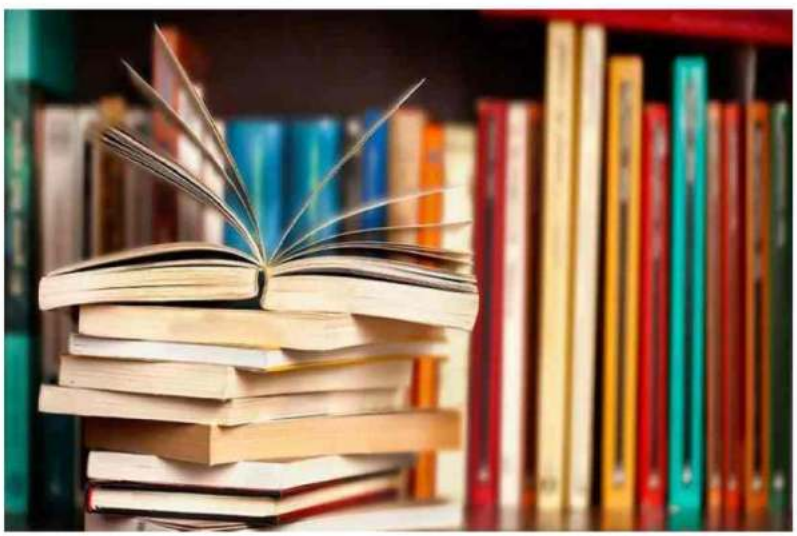

आज ज्ञान – विज्ञान, खोज – आविष्कार तथा शोध – अनुसंधान के जितने क्षेत्र हैं, उनके निर्माण में

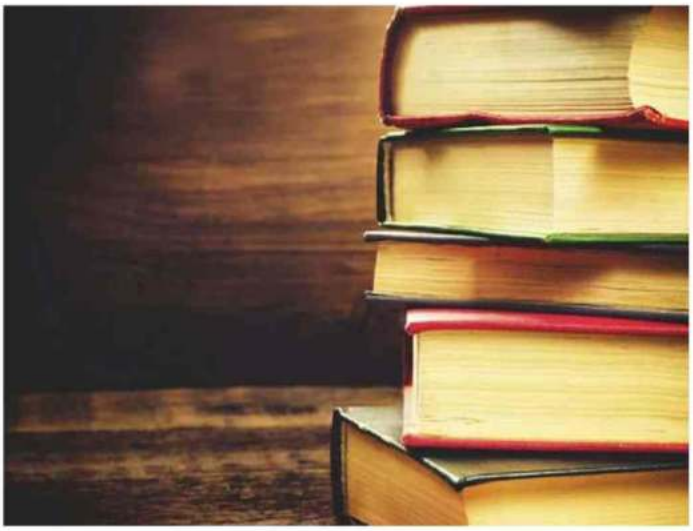

किताबों की भूमिका अनजानी नहीं है। विज्ञान की बात करें तो प्राकृतिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञान की सीमाएं इतनी व्यापक बन चुकी हैं कि विज्ञान–अंतरविज्ञान होते हुए इनकी दर्जनों शाखाएं विश्वविद्यालयों की पढ़ाई के विषय बने हुए हैं। इतिहास, भूगोल, राजनीतिशास्त्र, लोक प्रशासन, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, चिकित्सा, दर्शन और साहित्य की तमाम विधाओं का विकास पुस्तक प्रकाशन की देन है।

लेखन व्यवस्था और प्रकाशन व्यवसाय की समूची तरक्की के पीछे किताबों का महत्त्व और उसकी लोकप्रियता है। पुस्तकें लिखी जाती हैं और पुनः उन पुस्तकों की समीक्षा और आलोचना छापी जाती हैं। इसलिए किताबों में होती हैं दुनिया जहान की बातें। किताबों में बातों की बातें होती हैं। इनमें रातें होती हैं और नई सुबहें भी। किताबें हमें चेताती हैं। सावधान करती हैं। जिंदगी सँवारने की प्रेरणा लोगों को महान लेखकों की किताबें से मिलती है।

सिनेमा, अभिनय और नाटकों को प्रेरणा देने और उसे ऊर्जावान बनाने में किताबों की महिमा सभी जानते हैं। सिनेमा में सृजित दृश्यलोक किताबों का शब्दलोक पहले होती हैं। किताबों में उकेरा जानेवाला भावलोक यथार्थ और कल्पना के सम्मिलन का फल होता है। आदमी के स्वप्न और दुःस्वप्न दोनों किताबों के विषय होते हैं। इसमें समय कभी संभावना बनकर तो कभी आकलन बनकर प्रकाश प्राप्त करता है। मनुष्य की समूची आशाएं, आकाक्षाएं और संभावनाएं किताबों के विषय हैं। किताबें इसीलिए मनुष्य जितनी जीवंत और शिशुओं जैसी संभावनाशील होती हैं। किताबों की इस सृजनात्मकता को समझकर किताबें बनानेवाले बहुत कम हैं। किताब बनाना समाज को दिशा देना है। इसी कारण किताबों का लोकार्पण किया जाता है।

आज की विडंबना है कि व्यक्ति और समाज को दिशा देने वाली किताबें उपेक्षित हैं, कहीं पुस्तकालयों में धूल और दीमकों के हवाले हैं। उन्हें पलटने वाले हाथ उनकी तरफ नहीं बढ़ते। हजारों किताबें नई की नई बनती रहती हैं, उन्हें खोलकर पढ़नेवाला नहीं मिलता।

भारतीय परंपरा में स्वाध्याय करना मानव जीवन के महान उद्देश्यों में एक माना गया है। शाश्वत महत्त्व की और कालजयी कृतियों का अध्ययन करना मनुष्य के नाते हमारा पुनीत कर्तव्य है। रामायण, महाभारत, चार वेदों और 18 पुराणों की चर्चा तो हर व्यक्ति करता है। आज भले ही कुछ लोग उस वक्त को बीते जमाने की बात मानते हैं जिसमें किताबें पढ़ते–पढ़ते सो जाने और किताबें पढ़ते–पढ़ते रोने लगने जैसी बातों की गंभीरता को लोग भूलने लगे हैं। इस संदर्भ में सफदर हाशमी की "किताब" शीर्षक कविता पठनीय है। जिसमें वे कहते हैं–

"किताबें कहना चाहती हैं
किताबें रहना चाहती हैं
आपके साथ
किताबों में होती हैं
दुनिया–जहान की बातें
ईमान की बातें
और शान की बातें।"

भाषा और शब्द

वी सुरेश कुमार
बीईएल हैदराबाद

शब्दों को लेकर मेरा संघर्ष पुराना है,
पर देखता हूँ इनका हर कोई दीवाना है।
क्या कहूं इनके खिलाफ मेरी कई शिकायतें है,
सुनो मेरे भी दो शब्द और चार बातें है।

आज कुछ शब्द है तो कल नए बने,
कैसे मैं इन्हें याद करूं।
शब्द से शब्द जुड नए शब्द बने,
कैसे मैं इस पर गौर करूं।

आज एक मतलब तो कल कुछ और बने,
इनके बदलते रूप से मैं डरूं।
आज एक तो कल दूसरी भाषा से शब्द जुड़े,
कब तक इनके पीछे मैं पडूं।

कुछ शब्द अब लुप्त हो चुके हैं,
क्या अब इनका इतिहास मैं रचूं।
और तो और एक शब्द के कई अर्थ है,
उफ अब मैं भी ऊब चुका हूं।

शब्दों की देखो कैसी है यह उलझन,
इस उलझन में कुछ है खास।
ऐसे ही उलझ कर सुलझती है भाषा,
इसी में है इसका विकास।

लड़ते लड़ते ही सही हम दोस्त बन गए,
शब्दों के विकास को हम सराहने लगे।
शब्द सृजन में भाषा की उन्नति है,
अब जैसे भी चाहे नए शब्द जुड़े।

शब्दों के नवोम्नेष में भाषा की प्रगति है,
इसी कारण आज हिंदी भाषा में काफी उन्नति है।
जब हिंदी को मिले इतने वक्ता और श्रोता,
उसका विकास भला क्यूं न होता।

यात्रा संस्मरण – हलांगबे और चाईनीज़ दादा दादी

विनीत कुमार सोनवंशी
बीईएल हैदराबाद

यह जीवन हमेशा ही नए अनुभवों के साथ हमें अवगत करवाता है और कई बार न भूलने वाले अनुभवों से भी। ऐसा ही एक अनुभव मुझे अपने वियतनाम में कार्यकाल के दौरान हुआ। वर्ष 2018 के अंतिम दिन, हमने वियतनाम के वैश्विक धरोहर हलांगबे को देखने की सोची और उसके अनुसार एक ट्रेवल एजेंट के ज़रिए अपनी यात्रा की रुपरेखा तैयार की। हम वियतनाम की राजधानी हनोई मे रहते थे, वहाँ से हलांगबे लगभग 150 कि.मी. दूर था, हमने एक ही दिन में हलांगबे घूमने और वापसी की योजना बनाई। यात्रा वाले दिन, मौसम बुरी तरह खराब था, बारिश हो रही थी, तापमान 4 डिग्री के आसपास था। कठिनाई इस बात की थी कि मेरे दो छोटे बच्चे, बेटा 1 साल का और बेटी 5 साल की साथ में थी। खराब मौसम के बावजूद, हमने अपनी यात्रा स्थगित नहीं की और निकल गए हलांगबे के लिए।

तब वैश्विक महामारी नहीं थी, वियतनाम सैलानियों से भरा हुआ था। वियतनाम में यूरोप और दक्षिण पूर्व एशिया के बहुत सारे सैलानी विदेश भ्रमण के लिए आते हैं। हमारी हनोई से हलांगबे की बस, बहुभाषी बहुसंस्कृति विदेशी पर्यटकों से भरी हुई थी। टूर गाइड ने, टूटी–फूटी अंग्रेजी में, शुरुआत से अंत तक की योजना बता दी। सब लोगों ने तालियों से उसका अभिनंदन किया। मेरे लिए विदेशी पर्यटकों के साथ घूमना भी पहला अनुभव था, पाया कि मुस्कुराने की एक ही भाषा है जो सभी समझते हैं।

सुबह आठ बजे शुरु करने के लगभग तीन घंटों के बाद हम हलांगबे में थे। हलांगबे का मौसम हनोई से थोड़ा ठीक था, पर सर्दी बहुत थी। टूर गाइड और उसकी कंपनी ने सारे प्रबंध करके रखे थे। टूर गाइड ने हम सभी को निर्देश दिया और अपनी लाल झंडी लेकर मार्गदर्शन करने लगा। हमारे साथ के सारे पर्यटक उसके पीछे पीछे चलने लगे। थोड़ी देर बाद एक पर्यटक क्रूज़ में, हम सभी का स्वागत किया गया और दोपहर का भोजन भी दिया गया। यहाँ पर पहली बार हमने वियतनामी भोजन का स्वाद लिया था, जो बहुत स्वादिष्ट था। भोजन के बाद क्रुज ने अपनी यात्रा शुरु की। थोड़ी ही देर के बाद, हम हलांगबे के मनमोहक दृश्यों के बीच थे।

बहुत ही सुंदर प्राकृतिक दृश्यों के बीच क्रूज आगे बढ़ रहा था। सारे पर्यटक उत्साहित हो रहे थे। सभी अपने अपने कैमरे में उन मनमोहन दृश्यों को यादगार बनाकर रखने की कोशिश कर रहे थे। समुद्र के बीचोंबीच खड़े छोटे–बड़े पहाड़ ऐसे लग रहे थे जैसे इनकी भी अपनी दुनिया है, इनका भी अपना परिवार है। पर बहुत शांति थी, हवा में बहुत सर्दी थी और पर्यटकों का शोर था। धीरे धीरे क्रूज, एक द्वीप के पास बने पोर्ट पर पहुंच गया, यहाँ पर हमें क्रूज से उतरकर छोटी छोटी नावों या कश्तियों से समुद्र के बीच पहाड़ से घिरे लैगुन को एक गुफा के नीचे से जाकर देखना था, बहुत ही अविस्मरणीय प्राकृतिक सौंदर्य था।

यहाँ पर बहुत सारे क्रूज अपने अपने पर्यटकों के साथ आ और जा रहे थे। इसलिए हमारे गाइड ने सभी को निर्देश दिया कि अब क्या करना है और आगे निकल गया अपनी झंडी लेकर। यहाँ पर सभी को नावों में बैठने से पहले सुरक्षा जैकेट पहनना अनिवार्य था, तो हममें भी कतार मे लगकर अपनी सुरक्षा जैकेट पहनी और नावों के प्रस्थान स्थल पर प्रतीक्षा करने

लगे। तब ही अचानक चाईनीज़ दादा दादियों (बुजुर्ग व्यक्तियों) के एक समूह ने हमें घेर लिया और मेरे छोटे बेटे को गोद में लेकर और मेरी बिटिया को पास बुलाकर फोटो और सेल्फी लेने लगे, अंग्रेजी उन लोगों को नहीं आती थी, इसलिए सब इशारों में ही बातें हो रही थी। उन लोगों ने मेरे बच्चों को बहुत दुलार किया, चिप्स और चाकलेट दिए और जाते जाते सभी ने चाईनीज़ मुद्रा मेरे बच्चों को दी, जैसा कि हमारे भारत में बड़े लोग बच्चों को जाते समय कुछ पैसे देते हैं। यह एक यादगर क्षण था, मैंने वह चाईनीज़ मुद्रा अभी भी सुरक्षित रखी है। इस घटना ने मुझे, इंसान को देश, भाषा, रंग–रुप, खानपान आदि से अलग हटकर मानवीय मूल्यों और भावनाओं की दृष्टि से समझने की प्रेरणा दी।

इसके बाद हमने अपने पर्यटक समूह के साथ हलांगबे क्षेत्र में बनी पुरातन गुफाएँ और अति सुंदर द्वीप का भ्रमण किया और शाम होते ही गाइड के इशारे पर सभी अपने क्रूज में लौट आए। हमने भी भ्रमण के दौरान, प्रकृति के कुछ नजारों को कैमरे से यादों में कैद कर लिया। चूंकि उस दिन, नए वर्ष की पूर्व संध्या थी, क्रूज मे सभी के लिए नए वर्ष का समारोह आयोजित किया गया था। समारोह के बाद सभी ने एक दूसरे को नए वर्ष की बधाई दी और अलविदा कह दिया। कभी कभी छोटी सी घटना भी यादगार बन जाती है, इस बार यह यात्रा, मेरे परिवार के लिए सुंदर यादगार बन गई।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा दर्ज प्रमुख आश्वासन

- हिंदी जानने वाले सभी अधिकारियों / कर्मचारियों को अपना अधिक से अधिक काम हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाए।
- उपसचिव / समकक्ष एवं उससे उच्चतर स्तर के अधिकारियों द्वारा की–बोर्ड पर स्वयं टंकण कार्य किया जाए ।
- राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8(4) का अनुपालन सुनिश्चित करने हेतु मानिटरिंग व्यवस्था को सुदृढ़ बनाया जाए ।
- राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष व सदस्यों द्वारा हिंदी में किए जा रहे कार्य की प्रतिशतता बढ़ाई जाए।
- कार्यालय प्रमुख द्वारा अधिक से अधिक पत्र हिंदी में भेजे जाएँ ।
- मंत्रालय / विभाग / कार्यालय द्वारा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में आने वाली समस्याओं का समाधान किया जाए।
- मंत्रालय / विभाग / कार्यालय द्वारा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं प्रचार–प्रसार के लिए विशेष कार्य किए जाएं।
- पूरा काम हिंदी में करने के लिए विनिर्दिष्ट अनुभागों की संख्या बढाएं।

अंतरराष्ट्रीय पटल पर भारत

के. धनबाल
चेन्नै

भारत एक ऐसा देश है जो हमेशा से ही दूसरों के लिए एवं दूसरे देशों की मदद के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाता आया है। यहाँ न केवल अपने देश के जन कल्याण को प्राथमिक माना जाता है बल्कि दूसरों के कल्याण के बारे में सोचना भी यहाँ की प्राथमिकता है।

विश्व पटल पर भारत की स्थिति तीसरी दुनिया के देश की मानी जाती रही है लेकिन बीते छह वर्षों में व्यापक बदलाव आया है। आज भारत एक मुखर राष्ट्र के रूप में अपनी पहचान वैश्विक स्तर पर बना चुका है।

अंतरराष्ट्रीय राजनीति और संबंधों में किसी भी राष्ट्र की शक्ति और स्थान उसकी आर्थिक, सैन्य, राजनीतिक और सामाजिक स्थिति के अलावा एक और अत्यंत महत्वपूर्ण बिंदु से निर्धारित होते हैं, उसके शासक या नेता का स्वरूप और स्वभाव पर। किसी भी राष्ट्र के साथ संबंध किस दिशा में ले जाने हैं, अंतरराष्ट्रीय पटल पर अपने राष्ट्र की छवि निर्माण से लेकर कौन से मुद्दे रखने हैं, द्विपक्षीय तथा बहु–पक्षीय संबंधों को कैसी दिशा देनी है, कितनी गति देनी है, यह सब नेता या राजनयिक प्रतिनिधि से ही निश्चित होता है। इसीलिए कूटनीति का अध्ययन करते समय शासकों या नेताओं के स्वभाव आदि का भी अध्ययन किया जाता है और विभिन्न राष्ट्रों के अंतरराष्ट्रीय संबंधों के कालक्रम का अध्ययन उनके प्रतिनिधियों के आधार पर बंटा होता है, जैसे इंदिरा गांधी काल, अटल बिहारी वाजपेयी काल या नरेंद्र मोदी काल।

यदि वैश्विक पटल पर भारतीय प्रतिनिधियों के हिसाब से देखें तो वर्ष 2014 के बाद का समय भारत को शक्ति की नई ऊंचाइयों पर ले जाता दिखाई देता है और नरेंद्र मोदी इसका एक महत्वपूर्ण कारण कहे जा सकते हैं। वर्ष 2014 के बाद जिस तरह से भारत की छवि वैश्विक पटल पर एक तीसरी दुनिया के देश से बदलकर एक तेजी से विकसित होते देश के रूप में बनी है, यह मानना होगा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का इसमें बड़ा योगदान रहा है। पहली बार सरकार बनाते ही उन्होंने विश्व राजनीति में भारत की छवि मजबूत करने की गतिशील पहल की। वे फ्रांस गए और सामरिक मुद्दों पर भारत व फ्रांस के बीच नए मजबूत संबंधों की नींव रखी।

कोविड–19 से जूझते ब्राजील की जिस तरह से नरेंद्र मोदी ने सहायता की, वहां के राष्ट्रपति ने न सिर्फ पत्र लिखकर उन्हें धन्यवाद किया, बल्कि उन्होंने भारत की सहायता को हनुमान जी द्वारा संजीवनी लाकर लक्ष्मण के प्राण बचने के प्रसंग से जोड़ इसका उल्लेख अपने पत्र में किया। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के साथ भी अपने संबंधों में एक नया सकारात्मक अध्याय जोड़ा व अपनी सशक्त तथा मैत्रीपूर्व छवि से ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री मॉरिसन के साथ ऐसे सहज संबंध स्थापित किए कि उनका समोसा प्रेम ट्विटर के माध्यम से पूरे विश्व तक पहुंचा । हाल ही में एक वर्चुअल द्विपक्षीय वार्ता के बाद भारत और ऑस्ट्रेलिया ने सात महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं जिनमें से एक अत्यंत महत्वपूर्ण समझौता सैन्य लॉजिस्टिक्स सहायता हेतु किया गया है।

इसी प्रकार अमेरिका से भी हमारे प्रधानमंत्री के चलते सकारात्मक संबंधों का एक नया युग प्रारंभ होता दिखाई पड़ता है। अमेरिका और भारत के कई उद्देश्य एक से होते हुए भी वर्षों से दोनों के बीच संबंधों में वह सहजता कभी नहीं दिखाई पड़ी

जिसकी आवश्यकता थी और इसका प्रभाव भारत की बाह्य शक्ति पर पड़ा। अपने आप को गुटनिरपेक्ष कहते हुए भी हम कहीं न कहीं रूस के खेमे से जुड़े रहे और यहां तत्कालीन भारतीय नेताओं का प्रभाव स्पष्ट हो जाता है। किंतु हमारे देश के प्रधानमंत्री ने न सिर्फ अमेरिका के साथ संबंधों को मजबूत किया, बल्कि रूस के साथ चले आ रहे सशक्त संबंधों पर इसका कोई प्रभाव पड़ने नहीं दिया। अंतरराष्ट्रीय पटल पर यह अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है।

फरवरी में जब राष्ट्रपति ट्रंप भारत आए, पूरे विश्व ने देखा कि किस प्रकार दो मित्रों ने अपने–अपने देशों का प्रतिनिधित्व करते हुए अपनी मित्रता की डोर से संबंधों को एक नई दिशा, एक नई गति दी। सबसे महत्वपूर्ण यह देखना रहा कि मोदी और ट्रंप के आपसी संबंध दो मित्रों के हैं, इससे निश्चित ही भारत की छवि पर असर पड़ा। पहले विश्व के ताकतवर राष्ट्रों के सामने भारत की छवि हल्की रहा करती थी। यहां तो दो मित्र, अपने अपने देशों को बराबर के मंच पर लिए खड़े थे।

हमारे प्रधानमंत्री ने विभिन्न वैश्विक राजनयिकों के साथ मित्रता के नए सोपान गढ़े, पाकिस्तान और चीन जैसे देशों के समक्ष एक कठोर छवि प्रस्तुत करते हुए स्पष्ट संदेश दिए कि भारत की सुरक्षा पर किसी प्रकार का प्रहार सहन नहीं किया जाएगा। सर्जिकल स्ट्राइक के माध्यम से पाकिस्तान जैसे देशों को यह स्पष्ट संदेश दे दिया गया कि भारत न अब किसी के दबाव में आकर आतंकवाद बर्दाश्त करेगा, न पीछे हटेगा।

हमारे प्रधानमंत्री ने ऐसे ही निरंतर प्रयासों से भारत के विश्व के साथ संबंधों का नया अध्याय लिखा है जो निश्चित ही भारत की प्रगति में मील का पत्थर साबित होगा और इसकी छवि भी पूरे विश्व पटल पर निखरेगा, इसमें कोई संदेह नहीं।

मथुरा के कलेक्टर रहे श्री पाण्डेय पक्के रामायणी थे। एक बार उनकी अदालत में एक अपराधी लाया गया। जिरह के दौरान अपराधी ने यह सोचकर कि पाण्डेय महोदय प्रसन्न होकर उन्हें मुक्त कर देंगे, यह चौपाई कहा –

होइहैं सोइ जो राम रचि राखा।
को करि तर्क बढ़ावहि साखा।।

पाण्डेय साहब ने उनकी चौपाई का जवाब कुछ यूं दिया –

कर्म प्रधान विश्व करि राखा।
जो जस करसि सो तस फल चाखा।।

आइए हिंदी माध्यम से कन्नड़ सीखें, कन्नड़ में बात करना सीखें...

ಬನ್ನಿ ಹಿಂದಿಯ ಮೂಲಕ ಕನ್ನಡ ಕಲಿತು ಮಾತಾಡೋಣ

1.	मैं	ನಾನು	नानु
2.	मेरा, मेरी	ನನ್ನ / ನನ್ನದು	नन्न / नन्नदु
3.	हम	ನಾವು	नावु
4.	हमारा / हमारी	ನಮ್ಮದು	नम्मदु
5.	तू	ನೀನು	नीनु
6.	तुम / आप	ನೀವು	नीवु / तावु
7.	तेरा, तेरी	ನಿನ್ನದು	निन्नदु
8.	तुम्हारा / तुम्हारी / आपका	ನಿಮ್ಮದು	निम्मदु
9.	वह / वे	ಅವರು / ಅವಳು / ಅವನು	अवरु / अवळु / अवनु
10.	वहाँ	ಅಲ್ಲಿ	अल्लि
11.	यह	ಇದು / ಇವನು / ಇವರು	इदु / इवनु / इवरु
12.	यहाँ	ಇಲ್ಲಿ	इल्लि
13.	या	ಅಥವಾ	अथवा
14.	ये	ಇವು / ಇವರು	इवु / इवरु
15.	उसका / उसकी	ಅವರದು	अवरदु
16.	इनका / इनकी	ಇವರದು	इवरदु
17.	क्या?	ಏನು?	एनु?
18.	क्या हुआ?	ಏನಾಯಿತು?	एनायितु?
19.	क्यूं?	ಏಕೆ?	एके?
20.	क्यों हुआ?	ಏಕಾಯಿತು?	एकायितु?
21.	कब?	ಯಾವಾಗ?	यावाग?
22.	कब हुआ?	ಯಾವಾಗಆಯಿತು?	यावागआयितु?
23.	कहाँ?	ಎಲ್ಲಿ?	एल्लि?
24.	कहाँ हो?	ಎಲ್ಲಿದ್ದೀರ?	एल्लिद्दीरा?
25.	कौन? / किसका?	ಯಾರು? / ಯಾರದು?	यारु? / यारदु?
26.	कैसे?	ಹೇಗೆ?	हेगे?
27.	कैसे हो? कैसे हैं?	ಹೇಗಿದ್ದೀರಾ? ಹೇಗಿದೇ?	हेगिद्दीरा?हेगिदे?
28.	कितना / कितने?	ಎಷ್ಟು?	एष्टु?
29.	कितना हुआ?	ಎಷ್ಟಾಯ್ತು?	एष्टाय्तु?
30.	हाँ	ಹೌದು	हौदु
31.	आओ / आइए	ಬನ್ನಿ	बन्नि

32.	जाओ / जाइए	ಹೋಗಿ	होगि
33.	बैठिए	ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳಿ	कुळितुकोळ्ळि
34.	चाहिए / चाहिए?	ಬೇಕು / ಬೇಕಾ? / ಬೇಕೆ?	बेकु / बेका? / बेके?
35.	सबको	ಎಲ್ಲರಿಗೂ	एल्लरिगू
36.	सबको नमस्कार	ಎಲ್ಲರಿಗೂ ನಮಸ್ಕಾರ	एल्लरिगू नमस्कारा
37.	और	ಮತ್ತು	मत्तु
38.	मैं ठीक हूँ।	ನಾನು ಚೆನ್ನಾಗಿದ್ದೀನಿ.	नानु चेन्नागिद्दीनि.
39.	आप कैसे हैं?	ನೀವು ಹೇಗಿದ್ದೀರ?	नीवु हेगिद्दीरा?
40.	यह मेरा है।	ಇದು ನನ್ನದು.	इदु नन्नदु.
41.	वह तुम्हारा है।	ಅದು ನಿನ್ನದು.	अदु निन्नदु.
42.	तुम कहाँ हो?	ನೀವು ಎಲ್ಲಿದ್ದೀರ?	नीवु एल्लिद्दीरा?
43.	वहाँ जाओ।	ಅಲ್ಲಿ ಹೋಗು/ ಹೋಗಿ.	अल्लि होगु/होगि.
44.	यहाँ आओ।	ಇಲ್ಲಿ ಬಾ / ಬನ್ನಿ	इल्लि बा/बन्नि
45.	ये किसका है?	ಇದು ಯಾರದು?	इदु यारदु?
46.	आइए बैठिए।	ಬನ್ನಿ ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳಿ.	बन्नि कुळितुकोळ्ळि।
47.	आप बैठिए।	ನೀವು ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳಿ.	नीवु कुळितुकोळ्ळि।
48.	चाय लेंगे?	ಟೀ ತಗೊಳ್ತೀರಾ?	टी तगोळ्तीर?
49.	चाय पीएंगे?	ಟೀ ಕುಡಿತಾರಾ?	टी कुडितीरा?
50.	खाना खाएंगे?	ಊಟ ಮಾಡುತ್ತೀರಾ?	ऊट माडुत्तीर?
51.	खाना हो गया?	ಊಟ ಆಯ್ತಾ?	ऊट आय्ता?
52.	नाश्ता किया?	ತಿಂಡಿ ತಿಂದ್ರಾ?	तिंडि तिंद्रा?
53.	नाश्ते में क्या था?	ತಿಂಡಿಗೆ ಏನಿತ್ತು? / ಏನು ತಿಂಡಿ?	तिंटिगे एनित्तु?/एनु तिंडि?
54.	कौन? वो।	ಯಾರು? ಅವರಾ?/ಅವನಾ?	यारु? अवरा? अवना?.
55.	क्या बात कर रही हैं?	ಏನು ಮಾತನಾಡುತ್ತಾ ಇದ್ದೀರಾ?	एनु मातानाडुत्ता इद्दीरा?
56.	मंजू से बात हुई?	ಮಂಜು ಜೊತೆ ಮಾತಾಡಿದ್ರಾ?	मंजू जोते माताडिद्रा?
57.	आप और मैं / हम	ನೀವು ಮತ್ತು ನಾನು / ನಾವು	नीवु मत्तु नानु/नावु
58.	आप यहाँ कैसे?	ನೀವು ಇಲ್ಲಿ ಹೇಗೆ?	नीवु इल्लि हेगे?
59.	आप आएं गे?	ನೀವು ಬರುತ್ತೀರಾ?	नीवु बरुत्तीरा?
60.	दाम ज्यादा है?	ಬೆಲೆ ಜಾಸ್ತಿ ಆಯ್ತು?	बेले जास्ति आय्तु?
61.	मेजेस्टिक चलोगे?	ಮೆಜೆಸ್ಟಿಕ್ ಬರ್ತೀರಾ?	मेजेस्टिक बर्तीरा?
62.	उसे जाने दो।	ಅದು / ಅವರು ಹೋಗಲಿ ಬಿಡು.	अदु/अवरु होगलि बिडु.
63.	उसे आने दो।	ಅದು / ಅವರು ಬರಲಿ ಬಿಡು.	अदु/अवरु बरलि बिडु.
64.	कैसे हैं?	ಹೇಗಿದ್ದೀರಾ?	हेगिद्दीरा?
65.	तबीयत कैसी है?	ಆರೋಗ್ಯ ಹೇಗಿದೆ?	आरोग्य हेगिदे?
66.	तबीयत ठीक है?	ಆರೋಗ್ಯವಾಗಿದ್ದೀರಾ?	आरोग्यवागिद्दीरा?

जारी (अगले अंक में).... / ಮುಂದಿನ ಸಂಚಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಮುಂದುವರೆಯುತ್ತದೆ

राजभाषा गतिविधियां

कार्पोरेट कार्यालय

हिंदी माह 2021 के पहले कार्य दिवस सीएमडी महोदय द्वारा जारी संदेश का परिचालन किया गया और मानक द्विभाषी ईमेल का संकलन सभी कार्यपालकों और कर्मचारियों को मेल और आईपी द्वारा भेजा गया। पूरे माह के दौरान स्वागत कक्ष में हिंदी की सूक्तियाँ और राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी महत्वपूर्ण पहलुओं को प्रदर्शित किया गया। हिंदी माह का बैनर प्रदर्शित किया गया। विशेष पहल के रूप में इस बार माह के पहले दिन कार्पोरेट राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों के लिए राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें सभी की प्रतिभागिता रही।

प्रशासनिक शब्दावली, पीसी पर की–इन करना, गायन, हिंदी–कन्नड़ संगम, प्रश्नोत्तरी और अंताक्षरी सहित कुल सात प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं में कुल 76 लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया जिसमें से 36 लोगों ने पुरस्कार प्राप्त किए। जिन प्रतिभागियों को कोई पुरस्कार नहीं मिला, उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिभागिता पुरस्कार दिया गया।

इस वर्ष राजभाषा श्रेष्ठ कार्य–निष्पादन के लिए मानव संसाधन प्रभाग को चुना गया । हिंदी का प्रचार–प्रसार कार्यालय से बाहर भी हो, इसलिए एक प्रतियोगिता कर्मचारियों के परिजनों के लिए आयोजित की गई । दो प्रतियोगिताओं में कार्पोरेट कार्यालय के प्रशिक्षु और संविदा कार्मिकों को भी शामिल किया गया। इस बार का हिंदी दिवस हमारे लिए यादगार रहा । विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 14 सितंबर को आयोजित भव्य समारोह में सीएमडी ने माननीय गृह राज्य मंत्री से वर्ष 2019–20 और 2020–21 लगातार दो वर्षों के लिए उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त किया। इसी समारोह में राजभाषा अधिकारी श्री श्रीनिवास राव को वर्ष 2018–19 के लिए राजभाषा गौरव पुरस्कार प्रदान किया गया। राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने पर यह हम सभी के लिए गौरव का क्षण था। मीडिया में इसका व्यापक प्रचार–प्रसार किया गया। कार्पोरेट कार्यालय में इसी दिन हिंदी दिवस का आयोजन किया गया जिसमें गृह मंत्री का ऑडियो–वीडियो संदेश दिखाया गया और रक्षा मंत्री जी के संदेश पढ़े गए और वर्ष पर्यंत हिंदी में कार्य करने वाले अधिकारियों / कर्मचारियों को पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

23, सितंबर को "आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस" विषय पर हिंदी में तकनीकी व्याख्यान का आयोजन किया गया। 24 सितंबर को कार्पोरेट राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई ।

बेंगलूरु संकुल

14 सितंबर 2021 को बी ई एल के जन संपर्क कक्ष, प्रबंधन भवन में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती डॉ. नीता हिरेमठ, असोसिएट प्रोफेसर (हिंदी) महारानी क्लस्टर विश्वविद्यालय, बेंगलूरु थी । श्री विनय कुमार कत्याल, निदेशक, बेंगलूरु संकुल ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर श्री आर.पी. मोहन महाप्रबंधक (मानव संसाधन) एवं श्री भानुप्रकाश श्रीवास्तव महाप्रबंधक (ए.डी.एस.एन.) भी उपस्थित थे। दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का उद्घाटन हुआ। डॉ. गोपालकृष्ण एच.एल.,उप प्रबंधक (राजभाषा) ने मुख्य अतिथि श्रीमती डॉ.नीता हिरेमठ का परिचय दिया। मुख्य अतिथि महोदया को हरित पौधा, स्मृति चिह्न तथा शॉल से सम्मानित किया गया। श्री भानुप्रकाश श्रीवास्तव महाप्रबंधक (ए.डी.एस.एन.) ने बी ई एल बेंगलूरु संकुल की राजभाषा कार्यान्वयन की रिपोर्ट प्रस्तुत की। श्री राघवेंद्र सिंह, राजभाषा अधिकारी, मिलकॉम द्वारा रक्षा मंत्री का संदेश पढ़ा गया एवं गृह मंत्री अमित शाह जी का संदेश श्री महंतेश एच,राजभाषा अधिकारी, कंपोनेंट ने पढ़ा तथा सी.एम.डी. का संदेश श्री रविरंजन, राजभाषा अधिकारी, ई.एम. ने पढ़ा। हिंदी माह समारोह के उपलक्ष्य में रा.भा.का.स. के सदस्यों के लिए विशेष रूप से भारतेन्दु हरिश्चंद्र प्रतियोगिता आयोजित की गई।

24 सितंबर, 2021 को गुणज्योति सभागार, क्यू ए विभाग में दोपहर 2.30 बजे हिंदी माह समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। बी.ई.एल. कथन गीत के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया तत्पश्चात ईश वंदना श्रीमती कविता नौसैनिक प्रणाली (मा.सं.) द्वारा प्रस्तुत की गई। हिंदी माह प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण का वाचन श्री सेतुरत्नम एस, राजभाषा विभाग द्वारा किया गया एवं श्री आर.पी.मोहन, महाप्रबंधक (मा.सं.) और श्री भानु प्रकाश श्रीवास्तव, महाप्रबंधक (ए.डी.एस.एन.) एवं अध्यक्ष, हिंदी माह आयोजन समिति के कर कमलों द्वारा सभी पुरस्कार विजेताओं को स्मृति चिन्ह तथा प्रमाण पत्र वितरित किया गया। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री भानु प्रकाश श्रीवास्तव, महाप्रबंधक(ए.डी.एस.एन.) ने कहा कि हिंदी भाषा अनेकता में एकता की प्रतीक है। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि व्यक्ति अपने भावों की अभिव्यक्ति एवं सृजनात्मकता का विकास अपनी मातृभाषा में अच्छी तरह से कर सकता है। हम भाषाओं के ज्ञान से अपनी प्रतिभा को अधिक निखार सकते हैं। मातृभाषा के साथ– साथ राजभाषा का ज्ञान भी आवश्यक है।

चेन्नै

हिंदी माह सितंबर के प्रथम दिन हिंदी माह के बैनर फैक्ट्री परिसर के अंदर और प्रवेश द्वार पर प्रदर्शित किए गए । यूनिट में दिनांक 14 सितम्बर, 2021 को हिंदी दिवस समारोह तथा पुरस्कार वितरण का आयोजन किया गया । माननीय श्री जी. एल. पेड्रो, महाप्रबंधक (चेन्नै) ने हिंदी दिवस पर राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने पर बल दिया । इस अवसर पर यूनिट के सभी विभागीय प्रमुख एवं हिंदी माह समिति के सभी सदस्यगण एवं प्रथम और द्वितीय पुरस्कार विजेता उपस्थित थे । समारोह का आरंभ देश–भक्ति गीत और बीईएल गीत से किया गया।

स्वागत भाषण श्री श्यामलाल दास, अधिकारी (राजभाषा) न दिया । इसके बाद कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा माननीय रक्षा मंत्री, गृह मंत्री एवं बीईएल के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक का हिंदी दिवस पर जारी संदेश पढ़ा गया । महाप्रबंधक श्री. जी. एल. पेड्रो ने कहा कि इस वर्ष कोविड–19 महामारी के बावजूद ऑनलाइन हिंदी प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता अच्छी रही। अन्य कार्यक्रमों के साथ–साथ हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम, हिंदी कार्यशालाएँ, हिंदी प्रतियोगिताएं ऑनलाइन माध्यम से आयोजित किए गए। कार्यालय में हिंदी भाषा प्रशिक्षण प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ पाठ्यक्रम भी ऑनलाइन के माध्यम से संचालित किए गए । आगे उन्होंने कहा कि यूनिट के कर्मचारीगण जिस हर्ष एवं उत्साह से हिंदी प्रतियोगिता में भाग लेते हैं वैसे ही हिंदी में काम भी करें और कंपनी की हिंदी प्रोत्साहन योजनाओं में भाग लें एवं पुरस्कार प्राप्त करें। उन्होंने सभी विभागीय प्रमुख को भी धन्यवाद दिया और कहा कि हिंदी कार्यान्वयन में इस कोरोना महामारी के वक्त भी वे अपने विभाग के कार्मिकों को हिंदी सीखने एवं हिंदी कार्यक्रमों में भाग लेने में सहयोग कर रहें हैं । यूनिट प्रमुख ने सभी विभागीय प्रमुख / राभाकास सदस्यों को निर्देश दिए कि वे हिंदी में ज्यादा से ज्यादा काम करें ताकि अन्य कार्मिक भी उनसे प्रेरणा लें।

14 सितंबर 2021 को हिंदी दिवस कार्यक्रम पर यूनिट प्रमुख व महाप्रबंधक श्री. जी. एल. पेड्रो समेत सभी विभागीय प्रमुख, प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार विजेतागण एवं हिंदी माह समिति सदस्य।

श्री. श्यामलाल दास, अधिकारी (राजभाषा) हिंदी दिवस समारोह 2021 के दौरान स्वागत भाषण करते हुए

श्रीमती. सुप्रभा रम्या आर, (डी एंड ई) विभाग यूनिट प्रमुख से देवनागरी लिपि प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए

श्रीमती जे. मालिनी, (मा.सं.) विभाग यूनिट प्रमुख से कार्यालयीन शब्दावली प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए

मचिलिपट्टणम

हिंदी माह समारोह का उद्घाटन 01.09.2021 को किया गया जिसमें सभी विभाग प्रमुखों की उपस्थिति में हिंदी माह से संबंधित विशेष बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में सदस्य सचिव श्री. दिनेश उईके ने सभी का स्वागत किया और हिंदी माह में आयोजित कार्यक्रमों से अवगत कराया । इसके बाद महाप्रबंधक श्री. बी. प्रभाकर राव ने सभी को हिंदी माह की शुभकामनाएं दी और सभी से ज्यादा से ज्यादा काम हिंदी में करने और हिंदी माह में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में भाग लेने को कहा।

14 सितंबर 2021 को हिंदी दिवस मनाया गया। महाप्रबंधक महोदय श्री ने सी.एम.डी के संदेश को पढ़कर सुनाया और श्री.एल.रमेश बाबु, व.उ.म.प्र. (एम.एम) ने गृह मंत्री श्री अमित शाह जी का हिंदी दिवस संदेश सभी को पढ़ कर सुनाया।

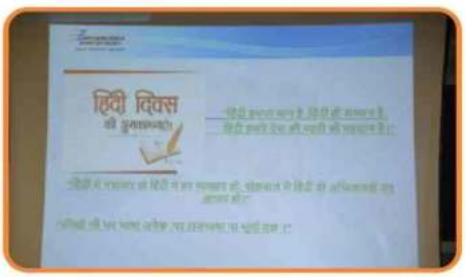

दि.18.09.2021 को उप प्रबंधक और उसके ऊपर की श्रेणी के अधिकारियों के लिए हिंदी प्रशिक्षण का कार्यक्रम वी. सी. द्वारा आयोजित किया गया। प्रशिक्षण के लिए डॉ. रविचंद्र राव, हिंदी प्राध्यापक, रा.भा.विभाग, गृह मंत्रालय को आमंत्रित किया गया।

हिंदी माह समापन कार्यक्रम दि.27.09.2021 को आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन रा.भा. अधिकारी दिनेश उईके ने किया। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि द्वारा प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया। धन्यवाद प्रस्ताव श्री अभिमन्यु कुमार, व.अ.(क्रय) ने किया।

हैदराबाद

हिंदी दिवस के अवसर पर दि.14.09.2021 को स्वास्थ्य के विषय पर एक विशेष हिंदी व्याख्यान का आयोजन किया गया। डॉ. सी पूजा, चिकित्सा अधिकारी, शहरी प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र, मल्लापुर द्वारा कर्मचारियों को कोविड–19 से संबंधित विषय पर संबोधन दिया गया। इस कार्यशाला में 41 कर्मचारियों ने भाग लिया। इस दौरान अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एवं माननीय रक्षा मंत्री जी के संदेश को पढ़ा गया और माननीय गृह मंत्री के संदेश को वीडियो द्वारा प्रस्तुत किया गया। एक नई पहल के रूप में रोज़मर्रा के अधिकारिक काम काज में हिंदी को प्रोत्साहित करने हेतु हिंदी माह समारोह के अंतर्गत, दिनांक 12.09.2021 को हिंदी फीचर फिल्म मिशन मंगल का प्रदर्शन किया गया चूँकि फीचर फिल्म भाषा ग्रहण के लिए एक प्रभावी माध्यम माना जाता है। इस कार्यक्रम में कुल 47 कर्मचारी उपस्थित हुए। पुरस्कार योजना एवं विशेष प्रोत्साहन योजना–कर्मचारियों द्वारा मूल रूप से हिंदी में काम के लिए निर्धारण समिति द्वारा संबंधित कार्यालय आदेश में दिए गए दिशा–निर्देशों के अनुसार मूल्यांकन के लिए 30 कर्मचारियों से आवेदन प्राप्त हुए है। इनमें से अर्हता प्राप्त 4 को प्रेमचंद पुरस्कार, 26 को जयशंकर पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त, कर्मचारियों के बच्चों को हिंदी विषय में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए देय पुरस्कार के अंतर्गत यूनिट में 01 कर्मचारी के बच्चे को मैथिलीशरण पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र हिंदी माह समापन समारोह के दौरान वितरित किए गए। हिंदी माह समापन कार्यक्रम – 30.09.2021 को मुख्य अतिथि लेफ़्टिनेंट कर्नल आकाश ढ़ोले, एसक्यूएओ, एसक्यूएई (एल), एवं महाप्रबंधक श्री के श्रीनिवास की उपस्थिति में हिंदी माह समापन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 100 कर्मचारियों ने भाग लिया। राजभाषा अधिकारी ने राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियों से कर्मचारियों को अवगत कराया और हिंदी माह कार्यक्रमों का ब्योरा दिया। कर्मचारियों को संबोधित करते हुए महाप्रबंधक ने राजभाषा कार्यान्वयन के लिए किए गए प्रयासों की सराहना की और पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी और कहा कि इसी उत्साह के साथ वे साल–भर हिंदी में कामकाज करना जारी रखें। मुख्य अतिथि एवं महाप्रबंधक द्वारा हिंदी माह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेता एवं पुरस्कार/प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत चयन किए गए कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। अ.म.प्र.(व.से.प्र. एवं थ.आ.प्र.) द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ यह कार्यक्रम संपन्न हुआ।

हिंदी माह 2021 के दौरान आयोजित श्रुत लेखन प्रतियोगिता में भाग लेते हुए कर्मचारी गण

श्री श्रीनिवास के (जी.एम.) मुख्य अतिथि को स्मृति–चिह्न प्रदान करते हुए

श्री श्रीनिवास के (जी.एम.) मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए

हिंदी माह प्रतियोगिता और प्रोत्साहन योजना के पुरस्कार विजेता मुख्य अतिथि कमांडर श्रीनाथ यू नायर और जी.एम. के साथ

नवी मुंबई

हिंदी दिवस के अवसर पर दीप प्रज्वलन करते हुए श्री प्रवीण कुमार, अपर महाप्रबंधक (विपणन)

हिंदी माह के पहले कार्य दिवस यूनिट के प्रमुख स्थलों पर हिंदी माह समारोह एवं लेखकों के हिंदी प्रचार संबंधी सूक्तियों के बैनर प्रदर्शित किए गए। इससे पूर्व हिंदी माह समारोह में अधिक से अधिक कर्मचारियों को राजभाषा गतिविधियों से जोड़ने तथा माह के सहज आयोजन हेतु हिंदी माह आयोजन समिति गठित की गई थी। माह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। दि.14.09.2020 को यूनिट के प्रबंधन प्रखंड के सभागार में "हिंदी दिवस" समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अपर महाप्रबंधक (प्रचालन) द्वारा दीप प्रदीपन से किया गया। तत्पश्चात अध्यक्ष, हिंदी माह आयोजन समिति श्री ए. बी. ठाकुर द्वारा सभी को राजभाषा प्रतिज्ञा दिलाई गई। "हिंदी दिवस" पर माननीय गृहमंत्री जी का संदेश, श्री वी.एच. मुजुमदार, अपर महाप्रबंधक (प्रचालन), माननीय रक्षामंत्री जी का संदेश, श्री प्रवीण कुमार, अपर महाप्रबंधक (विपणन / वि. व अभियांत्रिकी), तथा अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक का संदेश, श्री एम. एम. चौधरी, वरि. उप महाप्रबंधक द्वारा पढ़ा गया। महाप्रबंधक महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि इसमें दो राय नहीं है कि देश में अन्य भाषा भाषियों के बीच संपर्क के लिए हिंदी ही एक मात्र संपर्क भाषा है। देश के बड़े भू भाग में हिंदी बोली जाती है। हिंदी में पत्राचार और एफ.एल.एम. फाइलें हिंदी में लिखी जा रही हैं। वरिष्ठ अधिकारी टिप्पणियां हिंदी में लिख रहे हैं। पत्राचार में हिंदी ई–मेल को भी शामिल किया जाए, ताकि हिंदी पत्राचार का प्रतिशत बढ़ाया जा सके। कार्यक्रम का संचालन अधिकारी (मानव संसाधन) श्री अमित कटियार ने किया। 30.09.2021 को सामाजिक दूरी का पालन करते हुए प्रबंधन सभागार में पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। महाप्रबंधक महोदय द्वारा प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। उन्होंने कहा कि हमें केवल हिंदी माह में ही नहीं बल्कि साल भर हिंदी में कार्य करना चाहिए। हिंदी में कार्य कर हमें गौरवान्वित महसूस करना चाहिए। पुरस्कार विजेताओं से अब अधिक उम्मीद की जाती है कि वे अपने कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर गृह मंत्रीजी की संदेश पढ़ते हुए श्री वी एच एम मुजुमदार, एजीएम (प्रचालन)

हिंदी माह समापन समारोह में पुरस्कार वितरण करते हुए श्री विश्वेश्वर पुटचा, जीएम(नमु)

पुणे

दिनांक 01.09.2021 को यूनिट के प्रमुख स्थलों पर हिंदी माह समारोह एवं लेखकों के हिंदी प्रचार संबंधी सूक्तियों के बैनर प्रदर्शित किए गए। इससे पूर्व हिंदी माह समारोह में अधिक से अधिक कर्मचारियों को राजभाषा गतिविधियों से जोड़ने तथा माह के सहज आयोजन हेतु हिंदी माह आयोजन समिति गठित की गई थी। माह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

दिनांक 14.09.2021 को यूनिट के एच.आर.डी.ऑडोटोरियम में "हिंदी दिवस" समारोह का आयोजन किया गया। इसमें राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारंभ महाप्रबंधक महोदय द्वारा दीप प्रदीपन कर किया गया। तत्पश्चात अपर महाप्रबंधक (युद्ध प्रणाली), श्री के. एच. दमानिया द्वारा सभी को राजभाषा प्रतिज्ञा दिलाई गई। "हिंदी दिवस" पर माननीय गृहमंत्री जी का संदेश, दृश्य श्रव्य (ऑडिओ/वीडिओ) माध्यम द्वारा प्रसारित किया गया। माननीय रक्षामंत्री जी का संदेश, उप महाप्रबंधक (वित्त व लेखा), श्री पुरुषोत्तम कुमार द्वारा पढ़ा गया।

महाप्रबंधक महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि देश में अन्य भाषा भाषियों के बीच संपर्क के लिए हिंदी ही एक मात्र संपर्क भाषा है। देश में अधिक से अधिक लोग हिंदी बोल और समझ लेते हैं। उन्होंने बताया कि 30 जुलाई 2021 को सचिव राजभाषा, भारत सरकार डॉ. सुमित जैरथ जी ने बीईएल राजभाषा ई–सम्मेलन में कॉर्पोरेट कार्यालय से सभी उच्चाधिकारियों को संबोधित किया था। उन्होंने माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा स्मृति विज्ञान से प्रभावित होकर राजभाषा हिंदी के 12प्र के बारे में बताया था। हमें अपनी यूनिट में इन 12प्र को अपना कर राजभाषा हिंदी को आगे बढ़ाना है। उन्होंने कॉर्पोरेट कार्यालय को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार तथा श्री श्रीनिवास राव, अधिकारी (रा.भा.), सी.ओ. को राजभाषा गौरव पुरस्कार प्राप्त करने हेतु बधाई दी। उन्होंने प्रत्येक विभाग को द्विभाषी पत्राचार बढ़ाने को कहा ताकि हम आने वाले निरीक्षणों के लिए तैयार रहें। उन्होंने ईमेल में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने को कहा। हिंदी में मूल कार्य करने की प्रोत्साहन योजना वर्ष–2020–21 में 17 कर्मचारियों ने भाग लिया और सभी को पुरस्कृत किया गया। दिनांक 23.09.2021 को उप महाप्रबंधक तथा उनसे ऊपर के उच्चाधिकारियों के लिए राजभाषा ई–कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें 39 अधिकारियों ने भाग लिया।

दिनांक 30.09.2021 को सामाजिक दूरी का पालन करते हुए पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। महाप्रबंधक, अपर महाप्रबंधक (उत्पादन) तथा अपर महाप्रबंधक (ऊर्जा संचयन उत्पाद) द्वारा विभिन्न प्रतिभागियों के विजेताओं को प्रमाण–पत्र प्रदान किया गया। महाप्रबंधक ने कहा कि जिन्होंने अभी तक हिंदी कार्य आरंभ नहीं किया कल से आरंभ करें। पुरस्कार विजेताओं से उम्मीद की जाती है कि वे अपने कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करेंगे। कार्यक्रम का संचालन राजभाषा अधिकारी श्री बी.एम.एस. रावत द्वारा किया गया।

हिंदी दिवस के अवसर पर दीप प्रदीपन करते हुए श्री राजेंद्र, जीएम (पुणे)

हिंदी दिवस के अवसर पर प्रतिज्ञा दिलाते हुए श्री दमानिया, एजीएम (युद्ध प्रणाली)

हिंदी माह समापन समारोह में विजेताओं को पुरस्कार देते हुए श्री देशपांडे, अध्यक्ष (हिं.मा.आ.स.)

गाज़ियाबाद

भारत सरकार व कॉर्पोरेट ऑफिस के दिशा निर्देशों के अनुसार गाज़ियाबाद यूनिट में इस वर्ष हिंदी माह व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महान व्यक्तियों की प्रेरक सूक्तियाँ वाले बैनर, पोस्टर/हार्ड बोर्ड यूनिट/एसबीयू में प्रमुख स्थलों पर लगाए गए। कार्यक्रम का आरंभ बीईएल गीत से किया गया, जिसके उपरांत यूनिट प्रमुख व सभी एसबीयू प्रमुखों द्वारा दीप प्रज्वलित किया। इसके बाद राजभाषा/मानव संसाधन विभाग के कार्मिकों द्वारा अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक, माननीय रक्षा मंत्री और माननीय गृह मंत्री के हिंदी दिवस पर जारी संदेश पढ़े गए। कार्यक्रम के अंत में यूनिट प्रमुख श्री जयदीप मजूमदार ने राजभाषा व मानव संसाधन विभाग द्वारा हिंदी के उत्थान हेतु किया जा रहे प्रयासों की सराहना की तथा उपस्थित सभी अधिकारियों व प्रतिनिधियों को अपना कार्यालयीन कार्य 100: हिंदी में करने हेतु अनुरोध किया।

माह के दौरान कुल नौ ऑनलाइन प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। 30 सितंबर, 2021 को पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें राभाकास अध्यक्ष व यूनिट प्रमुख श्री जयदीप मजूमदार द्वारा मैथिलीशरण पुरस्कार विजेता मेधावी बच्चों सहित सभी प्रोत्साहन पुरस्कार व हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। कॉर्पोरेट प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत कुल 32 कार्यपालकों व 22 गैर–कार्यपालकों को पुरस्कृत किया गया। इनके अंतर्गत वर्ष 2021–21 हेतु हिंदी में प्रेरक का कार्य करने पर 3 वरिष्ठ अधिकारियों को कबीर पुरस्कार, एक को तुलसीदास पुरस्कार, 6 कार्यपालकों को प्रेमचंद व 22 कार्यपालकों को जयशंकर प्रसाद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। गैर–कार्यपालकों में 6 को प्रेमचंद व 16 गैर–कार्यपालकों को जयशंकर प्रसाद पुरस्कार प्रदान किए गए। कर्मचारियों के बच्चों के लिए दिए जाने वाले मैथिलीशरण पुरस्कार योजना के अंतर्गत 3 बच्चों को यह पुरस्कार प्रदान किया गया तथा मूल्यांकन समिति के निर्णय अनुसार हिंदी में 85: से अधिक अंक लाने वाले 3 अन्य बच्चों को यूनिट की ओर से पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह में वर्ष 2021–21 के दौरान हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने के लिए मा. सं. व प्रशासन प्रभाग को महाप्रबंधक राजभाषा शील्ड प्रदान की गई ।

पुरस्कार वितरण समारोह के अंत में मुख्य अतिथि कार्यपालक निदेशक (एनसीएस) एवं यूनिट प्रमुख श्री जयदीप मजूमदार ने सभी एसबीयू से प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों व पुरस्कार विजेताओं को संबोधित किया। उन्होंने सभी कर्मचारियों व कार्मिकों को राजभाषा संबंधित संवैधानिक प्रावधानों व राजभाषा नीति–नियमों का पालन करते हुए हिंदी में कार्य करने हेतु अनुरोध किया।

हिंदी दिवस उद्घाटन समारोह

निबंध प्रतियोगिताओं में भाग लेते हुए कर्मचारीगण

मैथिलीशरण पुरस्कार विजयी मेधावी छात्र

मा.सं. व प्रशा. प्रभाग को राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए यूनिट प्रमुख

पंचकूला

प्रत्येक वर्ष की भांति कार्पोरेट कार्यालय के दिशानिर्देशों के अनुसार पंचकूला यूनिट में हिंदी माह का आयोजन हुआ। पूरे माह के दौरान डिजिटल स्क्रीन पर यूनिट में आयोजित होने वाली हिंदी माह प्रतियोगिताओं की सूचना व राजभाषा हिंदी के विषय में महान हस्तियों के विचारों की पीपीटी द्वारा प्रदर्शित की गई। मानव संसाधन सभागार में 100 से अधिक स्थाई फ्रेम जिसमें महान हस्तियों की तस्वीरें व उनके कथन हैं, लगाए गए। इसके अलावा, कुल 7 प्रतियोगिताओं का सामाजिक दूरी का पालन करते हुए आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा राजभाषा के कार्यान्वयन में सहयोग हेतु संकल्प व्यक्त किया। हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से प्रतिभागियों व अतिथियों को हिंदी पुस्तकों का वितरण किया गया। सभी प्रतियोगिताओं का संचालन व मूल्यांकन बाह्य संकाय द्वारा किया गया। दिनांक 14.09.2021 को हिंदी दिवस मनाया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में नराकास की सचिव श्रीमती संगीता वशिष्ठ शामिल हुईं। श्रीमती वशिष्ठ ने बीईएल में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति को उत्कृष्ट बनाने के प्रयासों की तारीफ की। उन्होंने कार्पोरेट कार्यालय द्वारा कीर्ति पुरस्कार व कार्पोरेट कार्यालय के राजभाषा अधिकारी श्री. श्रीनिवास राव द्वारा राजभाषा गौरव पुरस्कार जीतने पर बधाई दी व प्रशंसा की। इस समारोह में यूनिट के कार्यकारी महाप्रबंधक महोदय श्री सलिल डे उपस्थित रहे। श्री सलिल डे ने भारत सरकार की राजभाषा नीति व नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं की महत्ता पर अपने विचार रखते हुए कहा कि मातृभाषा में चिंतन करना सदैव आसान होता है।

दिनांक 30.09.2021 को हिंदी दिवस समापन समारोह का आयोजन हुआ जिसमें इस समारोह में हिंदी प्रोत्साहन पुरस्कार विजेताओं व हिंदी माह में विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले पुरस्कार विजेताओं को सम्मानित किया गया। समारोह में गुणवत्ता चक्र की प्रस्तुति हिंदी में देने वाली टीमों को भी सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर यूनिट की महाप्रबंधक महोदया श्रीमती प्रभा गोयल भी उपस्थित रहीं। मुख्य अतिथि के तौर पर डॉ अमरिन्दर कौर उपस्थित हुई। श्रीमती कौर 1983 बैच की भारतीय वन सेवा की अधिकारी हैं और देश की पहला ऐसी महिला हैं जो किसी राज्य के वन विभाग की प्रमुख बनीं। उन्होंने हिंदी भाषा को बच्चों और अपने आपपास के लोगों के बीच प्रोत्साहित करने पर विशेष ज़ोर देते हुए कहा कि मातृभाषा किसी भी संस्कृति के विकास में अहम भूमिका का निर्वहन करती है। हमें अपनी भाषा को और समृद्ध बनाने की आवश्यकता है। वहीं श्रीमती गोयल ने अपने संबोधन में कहा कि हमें राजभाषा हिंदी में निष्ठापूर्वक कार्य करना चाहिए तथा भारत सरकार के दिशानिर्देशों के तहत काम करते हुए अपने कार्यालय को राजभाषा के क्षेत्र में शीर्ष बनाने का काम करना होगा। उन्होंने कहा कि राजभाषा स्वयं में बेहद महत्वपूर्ण है तथा इसके उपयोग को और बेहतर बनाने की ज़रूरत है। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में पंजाब विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्रमुख डॉक्टर गुरमीत सिंह भी उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि आज हिंदी भाषा बाज़ार की शक्तिशाली भाषा है। इसमें बड़ी संख्या में रोज़गार उपलब्ध हैं। हमें पूरे मनोयोग से हिंदी का इस्तेमाल करना चाहिए।

इस अवसर पर यूनिट राजभाषा प्रभारी सुश्री रेखा अग्रवाल ने यूनिट में राजभाषा कार्यान्वयन हेतु चल रही विभिन्न कार्यविधियों पर प्रकाश डाला। वहीं यूनिट के वरिष्ठ सहायक अधिकारी (राजभाषा) भूपेन्द्र प्रताप सिंह ने हिंदी प्रोत्साहन योजनाओं व कार्यक्रमों में बढ़चढ़ कर भाग लेने हेतु प्रतिभागियों का शुक्रिया अदा किया व आगे भी इसी तरह के सहयोग की अपेक्षा प्रकट की।

केंद्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला–गाज़ियाबाद

भारत सरकार व कॉर्पोरेट ऑफिस के दिशा निर्देशों के अनुसार सीआरएल में इस वर्ष हिंदी माह व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महान व्यक्तियों की प्रेरक सूक्तियाँ वाले बैनर, पोस्टर/हार्ड बोर्डसीआरएल में प्रमुख स्थलों पर लगाए गए। सीआरएल में राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा सामाजिक दूरी व कोविड–19 संबंधी आवश्यक सावधानियाँ अपनाते हुए हिंदी दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में सुश्री नवजोत पीटर, वरिष्ठ सहायक राजभाषा अधिकारी ने मुख्य वैज्ञानिक श्री अनूप कुमार राय तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारीगणों का स्वागत किया।

कार्यक्रम का आरंभ बीईएल गीत से किया गया, जिसके उपरांत मुख्य वैज्ञानिक श्री अनूप कुमार राय तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारीगणों द्वारा दीप प्रज्वलित किया। इसके बाद कार्मिकों द्वारा अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक सुश्री आनंदी रामलिंगम,माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह और माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के हिंदी दिवस पर जारी संदेश पढ़े गए। इसके उपरांत उप महाप्रबंधक (मा.सं. व प्रशा) श्रीमती वनिता भंडारी ने गत वर्ष सीआरएल में किए गए राजभाषा कार्यान्वयन एवं राजभाषा द्वारा अर्जित उपलब्धियों एवं प्रगति संबंधी विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत किया । कार्यक्रम के अंत में मुख्य वैज्ञानिक श्री अनूप कुमार राय ने राजभाषा व मानव संसाधन विभाग द्वारा हिंदी के उत्थान हेतु किया जा रहे प्रयासों की सराहना की तथा उपस्थित सभी अधिकारियों व प्रतिनिधियों को अपना कार्यालयीन कार्य 100: हिंदी में करने हेतु अनुरोध किया।

कॉर्पोरेट के दिशा निर्देशों के अनुसार हिंदी माह 2021 के दौरान वरिष्ठ अधिकारियों व हिंदीतर भाषा–भाषियों समेत सभी कर्मचारियों के लिए कुल 7 प्रतियोगिताएं जैसे संवाद, काव्यपाठ, अनुवाद, निबंध लेखन, अंत्याक्षरी, लेख/कहानी आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। अंत्याक्षरी तथा काव्यपाठ प्रतियोगिता में कर्मचारियों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

3 अक्तूबर, 2021 को पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें राभाकास अध्यक्ष मुख्य वैज्ञानिक श्री अनूप कुमार राय द्वारा मैथिलीशरण पुरस्कार विजयी मेधावी छात्र सहित सभी प्रोत्साहन पुरस्कार व हिंदी प्रतियोगिता पुरस्कारों के प्रमाण–पत्र आबंटित किए गए। कॉर्पोरेट प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत कुल 10 कार्यपालकों को पुरस्कृत किया गया। इनके अंतर्गत वर्ष 2021–21 हेतु हिंदी में प्रेरक का कार्य करने पर 1 वरिष्ठ अधिकारी को कबीर पुरस्कार, एक को तुलसीदास पुरस्कार, 3 कार्यपालकों को प्रेमचंद व 5 कार्यपालकों को जयशंकर प्रसाद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कर्मचारियों के बच्चों के लिए दिए जाने वाले मैथिलीशरण पुरस्कार योजना के अंतर्गत 1 बच्चे को पुरस्कार प्रदान किया गया।

हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर

पुरस्कार वितरण समारोह के अंत में मुख्य वैज्ञानिक श्री अनूप कुमार राय ने सभी कर्मचारियों व कार्मिकों को राजभाषा संबंधित संवैधानिक प्रावधानों व राजभाषा नीति–नियमों का पालन करते हुए हिंदी में कार्य करने हेतु अनुरोध किया।

कोटद्वार

कोटद्वार यूनिट में 01 सितंबर से 30 सितंबर, 2021 तक हिंदी माह मनाया गया। हिंदी माह का प्रारम्भ यूनिट के प्रमुख स्थलों पर हिंदी प्रचार–प्रसार संबंधी बैनर लगाने से हुआ। उसके उपरांत माह भर में कर्मचारियों हेतु कुल 10 प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं (प्रचार वाक्य, स्वरचित कविता, हिंदी प्रचार–प्रसार से संबंधित पोस्टर, चित्र देखकर अभिव्यक्ति, राजभाषा जागरूकता, निबंध, हिंदी पत्र लेखन, अनुवाद कौशल, वर्ग पहेली, राजभाषा ज्ञान) जिसमें 295 कार्मिकों व प्रशिक्षुओं ने भाग लिया। सरकार के दिशा–निर्देशों के अनुसार कोविड–19 के प्रति एहतियात रखते हुए इस वर्ष हिंदी माह के दौरान सभी प्रतियोगिताएं ऑन–लाइन व आई पी मेसेज के माध्यम से आयोजित की गई।

दिनांक 14.09.2020 को यूनिट में 'हिंदी दिवस' के अवसर पर महाप्रबंधक सभा कक्ष में प्रभागाध्यक्षों की उपस्थिति में दो गज की दूरी रखते हुए अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक, माननीय गृहमंत्री एवं रक्षा मंत्री के हिंदी माह / दिवस पर प्रेषित संदेशों का वाचन किया गया। साथ ही इस अवसर पर उच्चाधिकारियों हेतु राजभाषा जागरूकता प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

'हिंदी माह' के समापन के अवसर पर सभी प्रतियोगिताओं व हिंदी प्रोत्साहन योजना के विजेताओं की घोषणा हुई। महाप्रबंधक (कोट) श्री ए रुधिरामूर्ति, द्वारा यूनिट में हिंदी में कार्य करने की संस्कृति पर हर्ष व्यक्त किया गया। हिंदी माह आयोजन समिति के अध्यक्ष, श्री के के अग्रवाल द्वारा हिंदी माह में आयोजित प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक प्रतिभागिता के लिए सभी का आभार व्यक्त किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

कार्पोरेट कार्यालय से प्राप्त दिशा निर्देशों के अनुसार दिनांक 14.09.2021 को हिंदी दिवस के अवसर पर रा भा का स अध्यक्ष, सुश्री अनीता भद्रा, उप महाप्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने हिंदी दिवस पर अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश पढ़ा एवं सभी कर्मचारी को अपना अधिक से अधिक काम हिंदी में करने हेतु प्रेरित किया। पूरे माह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। हिंदी दिवस के अवसर पर डॉ गुलाबचंद यादव, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), आई.डी.बी.आई. बैंक लिमिटेड, प्रधान कार्यालय, मुंबई द्वारा "कार्यालयीन कामकाज में हिंदी की उपयुक्तता" पर व्याखान दिया गया।

सीआरएल एवं पीडीआईसी, बेंगलूरु

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा हिंदी दिवस के आयोजन संबंधी दिशा–निर्देशों के अनुपालन के साथ सामाजिक दूरी का पालन करते हुए सीआएल एवं पीडीआईसी में हिंदी माह समारोह का आयोजन किया गया। सितंबर माह, 2021 के पहले कार्य दिवस से ही हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु एवं कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रूचि बढ़ाने के लिए गृह मंत्रालय द्वारा जारी हिंदी सूक्तियों की स्टैंडी और हिंदी माह के बैनर लगाए गए। सीएमडी महोदया द्वारा जारी संदेश का परिचालन किया गया और ईमेल द्वारा सभी कार्यपालकों को हिंदी कार्यान्वयन संबंधी दिशा–निर्देश भेजे गए। पूरे माह के दौरान राजभाषा नियम प्रदर्शित किए गए।

हिंदी माह के दौरान अधिकारियों के लिए चित्रकथा, नारा लेखन और सामान्य ज्ञान जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में कुल 321 कार्यपालकों ने हिस्सा लिया। 14 सितंबर 2021 को हिंदी दिवस समारोह के दिन जन संबोधन प्रणाली (पब्लिक एड्रेस सिस्टम) के माध्यम से सभी अधिकारियों ने राजभाषा प्रतिज्ञा ली। हिंदी दिवस कार्यक्रम के अवसर पर सामाजिक दूरी का पालन करते हुए श्री ए. के. सिंह, सीटीओ (ईओ एंड एल) ने गृह मंत्री, श्रीमती पद्मिनी बालचन्द्र, सीटीओ (रेडार) ने रक्षा मंत्री और प्रभारी महाप्रबंधक श्रीमती कल्याणी मूर्ति ने सीएमडी के संदेश पढ़े। अध्यक्ष राभाकास एवं मुख्य वैज्ञानिक (सीआरएल) श्री नंद कुमार वी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में राजभाषा कार्यान्वायन को मजबूत करने पर बल दिया और हिंदी के साथ अन्य सभी भारतीय भाषाओं से भी प्रेम रखने और उसे सीखने और जानने का आग्रह किया। श्रीमती संगीता श्रीवास्तव, वरिष्ठ उ.म.प्र. एवं अध्यक्ष, हिंदी माह समिति ने स्वागत संबोधन दिया। श्रीमती रजनी साव, अधिकारी (रा.भा) ने हिंदी माह के दौरान आयोजित होने वाली गतिविधियों की जानकारी दी।

29 सितंबर को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई और सामाजिक दूरी का पालन करते हुए पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में अध्यक्ष राभाकास एवं मुख्य वैज्ञानिक (सीआरएल) श्री नंद कुमार वी एवं महाप्रबंधक (पीडीआईसी), श्री सुरेश कुमार के वी उपस्थित थे। श्रीमती रजनी साव ने पूरे माह की गतिविधियों पर एक प्रस्तुति दी और कार्यक्रम का संचालन श्री राहुल सिंह, सदस्य अनुसंधान स्टाफ, सीआरएल और श्री अजय, वरिष्ठ अभियंता, पीडीआईसी ने की। कार्यक्रम के अंत में श्रीमती संगीता श्रीवास्तव, वरिष्ठ उप महाप्रबंधक ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। बैठक के दौरान नवंबर माह में अधिवर्षिता पर सेवानिवृत्त होने वाले सीआरएल के कार्यालय प्रमुख एवं राभाकास के अध्यक्ष श्री नंद कुमार वी को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया ।

क्षेत्रीय कार्यालय – दिल्ली

हिंदी माह पर अध्यक्ष महोदय का संबोधन

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा हिंदी दिवस के आयोजन संबंधी दिशा–निर्देशों के अनुपालन के साथ सामाजिक दूरी का पालन करते हुए क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली में हिंदी माह का आयोजन किया गया। बीईएल के दिल्ली स्थित सभी कार्यालयों में सितंबर माह के दौरान 'हिंदी माह' मनाया गया । इस अवसर पर महान व्यक्तियों की प्रेरक सूक्तियाँ वाले बैनर, पोस्टर/हार्ड बोर्ड कार्यालय के प्रमुख जगहों पर प्रदर्शित किए गए। कार्यालय में 14 सितंबर को "हिंदी दिवस" के रूप में उत्साहपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में श्री रवि शंकर सेठ, प्रबंधक (क्षे.का.) व सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा कार्यकारी निदेशक श्री मनोज कुमार एवं उपस्थित सभी अधिकारियों व कर्मचारियों का स्वागत किया गया और बीईएल गान सुनाया गया। जिसके बाद उपस्थित विशिष्ट अधिकारियों और राभाकास अध्यक्ष द्वारा कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। इसके बाद राजभाषा अधिकारी ने क्रमशः अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक, माननीय रक्षा मंत्री जी और माननीय गृह मंत्री जी का हिंदी दिवस पर जारी संदेश पढ़कर सुनाया ।

कार्यकारी निदेशक श्री मनोज कुमार ने सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को अपना कामकाज हिंदी में करने, राजभाषा संबंधी नीति व नियमों का अनुपालन करने और कंप्यूटर में ई–मेल और एफ़एलएम में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने पर बल दिया।

प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत श्री रवि शंकर सेठ को पुरस्कार प्रदान करते कार्यालय प्रमुख श्री मनोज कुमार (दाएं) और अपर–महाप्रबंधक श्री मुकुल कुमार सिंह (बाएं) ।

30 सितंबर, 2021 को पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के आरंभ में राजभाषा अधिकारी ने प्रस्तुति के माध्यम से विभिन्न प्रतियोगिताओं का ब्यौरा दिया। कॉर्पोरेट कार्यालय की प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत अधिकारियों और कर्मचारियों को पुरस्कार वितरित किए गए। कॉर्पोरेट प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत कुल चार कार्यपालकों को पुरस्कृत किया गया, जिनमें से एक कार्यपालक को प्रेमचंद व तीन कार्यपालकों को जयशंकर प्रसाद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। तीन गैर–कार्यपालकों को जयशंकर प्रसाद पुरस्कार प्रदान किया गया।

कविता पाठ प्रतियोगिता में श्रीमती सुमित्रा देवरानी को प्रथम पुरस्कार प्रदान करते कार्यालय प्रमुख श्री मनोज कुमार (दाएं) और अपर–महाप्रबंधक श्री मुकुल कुमार सिंह (बाएं) ।

अध्यक्ष महोदय ने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को कार्यालय के कार्यकलापों विशेषकर पत्राचार में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने हेतु ज़ोर दिया । उन्होंने संबंधित संवैधानिक प्रावधानों व राजभाषा नीति–नियमों का पालन करते हुए प्रोत्साहन योजनाओं का लाभ लेने हेतु भी प्रेरित किया ।

हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता में श्रीमती बनानी शर्मा को तृतीय पुरस्कार प्रदान करते कार्यालय प्रमुख श्री मनोज कुमार (दाएं) और अपर–महाप्रबंधक श्री मुकुल कुमार सिंह (बाएं) ।

क्षेत्रीय कार्यालय–कोलकाता

कॉर्पोरेट कार्यालय द्वारा जारी परिपत्र के अनुसार क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता में "हिंदी दिवस" और सितंबर माह 2021 को "हिंदी माह" के रूप में मनाया गया। दिनांक 28.08.2021 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की विशेष बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें उक्त परिपत्र के अनुसार हिंदी माह के दौरान आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों पर विस्तार से चर्चा की गई और कार्य योजना बनाई गई।

01 सितंबर 2021 को हिंदी माह उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यालय के मुख्य द्वार पर हिंदी माह समारोह का बैनर प्रदर्शित किया गया और कार्यालय की प्रमुख स्थलों पर महान व्यक्तियों की हिंदी से संबंधित प्रेरणादायी सूक्तियों को प्रदर्शित किया गया।

14 सितंबर 2021 को "हिंदी दिवस" मनाया गया। मुख्य अतिथि के रूप में श्री जाकिर हुसैन सिद्दीकी, क्षेत्रीय महा–प्रबन्धक, रेल–टेल को आमंत्रित किया गया। मुख्य अतिथि ने मंगलदीप प्रज्वलित कर हिंदी दिवस का शुभारंभ किया । इसके पश्चात रक्षा मंत्री एवं गृह मंत्री द्वारा भेजे गए संदेश पढ़े गए। इस अवसर पर कार्यालय प्रमुख ने राजभाषा नीतियों पर जागरूकता बढ़ाने पर बल दिया और हिंदी में की जा रही सरकारी कामकाज पर विस्तार से चर्चा की और अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने के लिए सभी सदस्यों को प्रोत्साहित किया।

हिंदी में निबंध, अंग्रेज़ी से हिंदी एवं हिंदी से अंग्रेज़ी में अनुवाद, हिंदी नारा, हिंदी की–इन और हिंदी में वाद दृ विवाद प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन सभी प्रतियोगिताओं का आयोजन कोविड–19 महामारी के दिशा निर्देशों का पालन करते हुए किया गया ।

28 सितंबर 2021 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि, श्री निर्मल दुबे उप–निदेशक राजभाषा कार्यान्वन, गृह मंत्रालय ने सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रसार एवं विकास की गति को और तेज करने के लिए अधिक गहन और व्यापक कार्यक्रम तैयार कर उसे कार्यान्वित करने पर बल दिया। इसके साथ–साथ, उन्होंने माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा स्मृति विज्ञान से प्रभावित होकर हिंदी के सफल कार्यान्वयन के लिए "12 प्र" के बारे में भी विस्तार से बताया जो इस प्रकार हैं– प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, प्राइज़, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रमोशन, प्रतिबद्धता और प्रयास। इसके पश्चात उन्होने विभिन्न ई– टूल्स एवं सॉफ्टवेर लीला एवं कंठस्थ के बारे में विस्तारपूर्वक बताया ।

28.09.2021 को प्रतियोगिताओं के विजेताओं को कार्यालय अध्यक्ष द्वारा पुरस्कार दिए गए ।

29.09.2021 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक हुई। बैठक में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई।

हिंदी कार्य के लिए प्रोत्साहन योजना तथा अन्य राजभाषा पुरस्कार योजनाओं के विजेताओं की सूची

प्रेमचंद पुरस्कार, कार्यपालक(श्री / श्रीमती / सुश्री)

जितेंद्रिय नायक
सी.ओ., प्रथम पुरस्कार

ऋतु लाम्बा
सी.ओ., प्रथम पुरस्कार

जे. बलरामसिंह
सी.ओ., द्वितीय पुरस्कार

नीरजकुमार चड्ढा
सी.ओ., द्वितीय पुरस्कार

मानस रंजन मिश्रा
क्षे.का. कोल. तृतीय पुरस्कार

गोपाल
सी.ओ., तृतीय पुरस्कार

प्रेमचंद पुरस्कार, गैर–कार्यपालक (श्री / श्रीमती / सुश्री)

कविता के.पी.
सी.ओ., प्रथम पुरस्कार

उषा एल
सी.ओ., प्रथम पुरस्कार

संध्या पंत
क्षे.का., दिल्ली द्वितीय पुरस्कार

शुभा जानकी
सी.ओ., द्वितीय पुरस्कार

प्रियतोष दत्ता
क्षे.का. कोल. तृतीय पुरस्कार

वाणिश्री जी
सी.ओ., तृतीय पुरस्कार

जयशंकर प्रसाद पुरस्कार, कार्यपालक (श्री / श्रीमती / सुश्री)

शिवकुमार के
सी.ओ., प्रथम वर्ग

चंद्रकला वाई एच
सी.ओ., प्रथम वर्ग

पुष्पवल्ली टी
सी.ओ., प्रथम वर्ग

नितिन के पाटिल
क्षे.का. मुंबई प्रथम वर्ग

बेबी शांता
सी.ओ., प्रथम वर्ग

शब्बीर अहमद ए
सी.ओ., प्रथम वर्ग

सामिनादने वी
सी.ओ., प्रथम वर्ग

रंजीत करमचंदानी
सी.ओ., द्वितीय वर्ग

रविशंकर सेठ
क्षे.का., दिल्ली द्वितीय वर्ग

श्रीनिवास एस एस आर
सी.ओ., द्वितीय वर्ग

तमल सेनगुप्ता
क्षे.का. कोल. द्वितीय वर्ग

अनिता रॉड्रिक्स
क्षे.का. मुंबई द्वितीय वर्ग

आयुषी गर्ग
सी.ओ., तृतीय वर्ग

अनीता भद्रा
क्षे.का. मुंबई तृतीय वर्ग

अजय कुमार अग्रवाल
क्षे.का. कोल. तृतीय वर्ग

पिंकू दे
क्षे.का. कोल. तृतीय वर्ग

शशि कुमार पृथ्वी,
क्षे.का. कोल. तृतीय वर्ग

सुब्रत सरकार
क्षे.का. कोल. तृतीय वर्ग

डबल्यू सत्यनारायण वामन
क्षे.का. वैजाग, तृतीय वर्ग

साईवंशी कृष्णाबाबु वेदलम
क्षे.का. वैजाग, चतुर्थ वर्ग

ब्रजेश कुमार राय
क्षे.का. वैजाग, चतुर्थ वर्ग

डी उदयसुभाष अरविंद
क्षे.का. वैजाग, चतुर्थ वर्ग

ई ए हरिहरन
सी.ओ., चतुर्थ वर्ग

अमरजीत सिंह बी.के.
सी.ओ., चतुर्थ वर्ग

प्रदीप कुमार पांडेय
क्षे.का., दिल्ली, चतुर्थ वर्ग

कृष्णा सेवदा
क्षे.का., दिल्ली, चतुर्थ वर्ग

जयशंकर प्रसाद पुरस्कार, गैर–कार्यपालक (श्री / श्रीमती / सुश्री)

आरती सी बुदप्पनवार
सी.ओ., प्रथम वर्ग

सुनीता आर
सी.ओ., प्रथम वर्ग

देविका डी पी
सी.ओ., प्रथम वर्ग

शर्मिला एन
सी.ओ., प्रथम वर्ग

शकुंतला एन सी
सी.ओ., प्रथम वर्ग

शकुंतला वाई
सी.ओ., द्वितीय वर्ग

राजेश्वरी बी
सी.ओ., द्वितीय वर्ग

शारदा सी.एच.
सी.ओ., द्वितीय वर्ग

किरण देठे
क्षे.का. मुंबई, द्वितीय वर्ग

लालम रमणा
सी.ओ., द्वितीय वर्ग

शांतनु भट्टाचार्या
क्षे.का. कोल., तृतीय वर्ग

धीरज परमार
क्षे.का. मुंबई, तृतीय वर्ग

टी.वी. राव
क्षे.का. वैजाग, तृतीय वर्ग

राकेश कुमार
सी.ओ., तृतीय वर्ग

शिवनाथ एम कणसे
क्षे.का. मुंबई, तृतीय वर्ग

प्रसन्न कुमार जाधव
क्षे.का. मुंबई, तृतीय वर्ग

स्वाति एम.एस.
सी.ओ., तृतीय वर्ग

सुमित्रादेवरानी
क्षे.का., दिल्ली, चतुर्थ वर्ग

प्रदीप बिजलवान
क्षे.का., दिल्ली, चतुर्थ वर्ग

संजय मारुति बोंबे
क्षे.का. मुंबई, चतुर्थ वर्ग

तंकला सूरी सत्यनारायण
क्षे.का. वैजाग, चतुर्थ वर्ग

पवन कुमार
क्षे.का., दिल्ली, विशेष प्रोत्साहन

प्रेमकुमार
सी.ओ., विशेष प्रोत्साहन

नागार्जुन पुरस्कार (श्री)

नितेश तिवारी
गा.बाद, प्रथम पुरस्कार

नकुल गोयल
गा.बाद, द्वितीय पुरस्कार

हितांशु माहेश्वरी
गा.बाद, तृतीय पुरस्कार

मो. अनयतुर रहमान
गा.बाद, तृतीय पुरस्कार

अक्षय वारकड़े
गा.बाद, तृतीय पुरस्कार

साहित्यकार परिचय–मन्नू भंडारी (1931–2021)

मन्नू भंडारी हिन्दी की सुप्रसिद्ध कहानीकार थीं। मध्य प्रदेश में मंदसौर जिले के भानपुरा गाँव में जन्मी मन्नू का बचपन का नाम महेंद्र कुमारी था। लेखन के लिए उन्होंने मन्नू नाम का चुनाव किया। उन्होंने एम ए तक शिक्षा पाई और वर्षों तक दिल्ली के मिरांडा हाउस में अध्यापिका रहीं। धर्मयुग में धारावाहिक रूप से प्रकाशित उपन्यास आपका बंटी से लोकप्रियता प्राप्त करने वाली मन्नू भंडारी विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में प्रेमचंद सृजनपीठ की अध्यक्षा भी रहीं। लेखन का संस्कार उन्हें विरासत में मिला। उनके पिता सुख सम्पतराय भी जाने माने लेखक थे।

मन्नू भंडारी हिंदी कहानी के उस ऐतिहासिक दौर से जुड़ी थीं, जिसे 'नई कहानी' कहा जाता है। इसमें मुख्य रूप से मोहन राकेश, राजेंद्र यादव और कमलेश्वर नाम के त्रिमूर्ति की चर्चा होती है। पर ये त्रिमूर्ति नहीं, एक चतुष्टय था और इसकी चौथी सदस्य थीं मन्नू भंडारी। उनकी प्रमुख कहानियाँ है– एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, त्रिशंकु, आंखों देखा झूठ और अकेली।

लेकिन आगे चलकर मन्नू जी सिर्फ कहानीकार नहीं रहीं। उन्होंने उपन्यास भी लिखे, जिसमें दो काफी चर्चित रहे–आपका बंटी और महाभोज। 'आपका बंटी' के बारे में उचित ही ये माना जाता है कि ये उस बच्चे के मनोविज्ञान को समझने के लिए एक अनिवार्य संदर्भ कृति है जिसके माता–पिता अलग हो चुके हैं और फिर दूसरी शादी भी कर चुके हैं और बच्चा इनमें से किसी एक के साथ रह रहा है।

आज के भारत में ये अजूबा नहीं लगता, पर यह सातवें दशक के भारत की कहानी है। मन्नू जी इस मायने में ऐसी लेखिका हैं, जिन्होंने एक नए मनोवैज्ञानिक और सामाजिक यथार्थ को पहचाना था। बहुत कम लोगों को यह मालूम होगा कि ये उपन्यास मोहन राकेश और उनकी पहली पत्नी के जीवन प्रसंग से जुड़ा है। जैसा कि हिंदी में सर्वविदित है राकेश–राजेंद्र यादव और कमलेश्वर तथा मन्नू भंडारी आपस में मित्र भी थे और एक दूसरे के अंतरंग जीवन के बारे में भी काफी कुछ जानते थे।

मन्नू भंडारी को हिन्दी अकादमी, दिल्ली का शिखर सम्मान, बिहार सरकार, भारतीय भाषा परिषद–कोलकाता, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, व्यास सम्मान और उत्तर–प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा पुरस्कृत।

बी ई एल कथन गीत

देश की रक्षा अपना फर्ज़ है, भारत की है शान
बी ई एल ! बी ई एल !
भूमि जल हो या हो आसमान,
वीर जवानों के साथ खड़े हरदम,
अंधेरे में भी हम राह को रोशन करें
बी ई एल ! बी ई एल ! बी ई एल !
दशा दिशा का पता बताएं शान से खड़ी रेडारें,
कंधों पर सजते हैं संचार यंत्र हमारे,
जहाज़ हो या अंतरिक्ष यान उनमें तंत्र हमारे,
शिक्षण हो या प्रसारण साथ हैं यंत्र हमारे,
जन जन का सहयोग करें हम,
मतदान को आसान करें हम,
नावू बी ई एल ! मेमू बी ई एल !
आपण बी ई एल ! नांगल बी ई एल !
आमरा बी ई एल ! हम हैं बी ई एल !
बी ई एल ! बी ई एल ! बी ई एल !

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

QUALITY, TECHNOLOGY, INNOVATION

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड
BHARAT ELECTRONICS LIMITED

मना रहा है

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड
पंजीकृत कार्यालय–आउटर रिंग रोड, नागवारा,
बेंगलुरु– 560045

टोल फ्री नंबर 1800 4250433
सी आई एन नंबर L32309KA1954G01000787
www.bel-india.in